किसोर। रगमगे मोहन दूलहै नवदुलहिन की जोर ॥ १ ॥ फूलन सोहे सेहरो फूलन सजे है सिंगार। यह सुख देखे ही बने कहत न आवे पार ॥२॥ हरखे सखा बराती व्याहन चढे है किसोर। नवपल्लव द्रुम फूले पुष्प अंब के मौर ॥ ३ ॥ आगम ब्याह को जानि सबहिन कियो है सिंगार। लता बेलि फल फूले केसू कुसुम अपार ॥ ४ ॥ जान बरात सबै सजे फागुन भांड को भेख। गारिन के घोड़ा चले गावे गोपीभेख ॥ ५ ॥ उन्मद के हाथी पै जोबन जोर को अंक। इन मस्ती आगे वे घोड़ा हाथी रंक ॥६॥ होहो होरी व्है रही आगे नकीब पुकार। हांसी तारी गारी ये सब प्यादेद्वार ॥ ७ ॥ अबीर गुलाल उड़े मानो छांगी चमर ढुराय। पिचकारिन के छूटे तिरछे तीर लगाय ॥ ८ सखी सखा सजि आये गाल गुलाल लगाय। मदनमोहन हरि दूलहै देखत सबहि लुभाय ॥ ९ ॥ नर नारी सब फूले भूले कुल की लाज। उन्मद महीना होरी खेल मच्यो है आज ॥ १० ॥ यह सुख कों को बरने केलि करे ब्रज मांय। द्वारकेस पद वंदों 'दास' रहे सिर नाँय ॥ ११ ॥ ❀ ७०८ ❀ फागुन सुदी १४ ❀ मंगला दर्शन ❀ चौंकि परी गोरी होरी में स्याम अचानक बांह गहीरी। समर छुड़ाय रिसाय चढ़ी भुव अनख अधर कछु बात कहीरी ॥ १ ॥ चितेचिते हँसिके बसिके कसिकें भुजमें रसरासि लहीरी। 'हित हरिवंश' बाल जाल छबि ख्याल रसाल हि देखि रहीरी ॥ २ ॥ ❀७०९❀ सिंगार समय ❀ राग असावरी ❀ बरसाने ते राधिका हो खेलन निकसी फाग। संग सखी सब बयस की हो जाको परम सुहाग। छबीली रस भरी। जाको है बड़भाग जाको गिरिधर सों अनुराग। छबीली रस भरी ॥ १ ॥ सखीयूथ में यों लसें हो ज्यों उडुगन में चंद। मानो हेम लता किधों हो कनक कदली वृंद ॥ २ ॥ सब बनिता बनिबनि चली हो जहां खेलत बलवीर। नखसिख आभरन साजिके हो पहिरे नौतन चीर ॥ ३ ॥ सारी लहँगा और अंगिया हो भांति भांति बहुरंग। मधिनायक प्यारी

बनी हो नवसत साजे सु अंग ॥ ४ ॥ सारी स्वेत सुहावनी हो कंचनसो तन पाय । मनो दामिनिसी देह पर हो ज्होन रही लपटाय ॥ ५॥ अँगिया स्याम बिराजही हो कुच वामें न समात । मनो चकवा पींजरनते हो निकसन कों अकुलात ॥ ६ ॥ पाँय धरत लाली फिरे हो इत उत नहिं ठहेराय । मनहु करोती काचकी हो तामे जावक रंग बनाय ॥ ७॥ पाँयन नूपुर गूजरी हो पायल हेम जराय । नख नग कंचन बीछिया हो राजे विविध बनाय ॥८॥ चाल चले लटकनी हो मानो हँस गयंद । निरखि लग्यो मन लाल को हो सो परयो प्रेम के फंद ॥ ९ ॥ जंघ कदली करि-सूंड सम हो राजत यह आकार । प्रथु नितंब कटि पातरी हो लचकत लँहगा भार ॥ १० ॥ क्षुद्र-घंटिका बाजही हो चोकी हार हमेल । चूरी कंकन पहोंचिया हो मुंदरी अंगुरिन झेल ॥ ९१ ॥ कुचजुग सोहे बाल के हो तापर मोतिनहार । मानहु कनकपहारते हो चली गंग द्वै धार ॥ १२ ॥ कंबुग्रीव कंठी सुभग हो मोतिसरी और पोत । किधों त्रिवेनी संग व्है किधों दीपमालिका जोत ॥१३॥ चिबुक डिठोना सोहही हो वसीकरन को गेह । रसहि लुब्ध मधुकर मानो हो परयो कमल के नेह ॥ १४ ॥ अधर अरुन विद्रुम सरस हो बिंब बंधुक सुरंग । सुंदरमुख बीरी लिये लखि लाल भयो रंगरंग ॥१५॥ दंतावलि यों लसति है हो कुंदकली ज्यौं अनार । अरुनघनमे किधों दामिनी हो दमकत वारंवार ॥ १६॥ मोती नथमें जो जड़ी हो वामें मनिया लाल । मानो सुक द्वै झूलही हो गोद भूमि को बाल ॥ १७ ॥ अनियारे नैना बड़े हो वामे पुतरी स्याम । अही कारो मुरझाय के हो परयो सुधारसधाम ॥ १८ ॥ भौंह बंक चितवन चपल हो अञ्जन दीने नैन । मानो बिषसर साधिके हो धनुस चढायो मैन ॥ १९ ॥ मृगमद चंदन कुमकुमा हो तिलक कियो जु बनाय । मानहु रवि ससि एकहि व्है के चढ़े राहु पर धाय ॥ २० ॥ श्रुति ताटंक जराय की हो फिरते मोती पोय । रवि पाछे उडुगन लगे हो यह अचरज

रीत ॥ ३८ ॥ व्योम विमानन छाइयो हो सुर कुसुमन बरखात। यह जोरी मो मन बसी हो गौर सामरे गात ॥ ३९ ॥ वल्लभ चरन प्रताप ते हो सरस धमारे गाय। व्रजभूसन जिय में बसे हो 'दास' निरखि बलि जाय ॥४०॥

❀ ७१० ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ जहाँ रहत नहीं कछू कान, ऐसो खेल होरी को। जहाँ कहियत परम बखान, ऐसो खेल होरी को। जहाँ मिलवेकी अकुलान। जहाँ बोलत जान अजान। जहाँ खेलत में न अघान। जहाँ परत नहीं पहिचान। जहाँ रूप भेस उलटान। जहाँ परम निलजता। बान। जहाँ खेलन की रहठान। जहाँ अति आनंद बढान। जहाँ रहत सबै ऋतु मान। जहाँ खेल लराई ठान। जहाँ तन मन धन बिसरान ॥ध्रु०॥ करि सिंगार घरनतें निकसी द्वारे ठाडी आय। खेलन कों नंदलाल सों व्रज-युवती सहज सुभाय ॥ १ ॥ गावत गीत सुहावने ऊंचे स्वर पिय हि सुनाय। सुनत स्रवन लै सखन कों आये व्रजभूसन धाय ॥ २ ॥ मोहन-मन-बस करनकों व्रजयुवतिन रच्यो उपाय। नाचत गावत रसभरी अरु बाजे विविध बजाय ॥ ३ ॥ बदन बिलोक्यो लाल को हँसि घूंघट पट सरकाय। उर आनंद अतिही बढ्यो मन-भावन यह विधि पाय ॥ ४॥ मोहन के सिंगार कों सब लीनो साज मँगाय। चोवा चंदन अरगजा अरु सुगंध गुलाल भराय ॥ ५ ॥ लये सैन दै बात के मिस मोहन निकट बुलाय। परसि कपोलन प्रेमसों पिय लीने अंग लगाय ॥ ६ ॥ वसन नये लै आपुने प्रीतमकों सब पहिराय। आभूसन बहु भाँति के पहिराये देखि बताय ॥७॥ प्रथम कपोलनि छिरकिकै लै चंदन बिंदु बनाय। सुरंग गुलाल अबीर सों करि चित्र रहत मुसिकाय ॥ ८ ॥ पगिया पेचन छिरकिकै बागो इजार छिरकाय। सोभा चित्र विचित्र की नैनन ही परत लखाय ॥ ९ ॥ अधिक गुलाल उडाय के सबहिन की दृष्टि बचाय। मन भायो पियसों करैं प्रति अंगन अंग मिलाय ॥ १० ॥ मंडल मधि पिय राखिकैं मिलि नाचत अति सरसाय। गावत

अति आनंद सों पिय छिन-छिन हृदै अघाय ॥ ११ ॥ खेल रच्यो ब्रज-लाड़िले ब्रजयुवतिन पाय सहाय। दूर भये गुन गावहीं सब गोप सब्द उघटाय ॥ १२ ॥ रस-रसिकन मन अति बढ्यो हो तिहूं लोक रह्यो छाय। श्रीवल्लभ पद कमल की 'जन रसिक' सदा बलि जाय ॥ १३ ॥ ❀७११❀

❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ अहो खेलत वसंत पिय प्यारी। लाल सोंधैं भरी पिचकारी ॥ ध्रु० ॥ पचरंग लिये गुलाल लाड़िली राधा ऊपर डारी। केसर साख जवाद कुमकुमा भींजि रही रंग सारी ॥ १ ॥ गावत खेलत मिलत परस्पर देत दिवावत गारी। छीन लई मुरली पीतांबर रंग रह्यो अति भारी ॥ २ ॥ देत नहीं डहकावत सुंदरी हँसि-हँसि जात सुकुमारी। फगुवा लेहु देहु पीतांबर कहत कुंवर हा हा री ॥ ३ ॥ बरनों कहा कहत नहिं आवे सोभा सिंधु अपारी। 'हित हरिवंस' लेहु बलि मुरली तुम जीते हम हारी ॥ ४ ॥ ❀ ७१२ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ समधाने तैं बामन आयो भर होरी के बीच भरुवा। घेर लियो घर माँझ लुगाइन मूंड लगाई कीच भरुवा ॥ १ ॥ काहू लई खिसकाय परदनी काहू कियो कज-रारो। पिसी पीठी गोंछन लपटाई बामन को कहा चारो ॥ २ ॥ काहू गुदी झगुला पहिरायो काहू गूलरी माला। तारी दै-दै महिगन गावैं हँसि-हँसि ब्रज की बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापुरो निर्मल नीर न्हवायो। नये वसन पहिराय गुदी तैं झगुला आनि छिडायो ॥ ४ ॥ तब बामन निधरक ह्वै बैठ्यो पहरि ऊजरे कपरा। एक ग्वालिन ने आनि उडेल्यो सरी कीच को खपरा ॥५॥ देख विमल गह्यो चतुरंग ने भले-भले करि गावे। अति खिलवार मोधुवा पांडे खेले ही सुख पावे ॥६॥ पैंज बांधि जो सुरपति नाचे तो ऐसी फाग न माचे। पेट फुलाय बदन टेढो करि विफरयो बामन नाचे ॥ ७ ॥ गहने जोइ भाई दे पांडे हम तो फगुवा चाहैं। एकन कान पकरि गुलचायो काहू ऐंठी बांहें ॥ ८ ॥ जानि सासरे

को यह बामन मोहन कछु ब न कहहीं। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु हरि सकुच-सकुच जिय रहहीं ॥ ६ ॥ ❀७१३❀ संध्या समय ❀ राग काफी ❀ भरो रे न भरो रे न भरो रे लँगरवा। हा-हा मोहि जिनि भरो रे लँगरवा ॥ध्रु०॥ सब सखियन मिल केसर घोरयो भरि-भरि लाये करवा। भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारी मेरी अंगिया भींजत बस करो रे लँगरवा ॥ १ ॥ बरजि रही बरज्यो नहिं मानत तोरयो उर को हरवा। उलटो मो पै फगुवा मांगे ह्वै रह्यो होरी को भरुवा ॥ २ ॥ सुनि ये नाहक नाह लरैंगो और कुटुम को डरवा। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु प्यारे लेहुँगी बलैया पाँय परवा ॥३॥ ❀७१४❀ **होरी** (फागुन सुदी १५)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ आज माइ मोहन खेलत होरी। नौतन वेस काछि ठाड़े भये संग राधिका गोरी ॥ १ ॥ अपने भामते आई देखन कों जुरि-जुरि नवल किसोरी। चोवा चंदन और कुमकुमा मुख मांडत लै रोरी ॥ २ ॥ छूटी लाज तब तन न सम्हारत अति विचित्र बनी जोरी। मच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों कोरी ॥३॥ देत असीस सकल ब्रजवनिता अंग-अंग सब भोरी। 'परमानंद' प्रभु प्यारी की छबि पर गिरिधर देत अंकोरी ॥४॥ ❀७१५❀ सेन दर्शन❀ फगुवा नाचे पीछे सान्निध्य में ❀ ❀ राग कल्यान ❀ कोऊ भलो बुरो जिनि मानो अबै रंग होरी है। मनमोहन के मन मोहन कों श्री वृषभानकिसोरी है ॥ १ ॥ होरी में कहा-कहा नहिं कहियत यामें कहा कछु चोरी है। 'कृष्नजीवन लछिराम' के प्रभु सों जो कहिये सो थोरी है ॥ २ ॥ ❀७१६❀

उत्सव डोल को (चैत्र वदी १)

❀ पहिले दर्शन खुलें पाछे भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ डोल माई झूलत हैं ब्रजनाथ। संग सोभित वृषभान नंदिनी ललिता विसाखा साथ ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ रुंज मुरज बहु भाँत। अति अनुराग भरे

मिलि गावत अति आनंद किलकात ॥ २ ॥ चोवा चंदन बूका बंदन उड़त गुलाल अबीर। 'परमानंददास' बलिहारी राजत हैं बलबीर ॥ ३ ॥

❀७१७❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल दोऊ अनुरागे। केसर और गुलाल सों भींजे चोवा लपटे बागे ॥ १ ॥ ललितादिक मिलि झुलवत गावत एक एक तैं आगे। बाजत ताल पखावज आवज मुरली संग सुहागे ॥२॥ देत असीस चलीं व्रजसुंदरी फिर खेलैंगे फागे। 'कृष्नदास' प्रभु की छबि निरखत रोम-रोम रस पागे ॥ ३ ॥ ❀७१८❀ राग देवगंधार ❀ झूलत फूल भई अति भारी। निर्मित वर हिंडोल विटप तर वृन्दाविपिनबिहारी ॥ १ ॥ सखी सकल अति मुदित भईं हैं पहिरे विविध रंग सारी। भृकुटी भंग लावन्य अंग प्रति कोटि मदन छबि टारी ॥ २ ॥ बरनन करिये कहा प्रेम को रुचिदायक तहाँ गारी। 'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत प्रान संपदा वारी ॥ ३ ॥ ❀७१९❀ राग देवगंधार ❀ मोहन झूलत बढ्यो आनंद। एक ओर वृषभान नंदिनी एक ओर व्रजचंद ॥ १ ॥ ललिता विसाखा झुलवत ठाडी कर गहि कंचन डोल। निरखि-निरखि प्रीतम अरु प्यारी विहँसि कहत मृदु बोल ॥ २ ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा बंदन परसत चारु कपोल। छिरकत तरुनी मदनगोपाले आनंद हृदै कलोल ॥ ३ ॥ कहा कहौं रस बढ्यो परस्पर त्रिभुवन बरन्यो न जाय। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर की बानिक अधिक सुहाय ॥४॥ ❀७२०❀ दूसरे दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ डोल माई झूलत हैं नंदलाल। संग राजत वृषभान नंदिनी जोरी परम रसाल ॥ १ ॥ गोवर्धन की सुभग सिखर पर रच्यो जो डोल विसाल। कदली करन केतकी कुंजो बकुल मालती जाल ॥२॥ नूतन चूत-प्रवाल रहे लसि माधुरी सों उरझाय। कमल प्रसून पराग पुञ्ज भरि बहत समीर सुहाय ॥ ॥ ३ ॥ मधुप कीर कल कोकिल कूजत रस मकरंद लुभाय। सुनि-सुनि स्रवन पुलकि पिय-प्यारी रहत कंठ लपटाय ॥ ४ ॥ निर्झर झरत सुगंध

सुवासित रंग-रंग जल लोल। उभय कूल कलहंस मंडली कूजत करत कलोल ॥ ५ ॥ युवतीजन समूह मिलि गावत प्रमुदित लोचन लोल। बाजत ताल मृदंग होत रंग विलसत तारु कपोल ॥६॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनी अवलोकत रसभाय। विट्ठलनाथ आरती उतारत 'दास' निरखि बलि जाय ॥ ७ ॥ ❀७२१❀ भोग आये ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल नंदकिसोर वाम भाग वृषभाननंदिनी पहिरे पीत पटोर ॥ १ ॥ बाजत ताल पखावज आवज झालर मुरली घोर। उड़त गुलाल अबीर अरगजा कुमकुम जल चहुं-ओर ॥ २ ॥ वृन्दावन फूली वन वेली कूजित कोकिल मोर। झूलत स्याम झुलावत गोपी आनंद बढ्यो न थोर ॥३॥ अति अनुराग भरी सब सुंदरी करि अंचल की छोर। कमलनैन मुख सरद चंद्र युवतीजन नैन चकोर ॥ ४ ॥ सुर विमान सब कौतुक भूले बरखे कुसुमन जोर। 'सूरदास' प्रभु आनन्द सागर गिरिवरधर सिरमोर ॥ ५ ॥ ❀ ७२२ ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत सुंदर युगलकिसोर। नंदनंदन वृषभाननंदिनी पीवत सुधा चकोर ॥ १ ॥ भृकुटी भंग धनुस सी सोभित तिलक सु सायक जोर। मंद-मंद मुसिकात स्यामघन करत कटाच्छ इन ओर ॥ २ ॥ अंजन दीपति रंजन लागे रजक दसन तंबोल। मृगमद आड बनी कर कंकन हार सिंगारन डोर ॥ ३ ॥ गयो सरकि सु पटोल मनोहर उघरे कुच कलस कठोर। 'सूर' सु निरखत भये प्रेमबस तब पिय करत निहोर ॥ ४ ॥ ❀ ७२३ ❀ राग देवगंधार ❀ झूलत डोल जुगलकिसोर। पिय प्यारी छबि निरखि परस्पर अरुन दृगन की कोर ॥१॥ जाति कुंद और वृंद माधुरी विविध कुसुम की जोर। केकी कोकिल कूजत प्रमुदित अलि गूंजत चहुंओर ॥ २ ॥ चंद्रभागा चंद्रावली ललिता झुलवत करसों जोर। गावत झुलवत स्याम मीत कों आनंदसिंधु झकोर ॥३॥ ताल पखावज आवज दुंदुभी बीच मुरलि कल घोर। उडत गुलाल अबीर कुसुमजल कुमकुम रंग निचोर ॥ ४ ॥ ग्वालबाल सब करत मगन मन दै

कर तारी सोर । सोभित पवन संग चलत अति पीत वसन के छोर ॥५॥ वर मंदार पहोंप बरखत अति वृंदावन की खोर । कोटि मदनमोहन गिरिवरधर 'रसिकराय' सिर मोर ॥६॥ ❀७२४ ❀ चौथे दर्शन में ❀ राग नट ❀ खेलि फाग फूलि बैठे झूलत डोल डहडहे नागर नैन कमल । बहुत दिनन के भये हैं श्रमित सुख सखिन संग लीने राधा कृष्ण रस रास जवल ॥ १ ॥ गावत राग रागिनी सों मिलि कंठ सरस कोकिला हू ते अमल । 'कल्याण' के प्रभु गिरधर रीझि झोट देत हिये हरखि गोरे गात छूटे छबिसों धवल ॥२ ॥ ❀ ७२५ ❀ राग नट ❀ हँसि मुसिकाय परस्पर, डोल झूलत हैं । सुरंग गुलाल लई मुट्ठी भरि कटितट में राखी छिपाय धरि चाहत बढ्यो दृगंचल ॥ १ ॥ देखो कहत अनेक कुसुम पर कैसे दौरत हैं हो अलिवर मानों चले पंचसर के सर । तब जिय की जानी मुख ऊपर तबै दई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी नर ॥ २ ॥ यह विधि झूलत हैं री गिरिधर परसत पानि कपोल मनोहर रीझि देत कबहू उर सों उर । 'मदनमोहन' पिय परम रसिकवर कहा कहों यह सुख को आगर बलिहारी बानिक पर ॥ ३ ॥ ❀७२६❀ राग मट ❀ डोल झूलत हैं ब्रजयुवतिन के संग । अङ्ग अङ्ग सोभा निरखत प्रतिछिन लज्जित होत अनंग ॥ १ ॥ बाजे बाजत विविध सब्द सों बीना बेनु उपंग । कोऊ कर कठताल बजावत महुवरि सरस मृदंग ॥२॥ कबहू भरि पिचकारिन छिरकत केसू कुसुम सुरंग । नाचत गावत हँसत परस्पर कबहुक लेत उछंग ॥ ३ ॥ मच्यो कुलाहल तन सुध विसरी खसित सीस ते मंग । प्रमदागन 'गिरिधर' मुख ऊपर छबि की उठत तरंग ॥४॥ ❀ ७२७❀ राग हमीर कल्याण ❀ डोल झूलत हैं गिरिधरन नवल नंदलाला ब्रजपुरवनिता निरखि वारत हैं कंचन की मनिमाला ॥१ ॥ सकल सिंगार अनूपम बाजत कूजत बेनु रसाला । 'माधोदास' निरख गोपीजन प्रमुदित श्रीगोपाला ॥२ ॥ ❀ ७२८ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूरा सों ❀ राग नट ❀ तैं री

मोहन कौ मन हरि लीनो । नैक चिते इन चपलनैनन ना जानों कहा कीनो ॥१॥ बैठे री कुंज के द्वार तुव मग जोवत भरि-भरि लेत हियो । 'गोविन्द' प्रभु को प्रेम कहांलों बरनों सखी तो बिन जाय न जीयो ॥२॥ ❀ ७२९ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ मिसहि मिस आवे घर नंद महर के गोकुल की नार । सुंदर बदन बिनु देखे कल न परत भूल्यो धाम काम आछो बदन निहार ॥ १ ॥ दीपक लै चली बाहिर बाट में बड़ो करि डार फिर आय छबि सौं बयार कों देति गार । 'नंददास' नंदलाल सों लगे हैं नैन पलक की ओट मानो बीते युग चार ॥ २ ॥ ❀७३०❀ सेन दर्शन ❀राग अडानो❀ कुंज महल मे ललना रस भरे बैठे हैं संग प्यारी । रुरत रुचिर वनमाल वदन पर मृगमद तिलक सँवारी ॥ १ ॥ घनचय चिकुर कसुम नानाविध ग्रथित मृदुल कर चंपक बकुल गुलाब निवारी । 'गोविद' प्रभु रसबस कीने वृषभाननंदिनी तैं मदनमोहन गिरिधारी ॥ २ ॥ ❀ ७३१ ❀

द्वितीया पाट (चैत्र बदी २)

❀ जागवे में ❀ राग बिभास ❀ भोर भये जसोदाजू बोलैं जागो मेरे गिरिधरलाल । रतन जटित सिंहासन बैठो देखन कों आई ब्रजबाल ॥ १ ॥ नियरैं आय सुपेती खैंचत बहुरयो ढांपत हरि वदन रसाल । दूध दही माखन बहु मेवा भामिनी भरि-भरि लाई थाल ॥ २ ॥ तब हरखित उठि गादी बैठे करत कलेऊ तिलक दै भाल । दै बीरा आरती उतारत 'चत्रभुज' गावें गीत रसाल ॥ ३ ॥ ❀ ७३२ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिभास ❀ मंगल करन हरन मन-आरति वारति मंगल आरती बाला । रजनी रस जागे अनुरागे प्रात अलसात सिथिल बसन अरु मरगजी माला ॥ १ ॥ बैठे कुंज महल सिंहासन श्रीवृषभानकुंवरी नंदलाला । 'ब्रजजन' मुदित ओट व्है निरखत निमिष न लागत लता द्रुम जाला ॥२॥ ❀७३३❀ राग बिलावल❀ रसिक-सिरोमनि रंग भीने हो । लाडिली आई नवल बाल रंग भीने हो

॥ १ ॥ जावक लाग्यो सिथिल पाग, रंग भीने हो। भले मनाई भरि फाग, रंग भीने हो ॥ २ ॥ अलक निकसि रही सोभा देत। काम केलि के झुके॥ ३ ॥ रूप छके लोचन जृंभात। बाहुदंड गड्यो करनफूल ॥४॥ दियो है उसीसा सुख को। मन्मथ डगमगी चाल ॥५॥उरसि मरगजी माल। महकि रही मिलि तन सुवास ॥ ६ ॥ गावत कीरति सुख की रास। ताही सों मिलि सुने खचे ॥ ७ ॥ सहि न सके यह गूढ़ सेन।'रामराय' प्रभु सुनत हँसे ॥ ८ ॥ ❀ ७३४ ❀ राग बिलावल ❀ चार पहर रस रंग किये, रंग भीने हो। भली कीनी भले आये भोर, लाल रंग भीने हो ॥ १ ॥ अरुन नैन अति रसमसे। कछु जृंभात अलसात ॥ २ ॥ कसूंभी पाग अति लपटात। उरसि मरगजी माल ॥ ३ ॥ अधर रंग लागत फीको। मिटि गयो तिलक लिलार ॥ ४ ॥ 'गोविंद' प्रभु छबि देखिके। विवस भई ब्रजबाल ॥ ५ ॥ ❀ ७३५ ❀ राग बिलावल ❀ जागत सब निस गत भई, रङ्ग भीने हो। रति रस केलि विलास, लाल रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ भली कीनी भले आये प्रात, लाल रङ्ग भीने हो। बोलत बोल प्रतीत के। सुंदर साँवल गात रंग ॥२॥ प्रिया अधररस पान मत्त। कहत कहूं की कहूं बात ॥ ३ ॥ अति लोहित दृग रगमगे। मनहु भोरज लजात ॥ ४ ॥ चाल सिथिल भुव सिथिल भाल। ससिमुख सिथिल जंभात ॥ ५ ॥ केस सिथिल वर वेस सिथिल। वयक्रम सिथिल सिरात ॥६॥ 'गोविंद' प्रभु नंदसुत किसोर। बहुनायक विख्यात ॥७॥ ❀ ७३६ ❀ राग बिलावल ❀ राधा के रस बस भये, रंग भीने हो। कोटि काम लजात नये रङ्ग भीने हो ॥ १ ॥ पाग सिथिल जावक लग्यो। भाल तिलक रस में पग्यो ॥ २ ॥ लपटि रही मानो कनकबेलि। नव दुलहिन संग करत केलि ॥३॥ मरकतमनि कंचनमनी। अंग-अंग सोभा घनी ॥४॥ रीझि देत पिय कों तंबोल। पीक छांह सोभित कपोल ॥ ५ ॥ उमगि सिंधु सरिता बढ़ी। श्रमजलकन के रङ्ग चढी॥ ६॥ यह सुख सोभा कही न जाय।

निरखि–निरखि लोचन सिराय ॥ ७ ॥ श्री विट्ठल पदरज प्रताप । 'निजदासन' के हरत ताप ॥ ८॥ ❀७३७❀ सिंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज और काल और प्रति दिन और और देखिये रसिक श्रीगिरिराजधरन । नित प्रति नव छबि बरने सु कोन कवि नित ही सिंगार बागे बरन-बरन ॥ १ ॥ सोभा सिंधु अंग-अंग मोहित कोटि अनंग छबि की उठत तरङ्ग विस्व को मन हरन । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर को रूपरस पान कीजे जीजे रहिये सदा ही सरन ॥ २ ॥ ❀ ७३८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ लाल नेक देखिये भवन हमारो । द्वितीया पाट सिंहासन बैठे अविचल राज तिहारो ॥ १ ॥ सास हमारी खिरक सिधारी पिय बन गयो सवारो । आस पास घर कोऊ नाहीं यह एकांत चौबारो ॥ २ ॥ ओटयो दूध सद्य धोरी को लेहु स्यामघन पीजे । 'परमानंददास' को ठाकुर कछु कह्यो हमारो कीजे ॥ ३ ॥ ❀ ७३९ ❀ राग सारंग ❀ चक्र के धरनहार गरुड़ के असवार नंद के कुमार मेरो संकट निवारो । यमला अर्जुन तारे गज ग्राह तैं उबारे नाग के नाथनहारे मेरो तू सहारो ॥ १ ॥ गिरिवर कर पै धारयो इंद्र हू को गर्व गारयो ब्रज के रच्छनहार बिरद बिचारो । द्रुपदसुता की बेर नेक न कीनी अवेर अब क्यों अवेर 'सूर' सेवक तिहारो ॥ २ ॥ ❀ ७४० ❀ राग सारंग ❀ फूलन की मंडली मनोहर बैठे मदनमोहन पिय राजत । प्रसरित कुसुम सुवासित चहुँदिस लुब्ध मधुप गुंजारत गाजत ॥ १॥ पहिरे विविध भाँति आभूषन पीतांबर बैजयंती छाजत । देखि मुखारविंद की सोभा रति-पति आतुर भयो अति भ्राजत ॥ २ ॥ एक रूप बहु रूप परस्पर बरनों कहा मन लाजत।'रसिक'चरनसरोज आसरो करिवे कोटि यतन जिय साजत ॥३॥ ❀७४१❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ देखो सखी राजत हैं नंदलाल। सीस क्रीट स्रवनन मनि कुंडल उर राजत वनमाल ॥ १ ॥ वागो सरस जरकसी सोहे फैंटा छोर रसाल । सुरत केलि रस मुरली बजावत चंचलनैन

विसाल ॥२॥ आस पास सब सखा मंडली मधिनायक गोपाल । 'सूरदास' प्रभु यह सुख बाढ्यो बड़े गोप के बाल ॥ ३ ॥ ❀७४२❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गोरी ❀ बेनु माई बाजत री बंसीवट । सदा बसंत रहत वृन्दावन पुलिन पवित्र सुभग जमुना-तट ॥ १ ॥ जटित क्रीट मकराकृति कुंडल मुख अरविंद भमर मानो लट । दसन कुंद कली छबि राजत साजत मानो कनक पीत पट ॥ २ ॥ मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत करत विनोद संग बालक भट । दास अनन्य भजन रस कारन 'हित हरिवंस' प्रगट लीला नट ॥ ३ ॥ ❀७४३❀ डोल पीछे मुकुट धरे तब—

❀ मंगला दर्शन ❀ राग विभास ❀ श्री वृन्दावन नव निकुंज ठाड़े उठि भोर । बांह जोरि बदन मोरि हँसत सुरति रति सकुचत पुनि कछू लजात नैन कोर ॥ १ ॥ कबहु करत बेनु-नाद पायो सुधा-स्वाद पंछीजन प्रेम मुदित बोलत चहुं ओर । 'रसिक' प्रीतम छबि निहारि प्रगट्यो रवि जिय बिचारि बार-बार उमगि तहाँ नाचत हैं मोर ॥२॥ ❀७४४❀ सिंगार समय ❀ राग खट ❀ बने आज नंदलाल सखी प्रेम मादक पिये संग ललना लिये यमुना-तीरे । फूली केसर कमल मालती सघन वन मंद सुगंध सीतल समीरे ॥ ॥१॥ नील मनि वरन तन कनक मंडित वसन परम सुंदर चरन परस माला । मधुर मृदु हास परकास दसनावली छबि भरे इतरात दृग विसाला ॥ ॥२॥ किये चंदन खौर वदन अरविंद मकरंद लुब्ध भ्रमर कुटिल अलकें । चलत जब स्यामघन हलत कुंडल ललित मनिन की कांति कल गंडन झलकें ॥ ॥३॥ एक चंपक तनी कृष्न रस में सनी मल्हवे राग पंचम संग लागी सो है । एक हरि मुख निरखि धरि रही ध्यान मन चित्र सम भई हरि हियो मो है ॥ ॥ ४ ॥ एक दामिनि सी भुजहि ग्रीवा मेलि बात कहन मिस मुख मुख सों मिलायो । एक नव कुंज में ऐंचि रही कटिबंद आपनो लाल चित चोर पायो ॥५॥ एक स्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि विहँसि बोली भले कान्ह

कपटी। एक सौंधे भरी छूटे बारन खरी एक बिन कंचुकी रीझि लपटी ॥ ॥ ६ ॥ एक स्यामा कनककंज वदनी प्रेम मकरंद भरी हिये हरखि विकसी। ताके रस लुब्ध रहे लंपट सांवरो भ्रमर प्रानप्यारी भुजन बीच जु लसी ॥७॥ रसिकमनि रंग भरे विहरत वृन्दाविपिन संग सखी-मंडली प्रेम पागी। कहत 'भगवान हित रामराय' प्रभु सोई जाने जाहि लगन लागी ॥ ८ ॥ ❀७४५❀ राग खट ❀ नवल ब्रजराज को लाल ठाडो सखी ललित संकेत बट निकट सोहे। देख री देखि अनिमेख या भेख कों मुकुट की लटक त्रिभुवनजु मोहे ॥१॥ स्वेदकन झलक कछू झुकी सी रहत पलक प्रेम की ललक रस रास कीने। धन्य बड़भाग वृषभाननृप-नंदिनी राधिका-अंस पर बाहु दीने ॥ २ ॥ मनि जटित भूमि पर नव लता रही झूमि कुञ्ज छबि पुंज बरनी न जाई। नंदनंदन चरन परसि हित जानि यह मुनिन के मनन मिलि पांत लाई ॥ ३ ॥ परम अद्भुत रूप सकल सुख भूप यह मदनमोहन बिना कछु न भावे। धन्य हरि-भक्त जिनकी कृपा ते सदा कृष्न गुन 'गदाधर मिश्र' गावे ॥ ४ ॥ ❀७४६❀ सिंगार दर्शन ❀ राग खट ❀ देख री देखि नव कुंज घन सघन तर ठाड़े गिरिवरधरन रंग भीने। मुकुट सिर लाल कटि काछनी बेनु कर राधिका संग भुज अंस दीने ॥ १ ॥ मकर कुंडल स्रवन झलक अंग परि रही मानो चंदन सी तन खोर कीने। निरखि 'गोविंद' छबि सघन नंद-नंद की वारि तन मन दोऊ प्रेम रस भीने ॥ २ ॥ ७४७❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तर यमुना पुलिन में मधुर बाजे बाँसुरी। जब ते धुनि सुनी कान मानो लागे मदन बान प्रान हू की कहा कहौं पीर होत पांसुरी ॥ १ ॥ व्याप्यो जो अनंग ताते अंग सुधि भूलि गई कोउ निंदो कोउ वंदो करो उपहासु री। ऐसे 'ब्रजाधीस' जू सों प्रीत नई रीत बाढ़ी जाके हृदै गड़ि रही प्रेम पुंज

गांसुरी ॥२॥❀७४८❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी द्रुम भँमर गुंज नित बिहार प्रिया प्रीतम देखवोई कीजे। गौर स्याम नव किसोर सुंदर अति चित के चोर रूप सुधा निरखि-निरखि नैनन भरि पीजे ॥ १ ॥ सखी संग करत गान सप्त सुरन लेत तान मंद-मंद मधुर-मधुर धुनि सुनि सुख लीजे। बाढ्यो अति ही हुलास दंपती सब सुखद वास तन मन धन 'रसिक' पर वारने कीजे ॥ २ ॥ ❀७४९❀ अथवा ❀ राग सारंग ❀ मुकुट की छांह मनोहर किये। सघन कुंज तैं निकसि सांवरो संग राधिका लिये ॥१॥ फूलन के हार सिंगार फूलन खौर चंदन किये। 'परमानंददास' को ठाकुर ग्वालबाल संग लिये ॥२॥❀७५०❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे। स्रवन लसत मकराकृति कुंडल रतिपति मन जु हरे ॥१॥ अधर अरुन अरु चिबुक चारु बने दुलरी मोतिन माल पीतांबर धरे। अति सुगंध चंदन की खौर किये पहोंचनि पहुँची मोतिन की लरे ॥ २ ॥ कर मुरली कटि लाल काछनी किंकिनी नूपुर सब्द हरे। गुन निधान 'कृष्न' प्रभु रूप-निधि राधे प्यारी निरखि-निरखि नैनन ते न टरे ॥३॥❀७५१❀ ❀ अथवा ❀ राग गोरी ❀ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे। स्रवन लसत मकराकृति कुंडल काछनी कटि वरन बनमाल गरे ॥१॥ चंचल नैन विसाल सुभग भाल तिलक दिये सुंदर मुखचंद चारु रूप सुधा झरे। 'विचित्र बिहारी' प्यारो बेनु वजावत बंसीवट ते व्रजजन मन जु हरे॥२॥❀७५२❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अड़ानो ❀ ऐरी चटकीलो पट लपटानो कटि बंसीवट यमुना तट ठाड़ो नागर नट। मुकुट लटक अरु भृकुटी विकट तामें कुंडल की मटक सों अटक्यो है चित करन लपेटे आछी कनक लकुट ॥ १ ॥ चटकीली बनमाल कर टेकें द्रुमडार टेढे ठाडे नंदलाल छबि छाई घट-घट। 'नंददास' गोपी-ग्वाल टारे न टरत ताते निपट निकट आये सोंधे की लपट॥२॥ ❀७५३❀ अथवा ❀ राग अडानो ❀ ए हो आज रीझी हौं तिहारी बानिक पर रूप

चटक ते अटकी। कही न जात सोभा पीत पट की कुंडल की चटक मुकुट की लटक पलट की ॥१॥ कहा री कहौं कछू कहत न आवे सोभा नागर नट की। 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कौं सुधि भूली घट पट की ॥२॥

❀ ७५४ ❀ अथवा ❀ राग केदारो ❀ चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ कुंजन की परछाँहि। एक भुजा गहि डार कदम की दूजी भुजा गलबाँहि ॥१॥ छबि सों छबीली लपटि लटकि जात कंचन बेलि तरु तमाल उरझाँहि। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रीझे प्रेम रंगमाँहि ॥२॥❀७५५❀ ❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ री तू अंग अंगरानी अति ही सयानी पिय मनमानी। सोलह कला समानी बोलत मधुरी बानी। तेरो मुख देखि चंद जोति हू लजानी ॥१॥ कटि केहरि कदली जंघ नासिका कीर वारौं फल उरोज पर अधिक सयानी। 'हरिनारायन स्यामदास'के प्रभु सों तेरो नेह रहो जौं लौं गंग जमुन पानी॥२॥❀७५६❀टिपारा धरें तब ❀राग सारङ्ग❀श्रीगोकुल राजकुमार सों मेरो मन लागि रह्यो। घूंघरवारे केस साँवरो अमल कमल दल नैना। जटित टिपारो लाल काछनी अरु पियरो उपरैना॥ कुंडल अलक झलक गंडन पर हँसि बोलत मृदु बैना। कमल फिरावत कर बन माला नूपुर बजत नगैना॥ १ ॥ काल दुपैरी बिरियाँ ए सखी इन कदमन की ओर। मोहन मंडली संग लीने हेली खेलत हे चकडोर॥ हौं जु हुती सखियन में ठाढ़ी निरखि हँसे मुख मोर। सब की दृष्टि बचाय आली मोपै डारी नंदकिसोर ॥२॥ आज भोर गई भवन नंद के मैं जु कछुक मिस कीनो। सोय उठे राजतसिज्जा पै नंदलाल रंग भीनौ॥ लटपटी पाग रस मसे नैना मोहि देखि हँसि दीनो। पुनि अंगराय दिखाय बदन-छबि चितवत चित हरि लीनो ॥३॥ जाकी गति मति रति लागी जासों ता बिन क्यों हू न सरही। जैसे मीन रहै जल बाहिर तलपि-तलपि जिय मरही॥ कोउ निंदौ कोऊ वंदौ त्रासौ एकौ जीय न धर ही। कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु

नेंकु हियेते न टरही ॥४॥ ❀ ७५७ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ टेढ़ी टेढ़ीपागिया मन मोहै छूटे बंद सोंधेसों लपटे । कंचन चोलना यह छबि निरखत काम बापुरो कोहै ॥१॥ लाल इजार गरे बनमाल गुंजमाल दुति कुण्डल सोहे । 'रसिक' रसाल गुपाललाल गढो कीमत कीमत जोहै ॥ २ ॥ ❀ ७५८ ❀

* चैत्र वदी १० छप्पनभोग को उत्सव *

❀ सिंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ श्रीगोकुल घर घर अति आनंद । पौष कृष्ण नौमी तिथि प्रगटे पूरन परमानंद ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल उदय भयो है अद्भुत पूरन चंद । भक्तन काज धरी नर देही सुन्दर आनन्दकन्द ॥२॥ जहाँ तहाँ नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद ।'यादो'श्रीविट्ठलनाथ भैया हो दूर किये दुख द्वन्द ॥३॥ ❀ ७५९ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग विलावल ❀ महा महोत्सव श्री गोकुल गाम । प्रेम मुदित युवती जस गावत स्यामसुन्दर को लै लै नाम ॥ १ ॥ जहाँ तहाँ लीला अवगाहत खिरक खोर दधिमंथन ठाम । करत कुलाहल निस अरु वासर आनंद में बीतत सब याम ॥२॥ नंदगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम ।'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर आनंद निधि सखी स्वरूप सोभा अभिराम ॥ ३ ॥ ❀ ७६० ❀ राजभोग आये ❀ ❀ राग आसावरी ❀ बैठी गोप-कुंवर की पांति । ललित तिबारी पटा रतन के झारी-जल कंचन की कांति ॥१॥ मानिक थाल बिसाल धरे बहु, बेला-बेली नाना भांति । खटरस व्यंजन धरे तिनके मधि देखत जिनके नैंन सिराति ॥२॥ पायस करत रोहिनी फिरि-फिरि अति आनंद मांझ सिहात । लपटत झपटत सकल संग मिल देखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नव निधि दासी तहाँ उठावत जूठन इतरात । देखत यह सुख सुरपुर-वासी भये न ब्रजजन आँख चुचात॥४॥जेसी सुख-संपति ब्रजजन की पल-पल छिनु-छिनु गिनत न जात । 'गोवद्धनेस' गिरिधर प्रसाद कों ब्रह्मा हू की मति ललचात ॥ ५ ॥ ❀ ७६१ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होते । भूतल भूषन विष्णुस्वामी-पथ सिंगार-सास्त्र सब रोते ॥ १ ॥ प्रेम

स्वरूप प्रगट पुरुषोत्तम बिनु पाये कैसे जोते। सेवा-काज लाल गिरिधर की कुसुम-दाम कैसे पोते ॥ २ ॥ करि आसरो रहे जे निजजन ते भवपार क्यों होते। 'सगुनदास' सिद्धांत बिना यह उर-कपाट क्यों खोते ॥३॥ ❀७६२❀

संवत्सर (चैत्र सुदी १)

❀ सिंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ प्रात समै उठि यसोमति जननी गिरिधर सुत कों उबटि न्हवावे। करत सिंगार बसन भूषन ले फूलन रचि-रचि पाग बनावे ॥१॥ छूटे बंद बागो अति सोहत बिच बिच अगरजा चोवा लावे। सूथन लाल फोंदना फबि रह्यो यह छबि निरखि-निरखि सचुपावे ॥२॥ विविध कुसुम की माल कण्ठ धरि श्रीकरमें ले वेनु गहावे। लै दरपन सुत को मुख निरखत 'गोविंद' तहाँ चरन–रज पावे ॥३॥ ❀ ७६३ ❀

❀ सिंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज को सिंगार सुभग साँवरे गोपाल जु को कहत न बनि आवें देखेही बनि आवें। भूषन बसन भाँति-भाँति अंग-अंग छबि कही न जात लटपटी सुदेस पाग चित्तकों चुरावें ॥१॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विसाल कोटिकाम लजावें। कंठसरी वनमाल फेंटा कटि-छोरन छबि निरखत त्रिभुवन-तिया धीर न मन लावें ॥ २ ॥ मेरे संग चलि निहारि ठाड़े हरि कुँजद्वार हितकी चित बात कहूँ जो तेरे जिय भावें। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नख-सिख सुंदर सुजान बड़भागिनि ताहि गिनों सु जात ही लपटावें ॥ ३ ॥ ❀ ७६४ ❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बैठे हरि कुंज नवरङ्ग राधे संग पहरि छूटे बंद अंग बागो लाल। लटपटी पाग सिर सुरंग मजलीन कुलहै रतन सिरपेच कच ढरक रही अर्धभाल ॥ १ ॥ प्यारी-तन कंचुकी सारी छापेदार पहरी सोंधे भरी महेंक रही अंग बाल। लाल गिरिधरन छबि निरखि गति बिबस भई बरबस नई सरस दई रीझ ललिता माल ॥ २ ॥ ❀७६५❀

❀ राग सारंग ❀ चैत्रमास संवत्सर परिवा बरस प्रवेस भयो है आज। कुंजै

महल बैठे पिय-प्यारी लालन पहरे नौतन साज ॥ १ ॥ आपुही कुसुम हार गुहि लीने क्रीड़ा करत लाल मन भावत । बीरी देत 'दास परमानंद' हरखि निरखि जस गावत ॥ २॥ ❀ ७६६ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ आज मनमोहन पिय बैठे सिंहद्वार मोहत सब ब्रजजन-मन । तेसीय मोहन सिर पाग बनी तेसीय कुल्हे सुरंग तेसीय उर माल बन ॥ १ ॥ तेसीय कंठ-मनी तेसोई मोतिनहार तेसीय पीत बरुनी खुली है स्याम तन । 'गोविंद' प्रभु के जु अंग-अंग पर वारों कोटि मदन ॥ २ ॥ ❀ ७६७ ❀ संध्या आरती ❀ ❀ राग गोरी ❀ अंग-अंग स्याम सुभग तन झांई । उमगि चली पीत बरुनि मे ते ताहू में है अति अंगराग सोभा कही न जाई ॥ १ ॥ लाल पाग चौकरी बिराजत कुलह सुरंग ढरकाई । स्निग्ध अलक बीच-बीच राखी चंपकली अरुझाई ॥ २ ॥ देखत रूप ठगोरी लागी नैन रहे अरुझाई । 'गोविंद' प्रभु सब अंग-अंग सुँदर मनिराई ॥ ३॥ ❀७६८❀ शयन दर्शन❀ राग ईमन ❀ कहि न परे लाडिले लाल की बंदसि । कुल्हे चंपक भरी अति सुँदर और लटपटी पाग रही आधे सिर धसि ॥ १ ॥ बरुनी पीत पहरें छूटे बंद अरगजा मोजें सोभा स्याम उरसि । 'गोविंद' प्रभु सुरति सिथिल दंपति प्रेम गलित बैठेऽब कुँज महल तें निकसि ॥२॥ ❀ ७६९❀

गनगौर (चैत्र सुदी ३)

❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ जगावन आवेंगी ब्रजनारी अति रस रंग भरी । अति ही रूप उजागरि नागरि सहज सिंगारे करी ॥ १ ॥ अति ही मधुर स्वर गावति मोहनलाल को चित्त हरें । 'मुरारीदास' प्रभु तुरत उठि बैठे लीनी लाय गरें ॥२॥ ❀७७० ❀ मंगला में ❀ राग बिलावल ❀ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । सोभित भूखन अंग-अंग आलस भरे रैन उनीदे जागे ॥१ ॥ लटपटी सिर पेच पाग छूटे बंदन बागे । 'सूर स्याम' रसिकराय रस-बस कीने सुभाय जागे जहाँ सोई तिया बडभागे ॥ २ ॥

❀ ७७१ ❀ राग खट ❀ ठाडे कुंज-द्वार पिय-प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ। रंगीली तीज गनगौर भोर सजि आई घर-घर तें सब सखियाँ ॥ १ ॥ करत आरती अतिरस माती गावति गीत निरखि मुख अँखियाँ। 'कृष्णदास' प्रभु चतुर नागरी कहा बरनों नाहीं मेरी गतियाँ ॥२॥ ❀७७२❀ ❀ सिंगार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ राधा माधौ कुंज बुलावे। सुनु सुंदरी मुरलिका द्वारा तेरो नाम लै लै गावे ॥१॥ कौन सुकृत फल तेरो प्यारी बदन सुधाकर भावे। कमला को पति पावन लीला लोचन प्रगट दिखावे ॥ २॥ अब चलि मुग्ध विलंब न कीजे चरन कमल रस लीजे। ऐसी प्रीति करे जो भामिनी ताकों सरबसु दीजे ॥ ३ ॥ सरद निसा-ससि पूरन चंदा खेल बनेगो माई। या सुख की परमिति 'परमानन्द' मोपे कही न जाई ॥४॥ ❀ ७७३❀ ❀राग मालकोस ❀ बोलत स्याम मनोहर बैठे कदंब-खंड कदंब की छैयाँ। कुसुमित द्रुम अलि-कुल गुँजत सखी कोकिला-कल कूजत तहियाँ ॥ १ ॥ सुनत दूतिका के बचन माधुरी भयो है हुलास जाके मन महियाँ। 'कुंभनदास' ब्रज-कुंवरि मिलन चली रसिककुँवर गिरिधरन पैयाँ ॥ २ ॥ ❀ ७७४ ❀ ❀राग बिलावल ❀ आज तन राधा सजत सिंगार। नीरज सुत-बाहन को भच्छन अरुन स्याम रंग कोन बिचार ॥ १ ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरही बनावत हार। सारंगसुत-पति बस करिबे कों अच्छत लै पूजत रिपु मार ॥२॥ पारथ पितु आसन सुत सोभित स्याम घटा बगपांति बिचार। 'सूरदास' प्रभु हंससुता-तट विहरत राधा नंदकुमार ॥ ३ ॥ ❀ ७७५ ❀ ❀ राग सारंग ❀ कहत जसोदा सब सखियनसों आवो बैठो मंगल गावो। है गनगौर की तीज रंगीली कान्ह कुँवर कों लाड लडावो ॥ १ ॥ ललिता चन्द्रभगा चंद्रावली बेगि जाय राधा लै आवो। स्यामा चतुरा रसिका भामा तुम पिय को सिंगार बनावो ॥ २ ॥ कमला चंपा कुमुदा सुमना पहोंपमाल लै उर पहिरावो। ध्याया दुर्गा हरखा बहूला लै दरपन कर बेनु गहावो ॥३॥

कृष्णा यमुना वृंदा नैनां चरन परसि करि नैन लगावो। तारा रंगा हंसा विमला जमुनाजल झारी पधरावो। नवला अबला नीला सीला गूँजा पूवा लै भोग धरावो। हीरा रत्ना मैना मोहा लै बीना तुम तान सुनावो ॥४॥ घूमर खेलो मन रस झेलो नेह-मेह बरखा बरखावो। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर को सुख निरखि-निरखि दोऊ दृगन सिरावो ॥ ५ ॥ ❀ ७७६ ❀ ❀राग बिलावल ❀ अरवीलो गरवीलो रंगीलो छबीलो कान्ह करि के सिंगार ठाढौ देखो सखी कुँजद्वार। वाम भाग राधा प्यारी ओढे चुनरी की सारी कंचुकी उतंग गाढी ठाडी बहियाँ गरे डार ॥ १ ॥ चूनरी चटकदार पाग सीस नंदलाल सूथन चूनरी बागौ बन्यो अंग घेरदार ॥ २ ॥ फूल-छरी बेनु धरी बजत है रस भरी सुनत स्रवन धाय आये सब नर नगरा। निरखि मुखारविंद फूले मानो अरविंद करत गुँजार तहां 'कृष्णदास' भमरा ॥ ३॥ ❀ ७७७ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग मालकोस❀ आज कोमल अंगते ब्रज सुँदरि रसिक गोपाल लालें भाई। सकल सिंगार सजि मृग-नयनी अवसर जानि आपु चलि आई ॥१॥ लहँगा लाल झूमक की सारी कसुँभी पीत वरुनी पिय अतिहि रंगाई। 'कुँभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अपुनी जानि हँसि कंठ लगाई ॥२॥ ❀७७८❀राग बिलावल ❀ भोर निकुंज भवन पिय प्यारी करत परस्पर हँसि-हँसि बतियाँ। बाजत बीन पखावज अधोटी गावति चतुर ताल दै सखियाँ ॥ ॥१॥ तुम पहरो बागो आभूषन सीस बांधि अलबेली पगियाँ। तोरा झोरा लूम कलंगी ढरकावो मोरन की पखियाँ ॥२॥ स्याम कंचुकी कसि तन गाढ़ी मैं ओढों सिर सुरंग चुनरियाँ। कर कंकन बाजूबंद पहोंची कंठ पोत दुलरी तिमनियाँ ॥ ३ ॥ अलकावलि भाल टीकी नथ पायल नूपुर अनवट बिछियाँ। यह विधि करि सिंगार दोऊ ठाड़े लै दर्पन मुख निरखि हरखियाँ ॥ ४ ॥ मृगमद तिलक अलक घुंघरारी देखि चकित भई मद भरी अंखियाँ। 'कृष्नदास' प्रभु चतुर बिहारी लई लगाय स्यामा कों छतियाँ ॥

॥५॥ ❀७७६❀ राजभोग आये ❀ राग नूर सारंग ❀ रंगीली तीज गनगौर आज चलो भामिनी कुंज छाक लै जैये। विविध भांति नई सौंज अरपि सब अपने जिय की तृपत बुझैये ॥ १ ॥ लै कर बीन बजाय गाय पिय-प्यारी जेंमत रुचि उपजैये। 'कृष्नदास' वृखभानसुता संग घूमर दै नंदनंद रिझैये ॥२॥ ❀७८०❀ नूर सारंग ❀ नवल निकुंज महेल मंदिर मे जेंवन बैठे कुंवर कन्हाई। भरि-भरि डला सीस धरि अपने व्रजबधू तहाँ छाक लै आई ॥१॥ हरखित बदन निरखि दंपति को सुंदरि मंद-मंद मुसकाई। गूँजा-पूआ धरि भोग प्रभु कों 'कृष्नदास' गनगौर मनाई ॥२॥ ❀७८१❀ नूर सारंग ❀ मुदित व्रजनागरी पहरि नये-नये बसन आई सब कुंज लै असन मोहन काज। खाटे खारे मधुर तिक्त व्यंजन विविध बहोत पकवान फल-फूल डलियन मांझ ॥ १ ॥ धरे आगे लाय-लाय जिय सचुपाय-पाय करत गुन-गान कर मांझ ले ले साज। 'कृष्नदासनिनाथ' जेंवत राधा साथ चैत्र सुद तीज गनगौर मानी आज ॥ २ ॥ ❀७८२❀ नूर सारंग ❀ तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन करत भोजन लाल-लाड़िली पिय साथ। चतुर चंद्रावली बैठि गिरिधरन संग देति नई-नई सौंज ले-ले अपने हाथ ॥ १ ॥ छबि बरनी न जात दोऊ रुचि सों खात करत हसि-हँसि बात उमगि-भरि-भरि बाथ। उपजी अंतर प्रीति मदनमोहन कुंज जीत पीवत पय सद्य प्रभु 'कृष्नदासनिनाथ' ॥ २ ॥ ❀ ७८३ ❀ राग सारंग ❀ नंद घरुनि वृखभान-घरुनि मिलि कहति सबन गनगौर मनाओ। नये बसन आभूषन पहरो मंगल गीत मनोहर गाओ ॥ १ ॥ करि टीकौ नीकौ कुमकुम कौ आँगन मोतिन चौक पुराओ। चित्र-विचित्र वसन पल्लव के तोरन बंदनवार बँधाओ ॥ २ ॥ घूमर खेलो नवरस झेलो राधा गिरिधर लाड़ लड़ावो। विविध भांति पकवान मिठाई गूँजा पूआ बहु भोग धराओ ॥ ३ ॥ जल अचवाय पोंछि मुख वस्तर माला धरि दोऊ पान खवावो। 'कृष्नदास'

पिय प्यारी को आनन निरखि नैन मन मोद बढ़ावो ॥ ४ ॥ ❀ ७८४ ❀ ❀ नूर सारंग ❀ सजि-सजि आईं सकल ब्रजनारी। कसि कंचुकी बेंदी अंजन दृग ओढ़ि विविध रंग सारी ॥१॥ बाजूबंद बेरखी चूरी कर कंकन फोंदना री। पहोंची गूजरी बाँह बिजोटी मूंदरी अँगुरियन न्यारी ॥२॥ करनफूल अवतंस फूल नथ ढलकत मनि मुक्तारी। अलकावली दामिनी-फूलनि बेनी गूंथि सँवारी ॥ ३ ॥ हँसुली पोत तिमनियाँ दुलरी हिये हार सिंगारी। गुँज माल बैजंती माल बिच लटकत बहु झोंरा री ॥४॥ कटि किंकिनी पग नूपुर अनवट बाजत चलत सुढारी। गज-गमनी अवनी मृगनैनी गावत है करतारी ॥ ५ ॥ मुखहि तंबोल अधर पर लाली कहा कहें रूप छटा री.। हँसन-रेख झलकत दसनन बिच मानो चमक चपला री ॥ ६ ॥ बनी रंगीली गनगौर श्री राधा बिलसन कुंजबिहारी। भेटी जाय धाय गिरिधर सों श्री वृषभान-दुलारी ॥ ७ ॥ धन्य सुहाग भाग तेरो भामिनि कहा बरनों रसना री। 'कृष्नदास' प्यारे की प्यारी तोपे सर्वस्व वारी ॥८॥ ❀७८५❀ नूर सारंग ❀ सहेली मेरे आज तो रंगीली गनगौर। नख-सिख अंग आभूखन पहेरों ओढ़ों पीत पटोर ॥ १ ॥ नाचों गावों भाव बताऊं जाय नंद की पौर। बाँधों बंदनवार मनोहर चीतों सुकपीक मोर ॥ २ ॥ विविध भांति नई सोंज अपने कर अरपों नंदकिसोर। करि अचवन जल बीरी दै मुख भेटों दोऊ कर जोर ॥ ३ ॥ सेज कुसुम रचि-पचि पोढाऊँ राखों नैन की कोर। मदन केलि रस-बेलि बढ़ाऊँ मंद हँसनि चितचोर ॥४॥ चांपों चरन निज करन प्रीतम के उलटि-पुलटि दोऊ ओर। बींजना ढोरों श्रमजल पोंछों अपने अंचल छोर ॥ ५ ॥ अधर सुधारस पिऊँ पिआऊँ निरखि वदन मुख मोर। आलिंगन चुंबन परिरंभन दै-दै प्रेम हिलोर ॥ ६ ॥ मनमथ अंग-अंग प्रति उमग्यो राधा नंदकिसोर। 'कृष्नदास' प्रभु रति रस पागे निसि बीती भयो भोर ॥ ७ ॥ ❀ ७८६ ❀

❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ जल अचवाय लाल लाड़िली कों कुंज भवन में पान खवायो । कर लै बीन बजाय गाय सखी ललिता सारंगराग जमायो ॥१॥ धरि उर कुसुममाल दोऊन कों सहचरि रति-रस रंग बढायो। 'कृष्नदास' गनगौर तीज को पिय-प्यारी त्यौहार मनायो ॥ २ ॥ ❀७८७❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ आजु की बानिक कही न जाय बैठेऽब निकसि कुञ्जद्वार। लटपटी पाग सिर सिथिल अलकावलि खसित बरुहा चंद रस भरे ब्रजराजकुमार ॥ १ ॥ श्रमजल बिंदु कपोल बिराजत मनहुं ओसकन नील कमल पर। 'गोबिंद' प्रभु लाडिलौ ललन बलि कहा कहौं अंग-अंग सुंदर वर ॥ २ ॥ ❀ ७८८ ❀ राग सारंग ❀ सघन कुंज भवन आज फूलन की मंडली रचि ता मधि लै संग राधा बैठे गिरिधरनलाल । चूनरी की बांधि पाग अङ्ग बागो चूनरी को उपरेना कंठ हीरा हार मोती माल ॥ १ ॥ स्याम चूरी हरित लहँगा पहरि चूनरि झूमक सारी मानो गनगौर बनी ऐन मेन कीरति–बाल। 'कृष्नदास' पिय प्यारी अपने कर दरपन लै देखत मुख बार-बार हँसि-हँसि भरि अंक जाल ॥ २ ॥

❀ ७८९ ❀ राग सारंग ❀ राधा नवल लाडिली भोरी । आवत गावत सब मन भावत सब एक बैस किसोरी ॥ १ ॥ सोंधे भीनी झूमक सारी ओढि पहरि तन चोली । विविध भांति आभूषन अंग में हीरा-हार अमोली ॥२॥ कहा कहौं अङ्ग-अङ्ग की माधुरी सोभा सिंधु झकोरी । ले गनगौर संग सब आई श्री ब्रजराज की पोरी ॥ ३ ॥ ललिता चन्द्रभगा चन्द्रावलि स्यामा भामा गौरी । बिमला कमला कृष्णा रंगा सुखमा सुमिता बौरी ॥ ४ ॥ जमुना तारा कृष्णा हंसा गहि करसों करजोरी । नैनां मैनां प्रेमा जुहिला नाचत हँसि मुख मोरी ॥ ५ ॥ दुरगा ध्यावा बहुला रसिका ठाढ़ी हरि की ओरी । दुहूं ओर अस्तुति करत तिय झुकि–झुकि सब कर जोरी ॥ ६ ॥ राधा गिरिधर चिरजीयो जुग सदा-सर्वदा जोरी । 'कृष्णदास' यह बानिक

उपर डारत हैं तृन तोरी ॥ ७ ॥ ❀ ७९० ❀ भोग दर्शन में ❀ राग नट ❀ राधा कौन गोर तें पूजी । वृंदावन गोकुल गलियन में सब कोऊ कहत बहूजी ॥ १ ॥ मदनमोहन पिय को मन हर लीनो कहा बात तोहि सूझी 'परमानंददास' को ठाकुर तो सम और न दूजी ॥ २ ॥ ❀ ७९१ ❀ ❀राग सारंग❀ राधा कौन गोर तें पूजी नंदनंदन ब्रजचन्द ललन की तोसी न दुलहिनि दूजी ॥ १ ॥ रमा रती रंभा सावित्री भुकति चरन नित तोरी । उमयापति अज-तनया सुक मुनि धरत ध्यान कर जोरी ॥ २॥ भाग सुहाग अचल तेरो बाढ़ो गाढो पिय सों गोरी । 'कृष्णदास' समता करिवे कों नाहिन त्रिभुवन जोरी ॥ ३ ॥ ❀ ७९२ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग सारंग ❀ बन ठन आई रंगीली गनगौर । सजि सिंगार चञ्चल मृगनैनी पहेरें पीत पटोर ॥ १ ॥ सखी सहेली लै संग राधा गावत नंद की पोर । निरखत हरखत अतिरस बरखत मोहे नंद किसोर ॥२॥ उपजी प्रीति परस्पर अन्तर मानो चंद चकोर । 'कृष्णदास' पिय प्यारी की छबि पर डारत हैं तृन तोर ॥३॥ ❀ ७९३ ❀ संध्या समय ❀ राग कल्याण ❀ दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो । सेली हाथ बछरूबन मिलवत नूपुर को ठमको जो भयो हो ॥ १ ॥ नयो जोबन नयी चूनरी के बंद दुरि मूरि के त्रितयो हो । 'धोंधी' के प्रभु रस बस करिलीनो प्यारी प्यारो रिझयो हो ॥ २ ॥ ❀ ७९४ ❀ राग गोरी ❀ तीज गनगौर त्यौहार को जानि दिन ठाडे कुंजद्वार संध्या समै पिय प्यारी । दौरि नर नारि सब आये दरसन करन भई आंगन मधि भीर भारी ॥१॥ बजत बीना मृदंग तानपूरा चंग गान गावत सखा आठों करदे तारी । 'कृष्णदास' निनाथ रानी जसुमति मात करत आरती करन मधि ले थारी ॥ २ ॥ ❀ ७९५ ❀ सयन भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ देखि गनगौर गहि अंगूरी बल मोहन की करन ब्यारू आय बैठे लै संग तात । पूरी पकवान कढ़ी साग ओदन दार घृत सान दूध भात लाई जसुमति मात ॥१॥ जेंमत

दोऊ भ्रात मुसिकात करि-करि बात छबि न बरनी जात फूले अंग न मात। भरे लाल आलस प्रभु 'कृष्णदासनिनाथ' पीवत पय गाढो लै कनक बेला हाथ ॥२॥ ❀७९६❀ राग कान्हरा ❀ देखि गनगौर पिय प्यारी नवकुंज में आय बैठे ब्यारू करन दोऊ मिलि साथ। बिबिध पकवान व्यंजन बहो भांति के ठाडी भरि थार लै ललिता अपने हाथ ॥१॥ जेंवत आलस भरे देखि चंद्रावलि ढोरत बिजना श्रमित जान बल्लभ नाथ। दूध तातो मिष्ट भरि कनकपात्र पियो सचुपाय प्रभु 'कृष्णदास' के हाथ ॥२॥ ❀७९७❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग केदारो ❀ बन-ठन ब्रजराजकुंवर बैठे सिंघद्वार आय देख गनगौर आंगन लै संग सब ग्वाल बाल। नखसिख सजि-सजि सिंगार आईं सकल घोखनारि परम सुंदर चतुर सुघर गावत सुर गीत रसाल ॥१॥ मंडल जोरि घूमर लेत अरस-परस चहुँ ओर सखी सहचरी ब्रज की बधू उमगि-उमगि दै दै ताल। 'कृष्णदास' प्रभु की बानिक निरखि जुवती विवस भई निकट आय पाँय लागि पहेरावत कंठमाल ॥२॥ ❀७९८❀ ❀ मान ❀ राग बिहाग ❀ तोसी तिया नहीं भवन भटूरी। रूपरासि रसरासि रसिकिनी तोय देखि भये नंदलाल लटूरी ॥१॥ सु तन कर दृढ़ गांठ दई जुरि सुरंग चूनरी पीत पटूरी। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नवल नटूरी ॥२॥ ❀ ७९९ ❀ राग केदारो ❀ धन्य वृंदा विपिन धन्य गोकुल गाम धन्य राधा कोन गौर तैं पूजी। धन्य बडभाग्य सौभाग्य तेरो सुजस रसिक नंदनंदन की तू बहूजी ॥१॥ चक्र चूडामनी रूप गुन आगरी नाहि त्रिभुवन वाम तोसी दूजी। 'कृष्णदासनिनाथ' साथ बिलसन सदा तोही सम नाहि नवनारी सूझी ॥२॥ ❀८००❀ पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ कुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी। सखी मुदित अति चित्र-विचित्रित कुसुमन सेज समारी ॥१॥ हँसत परस्पर बतरस बरखत आनंद उपज्यो भारी। सुरतरंग के रस में माते 'नंददास' बलिहारी ॥२॥ ❀८०१❀ राग केदारो ❀

नंदनंदन श्रीवृषभाननंदिनी संग मदन रस केलि सुख-सेज ठान्यो। अतर चंदन पान फूल माला सुखद सखी स्वर साध कछु राग गान्यो ॥१॥ मलय घनसार करपूर मृगमद लाय धरत ललिता तहां सनेह सान्यो। 'कृष्णदास-निनाथ' नवल राधा साथ तीज गनगौर त्यौहार मान्यो ॥२॥ ❀८०२❀ ❀ चैत्र सुदी ४ ❀ जागवे में ❀ राग विभास ❀ प्रात समें जागी अनुरागी-सोवत हुतीरी स्यामजू की संगिया। चीर सम्हारत उठीरी दच्छिन कर वाम भुजा फरकी भर अंगिया ॥१॥ भाल में सुहाग भारी छबि उपजत न्यारी पहरे कसुंभी सारी सोंधे रगमगिया। 'अग्रस्वामी' लाड लडाई बहुत कीनी बडाई फूली फूली फिरति अति ही सगमगिया ॥२॥ ❀ ८०३ ❀ मंगला दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ प्यारी के महल तें उठि चले भोर। सखीवृंद अवलोक अग्रस्थित ढकत नील कंचुकी पीत पट छोर ॥१॥ राधा चरित विलोकि परस्पर तें जु हास इत-उत मुख मोर। 'गोविंद' प्रभु लै चले दगा दै नागर नवल सभा चित्त चोर ॥२॥ ❀ ८०४ ❀ शृंगार ओसरा में ❀ राग विलावल ❀ तें गोपाल हेत नील कंचुकी रंगाय लई भली करी सुफल भई आज निस सुहावनी। रोम-रोम फूली चाय चपल नैन भृकुटी भाय अभरन चाल अंग मराल डगमगी सुहावनी ॥१॥ सुभग सारी झुमक तन स्याम पाट कुसुम नीवी तान सुख पचरंग छींट ओढ़नी सुहावनी। सोहत अलक बिथरे बदन मोहन लावन्य-सदन 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥२॥ ❀ ८०५ ❀ राग विलावल ❀ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी तैं न कंचुकी सँवारी। आनंदरस-बस देह-सुधि भूलि गई मिलत गोवर्धन-धारी ॥१॥ कहा कहों गुनरासि अङ्ग-अङ्ग चलत मधुर गति भारी। 'कृष्णदास' प्रभु रसिक लाल के तू अति प्रान-पियारी ॥ २ ॥ ❀८०६❀ ❀ राग विलावल ❀ कंचुकी के बंद तरक तरक टूटे देखत मोहन स्यामे। काहे कों दुराव करत है मोसों उमगत उरज न दुरत हो कित यामें ॥१॥

कमल बदन पर अलकावलि छबि मानों मधुप लज्जित विश्रामे। 'कृष्ण-दास' प्रभु गिरिधर नागर यह विधि सुमुखि लजावत कामे ॥२॥❀८०७❀

रामनवमी तथा उत्सव श्री ब्रजभूषणजी को (चैत्र सुदी ९)

❀ पंचामृत समय ❀ राग देवगंधार ❀ नौमी चैत की उजियारी। दसरथ के गृह जनम लियौ है मुदित अयोध्या-नारी ॥१॥राम लच्छमन भरत सत्रुहन भूतल प्रगटे चारी। ललित विसाल कमलदल लोचन मोचन दुःख सुख-कारी ॥२॥ मन्मथ मथन अमित छबि जलरुह नील बसन तन सारी। पीत बसन दामिनी द्युति बिलसत दसन लसत सित भारी ॥३॥ कंठुला कंठ रत्न मनि बघना धनु भृकुटी गति न्यारी। घुटुरुन चलत हरत मन सबको 'तुलसीदास' बलिहारी ॥४॥ ❀ ८०८ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ कौसल्या रघुनाथ कों लिये गोद खिलावे। सुंदर बदन निहारकें हँसि कंठ लगावे ॥१॥ पीत झगुलिया तन लसे पग नूपुर बाजे। चलन सिखावे रामकों कोटिक छबि लाजे॥२॥ सीस सुभग कुलही बनी माथे बिंदु बिराजे। नील कंठ नख केहरी कर कंकन बाजे ॥३॥ बाल लीला रघुनाथ की यह सुने और गावे। 'तुलसीदास कों यह कृपा नित्य दरसन पावे॥४॥❀८०९❀ ❀ राग बिलावल ❀ सुभग सेज सोभित कौसल्या रुचिर राम सिसु गोद लिये। बाललीला गावत हुलरावत पुलकित प्रेम पीयूष पिये ॥१॥ कबहू पौढि पय पान करावत कबहूं राखत लाय हिये। बार-बार बिधु बदन बिलोकत लोचन चारु चकोर पिये॥२॥ सिव विरंचि मुनि सब सिहात हैं चितवत अंबुज ओट दिये। 'तुलसीदास' यह सुख रघुपति को पायो तो काहू न बिये ॥३॥❀८१०❀ ❀ राग बिलावल ❀ गावत राम-जनम की गाथा। दसरथ के गृह प्रगट भये प्रभु पूरन ब्रह्म सनाथा ॥ १ ॥ आज प्रार्थना सुफल भई यह अब काज-देव सब सरि हैं। दुष्ट दलन संतन सुखदायक भुव को भार उतरि हैं ॥ २ ॥ भवन चतुर्दस करत प्रसंसा भूरि भाग्य रघुकुल को आहि। नेति-नेति

निगमादिक गावें सोई सुत कौसल्या जाहिं ॥ ३ ॥ देत असीस सूत मागध-जन पुर-वासी नर नारी। कौसल्यानंदन के ऊपर तन-मन डारत वारी ॥ ॥ ४ ॥ ❀८११❀ राग देवगंधार ❀ राम जनम मानत नंदराय। प्रथम फुलेल उबटनो सोंधो यह बिधि लाल न्हवाय ॥ १ ॥ रंग केसरी बागो कुल ही आभूखन पहेराय ! सबकों ब्रत यह लरिका ताते बेगे लियो जिमाय ॥ २ ॥ जन्म समे पंचामृत विधि सों देव न्हवावत गाय। चरचत पीतांबर उढाय कैं फूलमाल पहेराय ॥ ३ ॥ भोग लगाय आरती वारत बाजन बहोत बजाय। दोउ कर जोरि बलैया लै पुनि 'द्वारकेस' बलि जाय ॥४॥❀८१२❀ ❀ राग बिलावल ❀ सब सुख चाह रही है राम की, देख रूप की रास। ज्यों मसि के अच्छर कागद पर टारे टरत नहीं ॥ १ ॥ अधर कपोल सुभग नासा पर कनक कली सी सही। जहिं-जहिं मन अटक्यो जाको रहि गयो तहिं ही तहीं ॥२॥ बैठे जनक भुवन में रघुबर संग सीता दुलही। 'तुलसी' मन हुलसी पुर नारिन विविध-असीस दई ॥३॥ ❀८१३❀ राग बिलावल ❀ श्री रघुनाथ पालने झूले कौसल्या गुन गावे हो। बलि अवतार देव मुनि बंदित राजिवलोचन भावे हो ॥१॥ राजा दसरथ पलना गढायो नव चंदन को साज। हीरा जटित पाट की डोरी रत्न जराये बाज ॥२॥ एते चरन कमल कर राते नील जलद तन सोहे। मृगमद तिलक अलक घुँघरारी मृदुल हास मन मोहे ॥ ३ ॥ घर घर उत्सव चारु अयोध्या राघव जनम निवास। गावत सुनत लोक त्रैपावन बलि ' परमानन्ददास ' ॥ ४ ॥ ❀ ८१४ ❀ ❀ रांग आसावरी ❀ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो अमर सुभढार। विविध खिलौना किंकिनी लागे मंजुल मुक्ता हार ॥ रघुकुल मंडन रामलला ॥१॥ जननी उबटि न्हवाय के मनि भूखन सज लिये गोद। पोढाये प्रभु पालने सिसु निरखि बदन मन मोद ॥ दसरथनंदन रामलला ॥ २ ॥ सीस मोर की चंद्रिका झलकत रतन मनि जोत। नील कमल मानों जलद से उपमा

कों लघुमति होत ॥ मात-सुकृत फल रामलला ॥ ३ ॥ लघु-लघु लोहित ललित है पद पान अधर एक रंग । के बिरियाँ छबि कहि न सके नख-सिख सुंदर सब अंग ॥ गुनिजन रंजन रामलला ॥ ४ ॥ लोयन नीर सरोज से भ्रुव पर मसि बिंदु बिराज । मानो विधु मुख छबि अमी अंकुर छबि राखी रसराज ॥ पुरंजन रंजन रामलला ॥ ५ ॥ घूंघरवारी अलकावलि से लटक ललित लिलार । मानो उडुगन विधु मिलन कों चले तिमिर विडार ॥ सहज सुहावनो रामलला ॥ ६ ॥ पग नूपुर कटि किंकिनी कर कंकन पहोंची मंजुल । केहरी नख अद्भुत वने मानो मनसिज मनि गज गंजुल ॥ सोभा सागर रामलला ॥ ७ ॥ देख खिलौना किलकहीं पद पान विलोचन लोल । विचित्र विहंग अलि ज्यों सुखसागर करत कलोल ॥ भक्त कल्पतरु रामलला ॥ ८ ॥ मोती जायो सीप में अदिती जायो युग भान । रघुपति जायो कौसल्या गुनसागर रूप निधान ॥ भवन विभूषन रामलला ॥ ९ ॥ राम प्रगट जब ते भये गये सब अमंगल मूल । मित्र मुदित अरि रुदित हो नित बीरन के चित सूल ॥ भव-भय भंजन रामलला ॥ १० ॥ बाल बोलि बिनु अर्थ के सुन देत पदारथ चारि । मानो इन बचन तें भये सुरतरु तल्प त्रिपुरारि ॥ नाम कामधुक रामलला ॥११॥ सखी सुमित्रा वार हीं मनि भूखन बसन विभाग । मधुर-मधुर मिलि झुलावहीं गावें उमगि अनुराग ॥ है जू मंगल रामलला ॥ १२ ॥ अनुज सखा सब संग लिये खेलन जैहैं चोगान । लंका खलभल पर गई सुर-पुर बाजे निसान ॥ रिपु दल गंजन रामलला ॥ १३ ॥ राम अहेडे चढ़ गये गजरथ बाजे समार । दसकंधर उर धुकधुकी अब जिनि आये द्वार ॥ अरि करि केहरि रामलला ॥ १४ ॥ गीत सुमित्रा सखियन के सुर मुनी मन अनुकूल । दे असीस जै-जै कहे सो हरखे बरखे फूल ॥ सुर सुखदायक रामलला ॥ १५ ॥ बाल चरित्र भान चंद्रमा यह सोडस कला निधान । चित्त

चकोर 'तुलसी' कियो पियो अमीरस पान ॥ तुलसी की जीवन रामलला ॥

❀८१५❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ भोजन लावरी तू मैया । हम कब के तोकूं टेरत हैं भूखे चारों भैया ॥ १ ॥ सुनत बचन कौसल्या आई लिये हाथ मलैया । पूरी लै ताती और बूरो दोरि सुमित्रा आई ॥ २ ॥ कैकई दधि ओदन ले आई मीठे बचन सुनैया । हम जानी तुम राज सभा में बैठे हो रघुरैया ॥ ३ ॥ जेंमत राम भरत और लछमन और सत्रुहन भैया । फूंक फूंक सीरो करि-करिके पीवत तातो घैया॥ ४ ॥ जल अचवाय कपूर सुवासित लागत परम सुहैया । 'तुलसीदास'प्रभु सुख नैनन निरखत मैया लेत बलैया ॥ ५ ॥ ❀ ८१६ ❀ जन्म पंचामृत समय ❀ राग सारंग ❀ प्रगट भये हैं राम, माई । हत्या तीन गई दसरथ की सुनत मनोहर नाम ॥ १ ॥ बंदीजन सब कौतुक भूलै राघव जनम निधान । हरखे लोग सबै भुवपुर के युवती जन करत हैं गान ॥१॥ जय जय कार भयो वसुधा पर संतन मन अभिराम । 'परमानंददास' बलहारी चरन कमल विश्राम ॥३॥ ❀८१७❀उत्सव भोग आये❀ ❀राग विलावल❀ नौमी के दिन नौबत बाजे कौसल्या सुत जायो । सात घरी दिन उदित भयो है सब सखियन मंगल गायो ॥ १ ॥ कांप्यो सिंधु कंगूरा ढ़रियो लंका आगम जनायो । सब लंका में सोक परयो है राजदेव गृह आयो ॥२॥ दसरथ मन आनंद भयो है वंस हमारे गृह आयो । विप्र बुलाय सोधना कीनी अभय भंडार लुटायो ॥३॥ कंचन के बहु कलस बनाये मोतिन चौक पुराये । घरी एक निगम सोच हिय भाख्यो रामचन्द्र गृह आये ॥४॥ गृह–गृह ते सब सखी बुलाई आनंद मंगल गाए । दसरथराय दोऊ आंगन में आदर कर बैठाये ॥५॥ दसरथ उठ बजार पधारे सारी सुरंग बस्यायो । जो जाके जैसो मन भायो तेसो ताहि पहरायो ॥६॥ पाट पटंबर खासा झीनो जैसो जाहि मन भायो । 'परमानंददास' कहां लों बरनों तीन लोक यस छायो ॥७॥ ❀८१८❀राग सारंग❀ कौसलपुर में बजत बधाई । सुंदर सुत जायो कौसल्या

प्रगट भये रघुराई ॥१॥ जात कर्म दसरथ नृप कीनो अगनित धेनु दिवाय। गज तुरंग कंचन मनिभूखन पावस ऋतु मानो बरषाय ॥ २ ॥ देत असीस सकल नर नारी चिरजियो सतभाय। 'तुलसीदास' आस पूरन भई रघुकुल प्रगटे आय ॥ ३ ॥ ❀ ८१९ ❀ राग बिलावल❀आज महा मंगल कोसलपुर सुन नृपके सुत चार भये। सदन-सदन सोहिलो सुहायो नभ और नगर निसान हये ॥ १ ॥ अतिसुख बेग बोल सुरगुरु मुनि भूपति भीतर भवन गये। जात-कर्म कर कनक-बसन मनि भूषन सुरभी समूह दये ॥ २ ॥ दधि अच्छत फल फूल दूब नव युवतिन भरि-भरि थार लये। गावत चली भीर भई बीथन बंदन मांग सिंदूर दये ॥ ३ ॥ कनक कलस और ध्वजा पताका बिच-बिच बंदनबार नये। उडत गुलाल अरगजा छिरकत सकल लोक इक रंग रये ॥४॥ सज-सज साज अमर किन्नर मुनि जान समागम गगन ठये। नृत्यत नव अप्सरा मुदित मन पुनि-पुनि बरखत कुसुम चये ॥ ५ ॥ अति आनंद-मगन पुरवासी देत सबन मंदिर रितये। 'तुलसीदास' पुनि भरेहि देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ६ ॥ ❀८२०❀ राग सारंग❀ आज सखी रघुनंदन जाये। सुंदर रूप नयन भरि देखों गावत मंगलचार बधाये ॥१॥ परम कौतूहल नगर अयोध्या घर-घर मोतिन चोक पुराये। द्वार-द्वार मारग गरियारे तोरन कंचन कलस धराये ॥ २ ॥ पूरन सकल सनातन कहियत जे हरि वेद-पुरानन गाये। महा भाग्य राजा दसरथ को जिहिं घर रघुपति जनम ही आये ॥ ३ ॥ ब्रह्म घोष मिलि करत वेद ध्वनि जय-जय दुंदुभी देव बजाये। गुनि गंधर्व चारन यस बोले भुवन चतुर्दस आनंद पाये ॥ ४ ॥ पान फूल फल चोवा चंदन बहु उपहार लोक ले आये। 'परमानन्द' प्रभु मन मोहन कों कौसल्या जननी गोद खिलाये ॥५॥❀८२१❀ राग सारंग ❀ आज अयोध्या प्रगटे राम। दसरथ वंस उदे कुल दीपक सिव विरञ्च मुनि भयो विश्राम ॥१॥ घर-घर तोरन बंदनमाला मोतिन चौक पुरे निज धाम।

'परमानंददास' तिहिं औसर बंदीजन के पूरत काम ॥ २ ॥ ❀ ८२२ ❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ आज अयोध्या माँझ बधाई। दसरथ सदन चैत सुदि नौमी दिन प्रगटे संतन सुखदाई ॥१॥ बडभागिनी कौसल्या रानी जाकी कूख भये रघुराई। अमरलोक यह लोगन गावत उर आनंद न समाई ॥२॥ सत्यलोक संताप हरन भू भार उतारन आयो माई। मर्यादा पुरुषोत्तम लीला प्रमुदित 'गोकुलचंद' गाई ॥ ३ ॥ ❀ ८२३ ❀ राग जेतश्री ❀ फूले फिरत अयोध्यावासी। सुंदर सुत जायो कौसल्या रामचंद्र सुखरासी ॥ १ ॥ द्वारन बंदनवार साथिये मोतिन चौक पुराये। नाचत गावत देत बधाई मानो घर-घर सुत जाये ॥ २ ॥ गली-गली गज-बाजि जहाँ-तहाँ हकला दिये तबेले। दान बहुत याचक जन थोरे कापें जात संकेले ॥ ३ ॥ दसरथ भूप भंडार मुक्त किये बंदी-अभर भरे। सकट सलिता हि सोहे मालन ठौर-ठौर धरे ॥४॥ संत कमल मुख देखन कारन बिरद उद्योत करयो। मुदित देव दुंदुभी बजावत निसिचर तिमिर हरयो ॥५॥ दैत असीस सकल नरनारी चिर जीयो रघुवीर। 'अग्रदास' आनंद अखिल पर मिटी ताप तन पीर ॥ ६ ॥ ❀ ८२४ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ आनंद आज नृपति दसरथ घर। प्रगट भये कौसल्यानंदन श्रवन सुनत सुख सुधा उमगि उर ॥ १ ॥ ज्यों रवि उदै विनासै तम कों जनम प्रकास असुर त्रासे डर। ऋषि मुख वेद मधुर धुनि उचरत दान विधान करत इहिं औसर ॥ २ ॥ जो जाके मन जैसी इच्छा देत सहज सुत हित अपने कर। परम पवित्र अयोध्या वासी रघुकुल वृन्द सहित निर्मल नर ॥३॥ परम उछाह सबही कहुंके सिव बिरंचि सेस हरखत हर। 'सूरदास' प्रभु संत सहायक अद्भुत रूप धरयो सारंगधर ॥ ४ ॥ ❀ ८२५ ❀ चैत्र सुदी १० ❀ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिभास ❀ फूलन की माला हाथ फूली फिरें आली साथ ऊझकि झरोखे झाँके नन्दिनीजनक की। पियाजू की देखि सोभा सियाजू को मन लोभा इकटक ठाढ़ी मानो पूतरी कनक की ॥१॥ को कहे

पिता सों बात कुंवर कोमल गात कठिन प्रतिज्ञा कीन तोरन धनुक की। 'नंददास' प्रभु जानि तोरयो है पिनाक तानि बांस की धुनैया जैसे बालक तनक की ॥२॥ ❀८२४❀ शृंगार ओसारा में ❀ राग बिलावल ❀ सुनु सुत एक कथा कहों प्यारी। कमल नयन मन आनंद उपज्यो रसिक सिरोमनि देत हुंकारी ॥१॥ नगर एक रमनीक अजुध्या बड़े महल जहाँ अगम अटारी। बहुत गली बीच बिराजत भाँत-भाँत सब हाट बजारी ॥२॥ तहाँ नृपति दसरथ रघुवंसी जाकी नारी तीन सुखकारी। कौसल्या कैकई सुमित्रा तिनके जनम भये सुत चारी ॥ ३ ॥ चार पुत्र राजा के प्रगटे तिनमें एक राम व्रत-धारी। जनक धनुष-पन कियो जानकी त्रिभुवन के सब नृपति हंकारी ॥ ४ ॥ राज-पुत्र दोऊ ऋषि ले आये सुनत जनक-पन तहाँ पग धारी। धनुस तोरि मुख मोरि नृपति को जनक-सुता तिन तब वरी नारी ॥ ५ ॥ पग अँगुठा जब पोर नृपति के तब केकई सुख मेलि निवारी। बचन मांगि नृप सों यह लीनो रघुपति के अभिषेक संमारी ॥ ६ ॥ तात बचन सुनु तज्यो राज जिन भ्राता घरनी सहित बनचारी। उनके जात पिता तन त्याग्यो अति व्याकुल करि जीव विसारी ॥ ७ ॥ चित्रकूट गये भरत मिलन बन पग-पांवरी दे करी कृपा री। जुवती हेत कपट मृग मारयो राजीवलोचन गर्व-प्रहारी ॥८॥ रावन हरन कियो सीता को सुन करुनामय नींद निवारी। 'सूरस्याम' तब रटत चांप कों लछमन देहो जननी भ्रम भारी ॥ ९ ॥ ❀ ८२५ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ बात कहूँ एक हित की तोसों। आरि करे जिनि सुन मनमोहन देहु हुँकारी कही-कही मोसों ॥ १ ॥ सूरज वंस भयो नृप दसरथ तिनके पुत्र भये हैं चार। राम भरत लछमन सत्रुहन खेलत गृह आँगन के द्वार ॥ २ ॥ विस्वामित्र-मख रच्छन करिकै अरु तारी गौतम की नारी। मिथिला जाइ सिव धनुस तोरि तब जनकसुता माला उर डारी ॥३॥ करि विवाह घर कों जब आये भरत गये मातुल के धाम। नृप मन सोचि कह्यो

गुरु आगे वेगहि राज देहु श्रीराम ॥४॥ कैकेई बचन पिता की आज्ञा चले दंडक तापस अनुहारी। लछमन सहित संग जानकी डोलत बनन चाप कर धारी ॥५॥ पंचवटी बिचरत तिय के संग रावन हरन कियो तिहिकाल। इतनो सुनत 'सूर' के स्वामी चौंक कह्यो दै धनुस उताल ॥६॥ ❀८२६❀

श्रीमहाप्रभु जी के उत्सव की बधाई (चैत्र सुदी ११)

❀ राग देवगंधार ❀ भयो जगती पर जय-जयकार। अधम उद्धारन करुना-सागर प्रगटे अग्नि अवतार ॥ १ ॥ गृह-गृह तें सुंदरि सब आईं मोतिन भरि-भरि थार। निरखि कमल-मुख प्राननाथ को तन मन धन बलिहार ॥२॥ करत वेद ध्वनि सकल महामुनि सुंदर दृष्टि रसाल। विविध दान प्रेम सों दीने श्री लछमन परम उदार ॥ ३ ॥ करुनासिंधु सकल सुख-दायक सकल सृष्टि आधार। अपने जीव कृतारथ कीने दस विधि भक्ति आधार ॥ ४ ॥ परम आनंद बढत त्रिभुवन में मुदित फिरत नर नार। 'हरिजीवन' प्रभु यज्ञ-पुरुष श्री लछमन सुत अवतार ॥ ५ ॥ ❀ ८२७ ❀

❀ राग देवगंधार ❀ जय श्री लछमनराजकुमार। श्री वृंदावन बदन इंदु तें प्रगटित भाव सिंगार ॥ १ ॥ आनंद रूप स्वरूप आनंदमय आनंदनिधि आनंदसार। आनंद दान देत आनंद को आनंद इलंमागार ॥ २ ॥ 'दास गोपाल' कहाँ लों बरनों मनोरथ पूरे नंददुलार। श्रीवल्लभनंदन उभय आनंद कर भक्तन भाव विचार ॥३॥ ❀८३०❀ राग आसावरी ❀ जुरि चली हैं बधावन नंदमहर घर सुंदर ब्रज की बाला। कंचन थार हार चंचल छबि कहि न परत तिहिं काला ॥ १ ॥ डहडहे मुख कुमकुम रंग रंजित राजत रस के ऐना। कंजन पर खेलत मानों खंजन अंजन युत बने नैना ॥ २ ॥ दमकत कंठ पदिक मनि कुंडल नवल प्रेम रंग बोरी। आतुर गति मानों चंद उदै भयो धावत तृषित चकोरी ॥ ३ ॥ खसि-खसि परत सुमन सीसन तें उपमा कहा बखानों। चरन चलनि पर रीझि चिकुर वर बरखत फूलन मानों ॥४॥

गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई। बदन बिलोकि बलैया ले ले देति असीस सुहाई ॥ ५ ॥ मंगल कलस निकट दीपावलि ठांय-ठांय देखि मन भूल्यो। मानों आगम नंद सुवन के सुवन फूल ब्रज फूल्यो ॥ ६ ॥ ता पाछें गन गोप ओप सों आये अति सै सोहें। परमानंद कंद रस भीने निकर पुरंदर को है ॥ ७ ॥ आनंद घन ज्यों गाजत राजत बाजत दुंदुभी भेरी ॥ राग रागिनी गावत हरखत बरखत सुख की ढेरी ॥८॥ परम धाम जग धाम स्याम अभिराम श्रीगोकुल आये। मिटि गये द्वंद 'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥९॥ ❀ ८३१ ❀

श्री महाप्रभुजी की बधाई में मुकुट धरै तब—

❀ सिंगार अंसरा में ❀ चौकड़ा ❀ धनि धनि माधव मास एकादसी। प्रगटे श्रीवल्लभ सुखरासी ॥ श्री गोकुल गोवर्द्धन वासी। यमुना कुंज निवासी ॥ध्रुव०॥ छंद—कुंजन कुंज निवास यमुना पुलिन बेनु बजाइयो। अकुलाय नव ब्रज सुंदरी नव सुखद रास बनाइयो ॥ सात दिन गिरि धरयो कमल कर गर्व सुरपति हरनजू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ १ ॥ श्री लछमन गृह नव निधि आई। श्रीवल्लभ द्विज रूप कहाई ॥ जायो पूत इलम्मा माई। हरखत फूली अंग न समाई ॥ छंद—फूली अंग न समाय जननी करत आनंद बधावने। गोरस कीच भई अजिर में दूध दधि सिर नावने ॥ पहरि भूषन मुदित सहचरी बसन नाना बरनजू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ २ ॥ श्रीलछमन गृह होत बधाई। श्रवन सुनत ब्रज-बधू उठि धाई ॥ सहज सिंगार किये मन भाये। बोलत जय-जय सब्द सुनाये ॥ छंद—जय जय सब्द सुनाय बोलत गीत झूमक गाव ही। थार कंचन हाथ लीने जुर-जुर झुंडन आव ही ॥ मुदित दे कर तारि नाचत बाजत नूपुर चरन जू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू ॥ ३ ॥ श्री लछमन-गृह नव निधि आई। अद्भुत सोभा बरनी न जाई ॥ कंचन कलस ध्वजा फहराई। दीपदान कर

जुगत बनाई ॥ छंद—बनाई जुगत धरि दीप माला जोत फैली गगन जू। धेनु-धन गृह वसन भूषन देत कंचन नगन जू॥ मुदित ह्वै नरनारि जुर देत असीस चले घरन जू। 'दासजन' के हेत प्रगटे फेरि गिरिवरधरन जू॥ ४ ॥ ❀ ८३२ ❀ चौकड़ा ❀ श्री लछमन- गृह बधाये। श्री वल्लभ भूतल आये॥ भक्ति प्रकास विलासी। सुंदर वदन मधुर मृदुहासी॥ध्रुव०॥ छंद—नैन नीके बैन मीठे रूप रंग सुहावनो। बाल चरित विनोद नीके प्रानपति जिय भावनो॥ श्री वल्लभ रस ही खेले रस ही बोले रस ही रस में हुलस ही। धनि माय सुहाग भागिन गोद लै सुत बिलसही ॥ १ ॥ पूरव दिसा निधि आई। श्रीगोकुल वृंदावन छाई॥ श्री गोवर्द्धनधारी। ब्रज में प्रगटे रास बिहारी॥ छंद—बुलाइ भक्त विलास कीनो विविध भाँति बनाय के। नंद घर की सुभग लीला प्रगट जनन दिखाई के॥ मेटि सब दुख किये सब सुख सरन लीने तानि के। बलि जाय 'चरनदास' दासी भाग्य अपने मानिके॥२॥ श्रीवल्लभ प्रीतम प्यारे। वल्लभ जग में जगत उज्यारे॥ दैवी जीवन के हितकारी। प्रेम भक्ति के जय जय कारी॥ छंद- प्रेम गावें प्रेम भावें प्रेम में अनुदिन रहें। प्रेम स्नेही प्रेम देही प्रेम बानी नित्य कहें॥ प्रेम सेवा करें करावें नंद सुत हृदै रहें। वल्लभी 'निजदासदासी' सुख समूह कहा कहें॥ ३ ॥ श्रीवल्लभ के गुनगाऊँ। श्रीवल्लभ चरन हृदय में लाऊं॥ मूरति हिय में बसाऊं। श्री वल्लभ जू की हौं बलि-बलि जाऊं॥ छंद-बलि जाऊं वल्लभनाथ प्रभु की सरन वल्लभ के रहूँ। नैन वल्लभ चैन वल्लभ बैन वल्लभ के कहूं॥ वल्लभ मुख की माधुरी हौं निरखि जिय आनंद लहौं बलि जाय 'चरन' निजदास ह्वै के सरन वल्लभ के रहौं॥४॥ ❀८३३❀ ❀ सिंगार दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ जय श्रीवल्लभ देव धना। रास विलास करत गोवर्द्धन मूरति ललित बनी॥१॥ पुरुषोत्तम मुख कमल विकासित रसिकन मुकुट मनी। वरन निवेदन दै निजजन कौं कृपा करी जु घना॥२॥

हिये अंतर राखिया। रामकृष्ण मुकुंद माधौ सदा जिह्वा भाखिया ॥ गोपीनाथ अनाथ बंधु वेद मै करुना मया। 'गोपालदास' अनंत लीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ४ ॥ ❀८३६❀ सेनभोग आये ❀राग ❀ श्रीवल्लभ मधुराकृति मेरे। सदा बसौ मन यह जीवन धन सबहिन सौं जु कहत हौं टेरे ॥ १ ॥ मधुर बचन अरु नयन मधुर जुग मधुर भ्रोंह अलकन की पांत। मधुर माल अरु तिलक मधुर अति मधुर नासिका कहीय न जात ॥ २ ॥ अधर मधुर रस रूप मधुर छबि मधुर-मधुर दोऊ ललित कपोल। श्रवन मधुर कुंडल की झलकन मधुर मकर दोऊ करत कलोल ॥ ३ ॥ मधुर कटाच्छ कृपा रस पूरन मधुर मनोहर बचन विलास। मधुर उगार देत दासन कों मधुर बिराजत मुख मृदु हास ॥ ४ ॥ मधुर कंठ आभूषन भूषित मधुर उर-स्थल रूप समाज। अति विसाल जानु अवलंबित मधुर बाहु परिरंभन काज ॥ ५ ॥ मधुर उदर कटि मधुर जानु जुग मधुर चरन गति सब सुख रास। मधुर चरन की रेनु निरंतर जनम-जनम मांगत 'हरिदास' ॥ ६ ॥ ❀८३७❀ राग बिहाग ❀ प्रगट ह्वै मारग रीति बताई। परमानंद स्वरूप कृपानिधि श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ १ ॥ करि सिंगार गिरिधरनलाल कों जब कर बेनु गहाई। लै दर्पन सन्मुख ठाडे ह्वै निरखि-निरखि मुसिकाई ॥२॥ विविध भांति सामग्री हरि कों करि मनुहार लिवाई। जल अचवाय सुगंध सहित मुख बीरी पान खवाई ॥ ३ ॥ करि आरती अनौसर पट दै बैठे निज गृह आई। भोजन करि विश्राम छिनक ले निज मंडली जु बुलाई ॥ ४ ॥ करत कृपा निज दैवी जीवन पर श्रीमुख बचन सुनाई। बेनु गीत पुनि युगलगीत की रस बरखा बरखाई ॥ ५ ॥ सेवा रीति प्रीति व्रजजन की जनहित जग प्रगटाई। 'दास' सरन 'हरि' वागधीस की चरन रेनु निधि पाई ॥ ६ ॥ ❀८३८❀ शयन दर्शन ❀ राग बिहाग ❀ मधुर ब्रज देस बसि मधुर कीनों। मधुर गोकुल गाम मधुर वल्लभ नाम मधुर विट्ठल भजनदान

दीनो ॥ १ ॥ मधुर गिरिधरन आदि सप्त तनु वेनुनाद सप्तरंध्रन मधुर रूप लीनो । मधुर फल फलित अति ललित 'पद्मनाभ' प्रभु अलि गावत सरस रंग भीनो ॥२॥ ❀८३९❀ सेहरा धरे तब❀ शृंगार ओसरा में ❀राग बिलावल ❀ मूल पुरुष नारायन यज्ञ । श्रुति अवतार भये सर्वज्ञ ॥ साखा तैत्तरीय गोत्र भारद्वाज । तैलंग कुल उदित द्विजराज ॥ छंद—द्विजराज तें हरि आय प्रगटे सोम-यज्ञ कियो जबें । कुंड तें हरि कही जु बानी जन्म कुल तुम्हरे अबें ॥ चकित ततच्छन भये सब जन ऐसी अब लों न भई कबें । सुनत हि मन हरख कीनो धन्य-धन्य कह्यो सबें ॥ १ ॥ तिनके पुत्र गंगाधर । तिनके गनपति सुत वल्लभ वर ॥ श्री लछमन भट अनुभव टेव । सुद्ध सत्व ज्यों श्री वसुदेव ॥ छंद—सत्व गुन विद्या पयोनिधि विसद कीरति प्रगटई । गाम कांकरवार में रही जाति सब हरखित भई ॥ परव पर सह कुटुम्ब लेकै चले प्राग कों साथ लै । स्नानदान दिवाय द्विज कों चले कासी पांत लै ॥ २ ॥ कछुक दिन रहिकें चले सब दच्छन । आनंदित तनु सगुन सुलच्छन ॥ चंपारन्य महीं जब आये । एलम्मागारू गर्भ स्रवित जताये ॥ छंद—स्राव जानि चले तहां ते नगर चोडा मे बसे । जगत में आनंद फैल्यो दसो दिसा मानों हँसे ॥ चैन है सुनि चले कासी फेरि वही बन आवहीं । अग्नि चहुँधा मधि बालक देखि सन्मुख धावहीं ॥ ३ ॥ मारग दियो जानि जिय माता । लिये उछंग मोहि दियो है विधाता ॥ तात सुनत दौरि कंठ लगाये । तिहिं छिन मंगल होत बधाये ॥ छंद—मंगल बधायो होत तिहुंपुर देव दुंदुभी बाजहीं । जोतसी कों लग्न पूछत प्रथम समयो साध ही ॥ धन्य संबत पंद्रहा पेंतीस माधव मास है। कृष्ण एकादसी श्रीवल्लभ प्रगट वदन विलास है ॥४॥ श्री वल्लभ कों ले आये कासी । सुंदर रूप नयन सुखरासी ॥ सात बरस उपवीत धराये । तब तें विद्या पढ़न पठाये ॥ छंद—पढें चारों वेद अरु खट सास्त्र महिना चार में ।

तात कों अचरज भयो यह कौन रूप विचार में ॥ नींद आई कह्यो प्रभु संदेह क्यों तुम करत हो। प्रथम बानी भई हैसो प्रगट जानो अब भयो ॥५॥ जाग परि कह्यो पत्नी आगे। ये हैं पूरन ब्रह्म अनुरागे ॥ श्री मुख बचन कहे श्री वल्लभ। मायामत खंडन भये सुलभ ॥ छंद–सुलभ तें दक्षिन पधारे ग्यारह बरस को बपु धरे। देख मामा हरख के आदर कियो आवो घरें ॥ विद्यानगर कृष्णदेव राजा बहुत मतही जहाँ मिले। जीत के कनकाभिषेक सों पढे आवत यहाँ पहले ॥ ६ ॥ रामानुज अरु मध्वाचारज। विष्णुस्वामि निमादित्य हरि भज ॥ संकर में अनुसरत और मत। युक्ति बल तें आज सबल अति ॥ छंद–सबल सुन आप ही पधारे द्वार पें पहुँचे जबे। भृत्य दौरी प्रताप बरन्यो राय आवो इहाँ सबे ॥ राय आय प्रनाम कीनो सभा मेंजु पधारिये। सुनहु बिनती कृपासागर दुष्ट मतहि विडारिये ॥७॥ गजगति चाल चले श्री वल्लभ। इनकी कृपा भये सब सुलभ ॥ रवि के उदय किरन ज्योंबाढी। तैसी सभा पांत उठ ठाडी ॥ छंद–ठाढ़े सब स्तुति करें जब, कियो मायामत खंडन। सब्द जै जै होत सब मुख, भक्ति पथ भुव मंडन ॥ स्तुति करें द्विज हाथ जोरें राय मस्तक नाव ही। परम मंगल होत हैं कनकाभिषेक कराव ही ॥ ८ ॥ पाछे जलसों न्हाय बिराजे बिनती करी राये मन साजे। द्रव्य सबै अंगीकृत करिये। प्रभु बोले यह नाहिंन ग्रहिये ॥ छंद—ग्रहिए नाहिन स्नान जलवत बाँट सबकों दीजिये। बांटि दीनो करी बिनती मोहि सरन जू लीजिये ॥ कृपा करिके सरन लीनो थार भरी मोहोरे धरयो। सप्त लेके कह्यो दैवी द्रव्य अंगीकृत करयो ॥९॥ तहाँ तें पंढरपुर जु सिधारे। श्रीविट्ठलनाथ मिलन कों जु पधारे ॥ भीम-रथी के पार मिले जब। दोऊ तन में आनंद बढ्यो तब ॥ छंद—बढ्यो आनंद करी बिनती आप कों यह श्रम भयो। कही श्रीविट्ठलनाथ जी ने मित्रता पथ प्रगटियो ॥ फेरि श्री गोकुल पधारे निरख यमुना हरखहीं।

संग दमलादिक हते तिन पै कृपा-रस बरखहीं ॥१०॥ एक समै चिंता चित आई । दैवी किहिं बिधि जानी जाई ॥ आसुरी सों सब मिलित सदाई । भिन्न होय सो कौन उपाई ॥ छंद–भिन्न कों जब चित्त धरे तब प्रभु पधारे तिहिं समे । मधुर रूप अनंग मोहित कहत सुध कीने हमें ॥ करो अब तें ब्रह्म को संबंध दैवी-सृष्टि सों । पांच दोष न रहे ताके निवेदन करो वृष्टि सों ॥११॥ वचन सुनी हरखे श्रीवल्लभ । यह आज्ञा ते परम अति सुलभ ॥ कंठ पवित्रा लै पहराये । मिश्री भोग धरी मन भाये ॥ छंद–भयो भायो चित्त कौ तब पुष्टिपंथ कों अनुसरे । सरन जे आवत निरंतर काल भय तें ना डरे ॥ प्रगट सब लीला दिखावत नंदनंदन जे करी । अवनि पर पद पद्म राखी परिक्रमा मिष उर धरी ॥ १२ ॥ फेर पंढरपुर जब आये । श्री विट्ठलनाथ कही मन भाये ॥ करि विवाह बहु रूप दिखावो । मेरो नाम सुवन कों जु धरावो ॥ छंद–धरो चित्त में बात यह कासी विवाह जु होयगो । मैं कह्यो द्विज आय बिनती करे चरन समोयगो ॥ आय वहाँ ते विवाह कीनो अधिक मंगल तब भयो । नाम धरयो श्री महालक्ष्मी देखि जोरी दुख गयो ॥ १३ ॥ परिक्रमा तीजी चित आई । निकसि चले श्रीवल्लभ राई ॥ झारखंड में प्रभु ने जताई । अबके मोहि मिलो मन भाई ॥ छंद–मिलैंगे हरिदास पें जहाँ तीन दमन कहावहीं । इंद्रनाग जू देवदमन सो मेरो नाम जतावहीं ॥ फेरि के जब ब्रज पधारे पाँच सेवक संग हैं । सदु है आन्योर में जहाँ द्वार पे ठाडे रहैं ॥ १४ ॥ सदु कहे स्वामी कछू खैहैं । मेघन कही सेवक को लेहैं ॥ इतने प्रभु गिरि ऊपर बोले । लाइ नरो दूध रहे अनबोले ॥ छंद–बोली नरो यह पाहुने आये तिनहीं कों बैठारिये । प्रभु कहत मोहि बेर लागत भली चित्त बिचारिये ॥ लै गई पय प्याय आई देख श्रीवल्लभ कह्यो । बच्यो होय कछु हमें दीजे बोल पहिलोहि गह्यो ॥१५॥ देखि नरो बोली हौं वारी । नाम दीजिये हो गर्व-प्रहारी ॥ नाम दीनो पूछी

वे कहाँ हैं। कहि पर्वत पर जाओ तहाँ हैं॥ छंद–तहाँ देखे प्रानपति तब हुलसि दोऊ तन फूल हीं। उही समै सुख कहि न आवे पंगु गति मति भूलहीं॥ हँसि कह्यो सह कुटुम्ब आवो निकट रहि सेवा करो। मानि वचन प्रमान कीनो सासरे दिस पग धरयो॥१६॥ कछु दिन रहि संग लै आये। बसे अडेल में निज हरखाये॥ संवत पंद्रहसैं सरसठ आयो। आसौ वदी द्वादसी सुभ गायो॥ छंद–गायो श्री गोपीनाथ जी जब जन्म लीनो आय के। जानि बलको रूप हरखित देत दान बधाय के॥ फेरि कै चरनाट आये कछुक दिन रहे जानि के। धन्य संवत पंद्रहा बहोतरा सुभ मानि के॥ १७॥ पौष कृष्ण नौमी सुभ आई। घर-घर मंगल होत बधाई॥ श्री विट्ठलनाथ जनम भयो सुनिके। कहत फिरत आनंद गुन गनि के॥ छंद–आनंद बाढ्यो चहुँदिसा छबि देखि श्रीवल्लभ हँसे। बेउ कछु मुसिकाय चित में दोऊ हँसनि मेरे मन बसे॥ तिलक मृगमद छिप्यो हरखित कहाँ लौं गुन गाइए। कृपा तें उछलित निज-रस छिपत नाहीं छिपाइए॥१८॥ श्रीगोकुल में वास सुहायो। श्रीरुक्मिनी पद्मावती पति गायो॥ श्रीगिरवर-धरन छबीलो। श्रीनवनीतप्रिय अरवीलो॥ छंद–प्रिय श्रीमथुरेस श्रीविट्ठलेस श्रीद्वारिकेस जू। श्री गोवर्द्धनधर श्री गोकुलचंद्रमा श्रीमधुरेस जू॥ श्री मदनमोहन अष्ट इहि विधि रमन श्रीविट्ठलनाथ के। तात को चित्त जानि सेवा विस्तरी सब साथ के॥ १९॥ पंद्रह सें सत्तानुं कारतिक। विमल द्वादसी मंगल नित ढिग॥ प्रथम पुत्र प्रगटे श्रीगिरिधर। षट् गुन धर्मी धर्म धुरंधर॥ छंद–धुरंधर ऐश्वर्य श्रीगोविंद पंचदस नन्यानवे। उर्ज सामल अष्टमी सुभ गुरु सुदिन प्रगटे जबे॥ ऋतु वियत सिंगार आस्विन असित तेरस भ्राजहीं। श्रीबालकृष्नजी महा पराक्रमी, बसु ख सोले राजहीं॥२०॥ कवि सह सुदि सातें गोकुल पति। यस स्वरूप माला स्थापित रति॥ सोलह सै ग्यारह कार्तिक सित। अर्क बुध रघुनाथ श्री सहित॥

छंद—हेतु निज अभिधान प्रगटे तात आज्ञा मानि के। तिथि कला बुध मधु छठ बिमल ज्ञान बखानि के ॥ श्रीयदुनाथ प्रगटे रह्यो विरहें श्री घनस्याम स्वरूप के। सह कृष्ण तेरस रविजरिच्छ सत कला श्री विट्ठल भूप के ॥२१॥ भामिनी रानी कमला बखानी। पारवती जानकी महारानी ॥ कृष्णावती मिलि सातों कहाये। यह अलौकिक रूप महाये ॥ छंद—महा अलौकिक अग्निकुल सब, अलौकिक अष्टछाप हैं। अलौकिक सब भक्तजन जे सरन लीने आप, हैं ॥ यथा मति कछु बरनि आई जानियो यह दास है। 'श्रीद्वारकेश' निरोध माँगे यही फल की आस है ॥ २२ ॥ ❀ ८४० ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ नंदरानी सुत जायो महरि के मंदिर बेगि चलौरी। चली आउ वह बाट साँमई जाकी ऊँची पौरी ॥१॥ सोने सींक धरौ लै सथिये चंदन सों चरचौरी। बंदनवार द्वार-द्वारन प्रति बीच आम की मौरी ॥ २ ॥ दिये महावर पाँयन चाइन नाइन लै लै दौरी। उठौ सदन ते बसन संभारौ भूषन सबै सजौरी ॥ ३ ॥ आवौ गावौ बैठो सब मिल पूजो संकर गौरी। ब्याह बधाये काज पराये विलंब न कीजै बौरी ॥ ४ ॥ नाचत बिरध तरुन अरु बालक बीच-बीच लरकौरी। चोवा चंदन बंदन दये दिये केसर खौरी ॥ ५ ॥ सकल उछाह भयो या ब्रज में भाजि गयो सब भौरी। जन 'गोविंद' वीर बलभद्र की सबहिन लागी ढौरी ॥ ६ ॥ ❀ ८४१ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ केसर की धोती पहिरें केसरी उपरैना ओढें तिलक मुद्रा धरि बैठें श्रीलछमन भट धाम। जन्म द्यौस जानि-जानि अद्भुत रुचि मानि-मानि नख सिख की सोभा ऊपर वारों कोटि काम ॥ १ ॥ सुंदरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई आस पास युवतीजन करत हैं गुन गान।'पद्मनाभ'प्रभु विलोकि गिरिवरधर वागधीस यह अवसर जे हुते ते महा भाग्यवान ॥२॥ ❀ ८४२ ❀ भोग संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी। ध्रु०। हेरी दै किन गाव ही भलो बन्यो है काज। रानी

जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ पट पीरो प्यौसार को रानी जसुमति पहरें ताय । दामिनी के भोरें गयो मो मन धोखो आय ॥२॥ नेति-नेति जासों कहे ध्यान न आवे रूप । सो या बाबा नंद के परयो देखियत सूप ॥ ३ ॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रनि बूझत धाइ । कहा कुंवर कौ नाम है हम सों कहौ सुनाइ ॥ ४ ॥ नामन की गिनती नहीं सबहिन के सिरताज । पहलो तो सुनि लेहु भैया जाको नाम गरीब निवाज ॥ ५ ॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्तवे क्षीर-प्रवाह बढ़ायो । चाटत चरन गोपाल के मानो इनही को जायो ॥ ६ ॥ सब ग्वालन मिलि मतो मत्यो करि मन में आनंद । आवो पकरि नचाइये व्रजपति बाबा नंद ॥७॥ ऊंचे मनि को चौंतरा तहाँ बैठे सिरदार । देखत भोरो सो लगे वाको चित्त उदार ॥ ८ ॥ लघु भैया पाँयन परे सकुचत हैं व्रजराज । उठि किन दादा नाचही पूत भयो है आज ॥ ९ ॥ नाचत बाबा नंद जू संग लियें सब ग्वाल । मलकत थोंद हाल ही देखि हँसी ब्रजबाल ॥१०॥ एक ओर ब्रज-ग्वारिया एक ओर सब पोंनि । पहरावत मधुमंगले या ब्रजकी महतोंनि ॥११॥ फूलि कह्यो वृखभान जू पूरव पुन्य सगाई । कीरति कन्या होइगी तो दैहों कुँवर कन्हाई ॥१२॥ भैया-भैया कहि टेरियो कहा बड़े कहा छोट । ठकुराई तिहुंलोक की दुरी अहीरनि ओट ॥१३॥ यह पद गायो हेत सों 'गंग ग्वाल' सुख पाय । रोम-रोम रसना करों तो मोपै बरन्यो न जाय ॥ १४ ॥ ❀ ८४३ ❀

❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवँती ❀ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे । ध्रु० । सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज । रानी जसुमति ढोटा जायो आयो ब्रज में राज ॥ १ ॥ उपनंद कहे नंद सों मेरे मनकों भाव । उठि किन बाबा नाचहु आज भलो बन्यो है दाव ॥ २ ॥ नाचन कों बाबा उठे संग लिये बडे ग्वाल । मलकत थोंदा हाल ही निरखि हँसी ब्रजबाल ॥ ३ ॥ उपनंद कहे तब नंद सों गैया सकल मंगाय । नांदीमुख पूजा करें सब विप्रन दई

बुलाय ॥४॥ बहोत भांति वस्तर दिये जैसो जाको लाग । काहू कों पटुका दिये काहू दीनी पाग ॥५॥ काहू कों चादरि दई काहू दीनी खोर । काहू कों दुपटा दिये करि-करि पीरे छोर ॥६॥ काहुकों झगुला दिये काहू दई कवाय । काहू दीनी पांवरी सब बागे दिये बनाय ॥७॥ 'माधौं' ग्वाल सबसों कहे सुबस बसो ब्रजबास । श्रीजसुमतिजू के लाडिले हम कबहू न छांडे पास॥८॥❀८४४❀

❀ राग गौरी ❀ एरी चलि जांय जहां हरिवदनानल भुव आये । चले श्री लछमन-गृह बाजे विविध बजाये ॥ चलि अनेक दुंदुभी मदन भेरी तुरई सह-नाई । घनमृदंग की घोर झालरी झांझ सुहाई ॥टेक॥ मुरली सुर लिये बजे ही संख संग सरसात । घर-घर कंचन कलस-ध्वजा मानो उदित भयो रवि प्रात ॥१॥ एरी चलि मृदु चंपक-तन मृदु भूषन भूषाय । एरी बर बसन हसत लखि अंग अनंग लजाय ॥ चाल—भृकुटी समर सरासन आसन अलि ज्यों बैठे । कुंचित कच मिस नलिन पंख समार ए ठे ॥टेक॥ चोंचन रस रोचन रचे हो खंजन मृग आधीन । कबहुक रस राते माते मानों जावक भींजे मीन ॥२॥ ए चलि सब्द सदन सुठ सोहत कुंडल हीर । फूली कमल कली जानो रूप सुधाकर नीर ॥ चाल—बिम्बाधर युग अधर-दंत दमकत रस भींजे । ओप धरे अरविन्द मध्य जनु विश्वल बीजे ॥ टेक ॥ चिबुक चारु चित चुभि रही हो जग जोतिन ऐन । मानो सरस हकार की हो मुदित मृदु खचिहि मैन । ॥३॥ ए चलि सौरभ-गृह पर गजमुक्ता सोहत । उर मंडित हारन लर पन्नग गुहत ॥ चाल—कटि किंकिनी जु बनी मदन-गृह बंदन माला । पद बिछुवन सुर झनक करत मद मदन बिहाला ॥ टेक ॥ तब सब मिलि एकत्र भये हो श्री लछमनभट-गेह । मात मनोरथ पूर ही हो मानो बरखत मेह ॥४॥ ए निज आँगन बैठे लछमन भट देत बधाई । लेत मगन मन गोपगन जो जाके मन भाई ॥ चाल—देत असीसन सीस नाय नृत्यत हरसाने । गोरस कीच मचाय दूधदधि

माट दुराने ॥टेक॥ निज भक्तन चित चाय भरे हो मायिक तिमिर नसाय। श्रीवल्लभवर पुंडरीक पर'दासदास' बलिजाय ॥५॥❀८४५❀ वैशाख कृष्ण १०❀ ❀ शृङ्गार ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ द्वारे आये गुनीजन ठाढे। प्रगटे पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सबहिन आनंद मंगल बाढे ॥१॥ श्री लछमन भट दान देन कों पट भूषन मनि मानिक काढे। 'सगुनदास' आस सब पूजी मानो बरखत इन्द्र अषाढे ॥ २ ॥ ❀ ८४६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ बाजे-बाजे मंदिलरा सकल ब्रजघोख सुहायो गाजे। हमारे रायघर ऐसो ढोटा जायो जसुमति आज पूरे मन के काजे ॥१॥ सुनि-सुनि चली अली गृह-गृह तें सजि-सजि नवसत साजे। दधिघृत भरि काँवरि कांधे धरि आये गोप समाजे ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माथें सथिये धरि दुहुँ बाजे। भीतर जाय वदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाजे ॥३॥ श्री वृखभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज। अविचल रहो जमुन-जल ज्यों थिर 'ब्रजजन' के सिर ताज ॥४॥ ❀ ८४७ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग ❀ ग्वाल बधाई मांगन आये। गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिर नाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मन के भाये। जहाँ नंद बैठे नांदी मुख जहां गहन कों धाये ॥ २ ॥ बरन-बरन पट पाये ब्रजजन उर आनंद न समाये। 'जन भगवान' जसोदा रानी जिय के जीवन जाये ॥३॥❀८४८❀ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े। बडी बैस ढोटा जायो है अति आनंदवर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषन काहू बसन अनेक। मन में आन करत सुरपति सों गहे आपुनि टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत। गिरिधर 'दास कल्यान' जुवती जन देवे कों कछुअ न राखत ॥३॥ ❀ ८४९ ❀ राग सारङ्ग ❀ नंद वृखभान के हम भाट। उदै भयो ब्रजवल्लव कुल को मेटि हमारी नाट ॥१॥ इन्द्र कुबेर हमारे भाये ब्रज के गूजर जाट। इतनौ देहु जो मोल लेहुं हौं मथुरा की सब हाट ॥२॥

भूखन बसन अनेक लुटाये और गायन के ठाट । बढ़ौ बंस हरिवंस 'व्यास' को बास चीर के घाट ॥३॥ ❀ ८५० ❀ राग मारू ❀ श्री ब्रजराज के हम ढाढी । बारे हीते गोविंद गुन गावत सेत भई मेरी डाढी ॥१॥ हम हरि के हरि हैंजु हमारे सोने लीक जो काढी । 'दास गुपाल' ही मांगत है भक्ति प्रेम सों गाढी ॥२॥ ❀ ८५१ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग ❀ आज अति बाढ्यौ है अनुराग । पूत भयोरी नंद महर के बडी बैस बड़भाग । ॥१॥ दई सुबच्छ लच्छ द्वै गैयाँ नंद बढायो त्याग । गुनी गनक बंदीजन मागध पायौ अपनौ लाग ॥२॥ फूले ग्वाल मानों रनजीते आनंद फूले बाग । हरद दूब दधि माखन छिरके मच्यो भदैया फाग ॥३॥ गोपी गोप ओप सबके मुख गावत मंगल राग । 'परमानंददास' भक्तन को अब भयो परम सुहाग ॥४॥ ❀ ८५२ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ आज बधावो श्री ब्रजराज के रानी जू जायौ है मोहन पूत । ध्रुव० । मास भादौं द्योस आठें रोहिनी बुधवार । जसोदा की कूखि प्रगटे श्रीकृष्ण लियो अवतार ॥ ॥१॥ बहोत नारी सुहाग सुंदर सबै घोख-कुमारी । सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर गारी ॥२॥ पुत्र मानो भये घर-घर निर्तत ठामे-ठाम । नंद-द्वारे भेट लै लै उमग्यो गोकुल गाम ॥३॥ सथिये स्यामा धरत द्वारें सात सींक बनाय । नव किसोरी मुदित व्है व्है गहत जसुमति पाय ॥ ४ ॥ चौक चंदन लीपिकें आरती धरी है संजोय । कहत घोख-कुमार ऐसो आनंद जो नित्य होय ॥५॥ एक मानिनी मंगल गावे लीला गावें ग्वाल । एक माखन दूध दधि लै छिरकत फिरत हैं बाल ॥६॥ एक हेरी दै दै नाचे एक झटके धाइ । एक काहू बदत नाहीं एक खिलावत गाइ ॥७॥ एक नारी वृद्ध बालक एक जोबन जोरि । एक काहू बदत नाहीं एक हँसत मुख मोरि ॥८॥ कृष्णजनम प्रेम-सागर होत घोख विलास । देखि ब्रज की संपदा जन फूले 'माधौदास' ॥९॥ ❀ ८५३ ❀ शयन भोग आये ❀ राग जैजैवंती ❀

माई आज तो मंदिलरा बाजे मंदिर महरके। फूले फिरें गोपी-ग्वाल ठहर-ठहर के। फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अङ्ग-अङ्ग फूले तरुवर मानों आनंद लहर के ॥१॥ फूले बंदी जन द्वारें फूले बांधे बंदनवारें फूले जहां जोई सोई गोकुल सहर के। फूले फिरें जादौंकुल आनंद समूल मूल अंकुरित पुन्य पुंज पाछिले पहर के ॥२॥ उमग्यो जमुना जल प्रफुल्लित कुंज पुंज गरजत कारे भारे जूथ जलधर के। निर्तत मगन फूलि फूलि रति अङ्ग-अङ्ग मन के मनोज फूले हलधर हरके ॥३॥ फूले द्विज संत वेद मिटि गयो कंस-खेद गावत बधाई 'सूर' भीतर महर के। फूली हैं जसोदा रानी सुत जायो सारंगपानी भूपति उदार फूले भार टार्यो धर के ॥४॥ ❀८५४❀

❀ राग जैजैवंती ❀ माई आज तो गोकुल गाम कैसो रह्यो फूलि के। गृह फूले दीसें जैसे संपति समूल कै ॥१॥ फूली फूली घटा आई घरहर घूमि कै। फूली-फूली बरखा होत झर लायो भूमि कैं ॥२॥ फूल्यो-फूल्यो पुत्र देखि लियो उर लूमि कै। फूली है जसोदा माय ढोटा-मुख चूमि कैं ॥३॥ देवता अगिन फूले घृत खांड होमिकै। फूल्यो दीसै दधिकादौं उपरसौं भूमि कैं ॥४॥ मालिन बांधे बंदनमाला घर-घर डोलिकै। पाटंबर पहिराय अधिकें अमोल कैं ॥५॥ फूले हैं भंडार सब द्वारे दिये खोलिकें। नंदराय देत फूलें 'नंददास' बोलिकें ॥६॥ ❀ ८५५ ❀ भोग सरे ❀ राग ❀ दान देत श्रीलछमन प्रमुदित मनि मानिक कंचन पट गाय। श्री व्रजराज-कुंवर जसोदा-सुत करुना करि प्रगटे हरि आय ॥१॥ रही न मन अभिलाख कछू अब याचक नाम हतो कोउ जोय। 'विष्णुदास' उमगे अंतरते दै असीस तुमसे नहिं कोय ॥२॥ ❀ ८५६ ❀

उत्सव श्री महाप्रभुजी को (वैशाख कृष्णा ११)

❀ जागवे में ❀ राग भैरव ❀ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कृपा-निधान अति उदार करुनामय दीन द्वार आयो। कृपा भरि नैन कोर देखिये जु

मेरी ओर जनम-जनम सोधि-सोधि चरन-कमल पायो ॥ १ ॥ कीरति चहुँ दिसि प्रकास दूर करत विरह-ताप संगम गुन गान करत आनंद भरि गाऊँ। बिनती यह मान लीजे अपनो 'हरिदास' कीजे चरन-कमल बास दीजे बलि-बलि-बलि जाऊँ ॥२॥ ❀८५७❀ शृङ्गार ओसरा में❀राग देवगंधार❀ आज जगती पर जय-जयकार। प्रगट भये श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम बदन अग्नि अवतार ॥ १ ॥ धन्य दिन माधव मास एकादसी कृष्ण पच्छ रविवार। श्रीमुख वाक्य कलेवर सुंदर धरयो जगमोहन मार ॥ २ ॥ श्री भागवत आत्म अंग जिनके प्रगट करन विस्तार। दुंदुभी देव बजावत गावत सुर-वधू मंगल चार ॥ ३ ॥ पुष्टि प्रकास करेंगे भू पर जनहित जग अवतार। आनंद उमग्यो लोक तिहूंपुर 'जन गिरिधर' बलिहार ॥ ४ ॥ ❀ ८५८ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग आसावरी ❀ धन्य माधव मास कृष्ण एकादसी भट्ट लछमन धाम प्रगट वल्लभ भये। धन्य चंपारन्य धन्य धरनी सकल धन्य घटिका प्रहर धन्य अति पल भये ॥ १ ॥ धन्य यसपुंज पावन करन सृष्टि कों प्रगट करी कृष्णलीला सहित सो किये। धन्य गावत 'रसिकदास' बारं-बार कीजिये सफल पूरन मनोरथ हिये ॥ २ ॥ ❀ ८५९ ❀ राग देवगंधार ❀ वल्लभ भूतल प्रगट भये। माधव मास कृष्ण एकादसी पूरन विधु उदये॥१॥ पुत्र जन्म सुन श्रीलछमन भट बहु विधि दान दिये। मागध सूत बंदीजन बोलत सब दुख दूर गये ॥ २ ॥ पुष्टि प्रकास करन कों आये द्विज स्वरूप धरये। 'विष्नुदास' के सिर बिराजत प्रभु आनंदमये ॥ ३ ॥ ❀८६०❀ ❀ राग देवगंधार ❀ जब तें वल्लभ भूतल प्रगट भये। वदन सुधानिधि निर-खत प्रभु कौ सब दुख दूर गये ॥ १ ॥ श्री लछमन-वंस उजागर सागर भक्ति-वेद सब फिर जुटये। मायावाद सब खंड-खंडन करि अति आनंद भये ॥ २ ॥ गिरिधर लीला विस्तारन कारन दिन-दिन केलि रये। 'सगुन-दास' सिर हस्त कमल धरि श्रीचरनांबुज गहे ॥३॥ ❀८६१❀ राग सारंग❀

प्रगट भये प्रभु श्रीमद्वल्लभ ब्रजवल्लभ द्विज देह। निजजन सब आनंदित गावत बजत बधाई सबहिन के गेह॥ १॥ भूतल प्रगट्यो भाव श्रुतिन को उपज्यो नंदनंदन-पद-नेह। मिटे ताप निजजन के मन के बरखे प्रेम भक्ति रस मेह॥ २॥ निरखत श्रीमुखचंद सबन के दूर भये सब निगम संदेह। मिटि गये सब कपट कुटिल खल मारग भस्म भये सब आसुर जेह॥ ३॥ करत केलि कुंजन नित गिरिधर सुधि करिवो जो पूरव नेह। कहत 'दास' जोरी चिरजीयो क्यों गुन बरनें नाहिन छेह॥ ४॥ ❀८६२❀

❀ राग सारंग ❀ फल्यो जन-भाग्य पथ-पुष्टि करन दुष्ट पाखंड मत खंड खंडन किये। सकल सुख घोष को तिमिर हर लोक कौ कृष्नरस पोष कौ पुंज पुंजन दिये॥ १॥ सकल मरजाद मंडन प्रभु अवतरे खलन दंडन करन भक्त निर्मल हिये। प्रकट लछमन सदन देखि हरखित बदन मदन छबि कदन भई पदन नख ना छिये॥२॥ उदित भयो इंदु वृन्दाविपिन को हरखि बरखि रस बचन सुन श्रवन निजजन पिये। 'कृष्नदासनिनाथ' हाथ गिरिवर धरयो साथ सब गोप मुख निरखि नैननि जिये॥ ३॥ ❀८६३❀

❀ राग सारंग ❀ तत्व गुन बान भुवि माधवासित तरनि प्रथम भगवद् दिवस प्रगट लछमन सुवन। धन्य चंपारण्य मन त्रैलोकजन अन्य अवतार होय है न ऐसो भुवन॥ १॥ लग्न वसु कुंभ गति केतु कवि इंदु सुख मीन बुध उच्च रवि वैर नासे। मंद वृष कर्क गुरु भौम युत तम सिंघ योग ध्रुवकरन बव यस प्रकासे॥२॥ ऋच्छ धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित विरह वदना-नलाकार हरिको। येहि निस्चै 'द्वारकेस' इनकी सरन और वल्लभाधीस सर को॥३॥ ❀ ८६४ ❀ राग सारंग ❀ सुखद माधव मास कृष्न एकादसी भट्ट लछमन गेह प्रगट बैठे आइ। ब्रज जुवती गूढ मन इंद्रियाधीस आनंद गृह जानि विधु निगमगति घट पाइ॥ १॥ अज्ञ जन ग्रहन सुत भवन तैसो जानि बिमल मति पाइ विधु जात हेरी आइ। दनुज मायिक मत

नम्र कंधर किये लिये ध्वज जानि ध्वज सुक्र है सुखदाई ॥२॥ अवनितल मलिनता दूरि करिवे काज गेह-सुख दैन जामित्र गति सनि जाइ। धर्म पथ भूप गुरु चरन वल्लभ जानि देवगुरु भौम अनुचर भए री आइ ॥३॥ प्रखर मायावाद सत्रु संघात कारन सूररिपु सदन कों छाइ। 'गिरिधरन' कर्म अर्पन विधुतुंद दसम गेह गहि रहत अनुकूल कृति कों पाइ ॥ ४ ॥ ❀ ८६५ ❀ राग सारंग ❀ कांकरवारे तैलंग तिलक द्विज वंदों श्रीमद् लछमननंद। द्वैपथ-राज-सिरोमनि सुंदर भूतल प्रगटे वल्लभ चंद ॥१॥ अबजु गहे विष्णुस्वामी-पथ नवधा भक्ति रतन रस कंद। दरसन ही प्रसन्न होत मन प्रगटे पूरन परमानंद ॥२॥ कीरत विसद कहाँ लों बरनों गावत लीला श्रुति सुर छंद। 'सगुनदास' प्रभु षट्गुन-संपन्न कलिजन उद्धरन आनंद कंद ॥३॥ ❀ ८६६ ❀ राजभोग सरे ❀ पलना ❀ राग ❀ श्री वल्लभलाल पालने झूलें मात एलम्मा झुलावे हो। रतन जटित कंचन पलना पर झूमक मोती सुहावे हो ॥ १ ॥ झालर गज मोतिनि की राजत दच्छिन चीर उढावे हो। तोरन घुंघरू घमक रहे हैं झुंझना झमकि मिलावे हो ॥२॥ चुचकारत चुटकी दै नचावत चुंबन दै हुलरावे हो। किलकि किलकि हँसत मुख प्रमुदित बाललीला जाहि भावे हो ॥३॥ कबहुँक उरज पय पान करावत फिर पलना पोढावे हो। पीठ उठाय मैया सन्मुख व्है आपुन रीझि रिझावे हो ॥४॥ महाभाग्य हैं तात मात दोऊ आपुन यों बिसरावै हो। 'वल्लभदास' आस सब पूजी श्रीवल्लभ दरस दिखावे हो ॥५॥ ❀८६७❀ ❀ ढीढी ❀ राग ❀ ढाढी श्रीलछमन-राजकुमार। तिहारें पुत्र भये पुरुषोत्तम सुफल कियो मेरो काज ॥ १ ॥ तुम्हारे पितर भये जे पहले महा-पुरुष अवतार। तैलंग तिलक द्विज जग्य नारायन कीने जग्य अपार ॥ तिनके पुत्र भये गंगाधर कीने सोम जाग। तिनके गनपति सोम यग्य करि यह बड़ोजु सुहाग ॥ २ ॥ ताके श्रीवल्लभ अग्निहोत्री तुव पिता ही

कृपाल। तिहारे पुत्र आचारज वल्लभ बदन अनल प्रतिपाल ॥ टेक ॥ दैवी जीव उद्धारन कारन मायावाद निवार। श्री भागवत स्वरूप दिखायो सेवा पुष्टि प्रकार ॥ ३ ॥ इनके पुत्र होयंगे दोऊ हलधर नंदकुमार। गोपीनाथ श्री विट्ठल पुरुषोत्तम तिहूँ लोक उजियार ॥टेक॥ श्री विट्ठल के सात होंयगे सुत ते सब आपु समान। सुत के सुत नातीं पंती सब दीपत दीप समान। ॥४॥ नरनारी जे सरन आये हैं ते सब किये सनाथ। नाम सुनाय अभै दैके फिर पकरे दृढ़ करि हाथ ॥ टेक॥ तुव सुत के गुन रूप बखानत सेस न पाये पार। गोकुलपति मुख निरखि निरखि वपु आकृति सीतल सार। ॥५॥ हौं तो ढाढी तिहारे घर को कीरति करों प्रनाम। पोढि रहौ हरि बदन बिलोकों मांगों न भिच्छा आन। तुम हो परम उदार दानेश्वर हौं मागों सो दीजे। ढाढिन मेरी इनकी चेरी मोहि चेरो करि लीजे ॥ टेक ॥ निसिदिन भक्ति करों तुव सुत की इतनी पूजवो आस। जनम-जनम नित देखों बलि-बलि 'माधौदास' ॥६॥ ❀ ८६८ ❀ थापादें तब ❀ राग सारङ्ग ❀ आनंद आज भयो हो भयो जगती पर जय जय कार। श्री लछमन गृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ सुकुमार ॥१॥ धन्य धन्य माधव मास एकादसी कृष्णपक्ष रविवार। गुन निधान 'श्री गिरिधर' प्रगटे लीला द्विज तनु धार। ॥२॥ ❀ ८६९ ❀ शयन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ श्री लछमन कुल चंद उदित जग उद्योतकारी। मात इलम्मा विमलराका उडुगन निजजन समाज पोषत पीयूष वचन हरियस उजियारी ॥१॥ करुनामय निष्कलंक मायावाद तिमिर हरन सकल कला पूरन मन द्विजवपुधारी। बलि बलि बलि 'माधो-दास' चरन कमल किये निवास भयो चकोर लोचन छबि निरखत गिरिधारी ॥२॥ ❀ ८७० ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ प्रभु श्रीलछमन गृह प्रगट भये। हरि लीला रस सिंधु कला निधि बचन किरन सब ताप गये ॥१॥ मायावाद तिमिर जीवन को प्रगटत नास भयो उर अंतर। फूले भक्त

कुमोदिनी चहुँ दिस सोभित भये भक्ति मन सारस ॥ २॥ मुदित भये कमल मुख तिनके वृथा वाद आये गनत बल । 'गिरिधर' अन्य भजन तारागन मंद भये भजि गावत चंचल ॥३॥ ❀ ८७१ ❀ सेनमोग सरें ❀ राग विहाग ❀ जप तप तीरथ नेम धरम ब्रत मेरे श्री वल्लभप्रभु जी कौ नाम । सुमिरौं मन सदा सुखकारी दुरित कटै सुधरे सब काम ॥ १ ॥ हृदै बसैं जसोदा-सुत के पद लीला सहित सकल सुख धाम । 'रसिकन' यह निर्धार कियो है साधन त्यज भज आठौ जाम ॥ २ ॥ ❀ ८७२ ❀

अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी ३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ भोर भये देखौ श्री गिरिधर कौ कमल मुख । मंगल आरती करौ प्रात ही नयन निरखत होत परम सुख ॥ १ ॥ लोचन विसाल छबि संचि हृदय में धरौ कृपा अवलोकिवे कों चारु भृकुटी रुख ॥ 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर आनंदनिधि दूरि करि हो सब रैन को विरह दुःख ॥ २ ॥ ❀ ८७३ ❀ शृंगार ओसारा ❀ राग बिलावल ❀ आजु मोहि आगम अगम जनायो । मृगमद सानि अरगजा केसर आँगन भवन लिपायो ॥१॥ तन सुख पाग पिछौरा झीनो केसर रंग रँगायो । मुक्ता के आभूषन गुहियत पहरावन हुलसायो ॥२॥ पंखा नवल उसीर प्रीतम कों राखौंगी छिरकायो । ग्रीष्म ऋतु सुख देनि नाथ कों यह औसर चलि आयो ॥३॥ आवेंगे महमान आज हरि भाग्य बड़े दिन पायो। 'कुंभनदास' विरहनि ब्रजबाला आगम सुजस जनायो ॥४॥ ❀८७४❀ राग बिलावल ❀ आज गोपाल पाहुने आये आनंद मंगल गाऊंगी । जल गुलाब सौं धोरि अरगजा आँगन-भवन लिपाऊँगी ॥१॥ सीतल सदन सुखद के साधन कुच-भुज बीच बसाऊंगी । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों जो एकांत करि पाऊंगी ॥२॥ ❀ ८७५ ❀ राग देवगंधार ❀ मज्जन करत गोपाल चौकी पर । अति सुगंध फुलेल उबटनो विविध भाँति की सोंज राखी धर ॥१॥ प्रथम

न्हवाय फिर केसर चरचत सोभित अंग-अंग सुंदर वर । व्रज-गोपी सब मिलि गावति हैं अंग उबट करि परसि सीस कर ॥२॥ एक जो अंग वस्त्र लै आई पौंछत हैं मन अति भर । शृंगार करन कों गिरिधर बैठे चौकी साज धरी तर ॥३॥ विविध भाँति सिंगार करत हैं अपनी अपनी रुचि सुघर वर । लै दर्पन श्री मुखहि दिखावत निरखि-निरखि हँसे हर-हर ॥४॥ भाँति-भाँति सामग्री करि-करि लै आई सब घर-घर । 'छीतस्वामी' गिरिधरन अरोगत अति आनँद प्रफुलित कर ॥५॥ ❀ ८७६ ❀ राग बिलावल ❀ भोग-सिंगार मैया सुनि मोकों श्री विट्ठलनाथ के हाथ को भावे । नीके न्हवाय सिंगार करत हैं आछे रुचि सों मोहि पाग बंधावे ॥ १ ॥ तातें सदा हों उहाँ ही रहत हों तू डर माखन दूध छिपावे । 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल निरखि नैना त्रै ताप नसावें ॥२॥ ❀ ८७७ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिभास ❀ धरचो हरि श्वेत पिछोरा ललित । तैसीय पाग रही अति सोभित दच्छिन सुत सिव वलित॥१॥ मुक्ता भूषन रहे अंग जिन कियो सैल कर कलित । तामें लखे 'सखी' जिय देखियत भयो काम तन गलित ॥२॥ ❀८७८❀ ❀ राजभोग सरे ❀ राग सारंग ❀ बैठे लाल कुंजन में जो पाऊं । स्यामा स्याम भाँवती जोरी अपने हाथ जिमाऊं ॥१॥ चंदन चर्चों पोहोप की माला हरखि हरखि पहिराऊं । 'श्रीभट' देत पान की बीरी चरन कमल चित्त लाऊं ॥२॥ ❀ ८७९ ❀ चंदन धरे तब❀ झाँझ पखावज सूं ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया अक्षय लीला नवरँग गिरिधर पहिरत चंदन । वाम भाग वृषभान नंदिनी बिच-बिच चित्र किये नव वंदन ॥ १ ॥ तनसुख छींट इजार बनी है पीत उपरना विरह निकंदन । उर उदार बनमाल मल्लिका सुभग पाग जुवतिन मन फंदन ॥२॥ नख-सिख रत्न अलंकृत भूषन श्री वल्लभ मारग मन रंजन । 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर लोचन चपल लजावत खंजन ॥ ३ ॥ ❀ ८८० ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया अक्षय सुभ

दिन पियकों पिया चढावैं चंदन। तब ही पिया सिंगारी नारी अरगजा घोर सुघर नंदनंदन ॥ १ ॥ ले दर्पन निरखे जु परस्पर रीझि-रीझि रही जो बंदन। 'नंददास' प्रभु पिय रस भीजे जुवतिन सुखद विरह दुख कंदन ॥२॥ ❀ ८८१ ❀ राग सारंग ❀ अक्षय तृतीया सुभ दिन नीको चंदन पहिरत नवल किसोर। उज्ज्वल बसन नवीन सो राजत फेंटा के नीके छट छोर॥१॥ केसर तिलक माल फूलन की पहिरें ठाडे रंग भरे। आस-पास जुवती जन सोभित गावत मंगल गीत खरे ॥ २ ॥ मुसकत हैं थोरे थोरे से बोलत रसाल लखीरी। अति अनुराग भरे मोहन कों 'कृष्णदास' तहां देत हैं बीरी ॥ ३ ॥ ❀ ८८२ ❀ राग सारंग ❀ आज बने नंदनंदन री नव चंदन को तन लेप किये। तामें चित्र बने केसर के राजत हैं सखी सुभग हिये ॥१॥ तनसुख को कटि बन्यो है पिछौरा ठाड़े हैं कर कमल लिये। रुचिर बनमाल पीत उपरैना नयन मेंन सरसे देखिये ॥ २ ॥ करनफूल प्रतिविंब कपोलनि मृगमद तिलक ललाट दिये। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल छबि टेढी पाग रही भृकुटि छिये ॥३॥ ❀ ८८३ ❀ राग सारंग ❀ आज बने नंदनंदन री नव चंदन अंग अगरजा लाये। रुरकत हार सुढार जलज मनि गुंजत अलि अलकनि समुदाये ॥१॥ पीत बसन तन बन्यो पिछोरा टेढी पाग टोरा लटकाये। अक्षय तृतीया अक्षय लीला अक्षय 'गंगादास' सुख पाये ॥२॥ ❀ ८८४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बागो बन्यो बावना चंदन को। चंपकली की पाग बनाई भाल तिलक नव बंदन को। सूथन की छबि कहत न आवे भाँति-भाँति मन फंदन कों। 'परमानंद' आनंदित आनन देखत हैं नँदनंदन को ॥ २ ॥ ❀ ८८५ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सारंग ❀ चंदन कौ बागो बन्यो चंदन की खोर किये चंदन के रूख तर ठाडे पिय प्यारी। चंदन की पाग सिर चंदन को फेंटा बन्यो चंदन की चोली तन चंदन की सारी॥१॥ चंदन की आरसी निहारत

हैं दोऊजन चंदन के जल के फुहारे छूटत छबि भारी। 'सूरदास' मदन-मोहन चंदन के महल बैठे गावत सारंग राग रंग रह्यो भारी ॥२॥❀८८६❀ ❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ पिछोरा खासा कौ कटि बांधे। वे देखो आवत हैं नंदनंदन नयन कुसुम सर सांधे ॥ १ ॥ स्याम सुभग तन गौरज मंडित बांह सखा के कांधे। चलत मंदगति चाल मनोहर मानो नटवा गुन गांधे ॥२॥ यह पद कमल अबहि प्रापत भये बहुत दिनन आराधे।'परमानंद' स्वामी के कारन सुरमुनि धरत समाधे ॥३॥ ❀ ८८७ ❀ सैन भोग आये ❀ ❀ राग कान्हरो ❀ लाडिली लाल राजत रुचिर कुंज में। अरगजा अंग-अंग रंग बागे बने दोऊ जन प्रेमसों स्नेह रस पुंज में ॥१॥ निर्तत ठाड़ी अली भलिय गति भेद सों रैन पहिली जानि एक अलि पुंज में। परयो परदा धरयो सैन को भोग पय पूरी भर थाल भुज लाल कर कंज में ॥२॥ ❀ ८८८ ❀ राग कान्हरो ❀ सुखद जमुना पुलिन सुखद नव कुंज में सुखद स्यामा स्याम करत ब्यारू सुखद। सुखद चंदन अंग सुखद लेपन करि सुखद भूषन कुसुम पहिर दोऊ तन सुखद ॥१॥ सुखद बिंजना दुरत मलय चहुँ दिसि सुखद सुखद गावत अली कोकिला ही सुखद। सुखद गिरिधरन हित सुखद पय पात्र भरि सुखद लाई सुखद ललित 'ललिता' सुखद ॥२॥ ❀८८९❀ दूसरे भोग आये ❀ राग बिहाग ❀ हँसि-हँसि दूध पीवत नाथ। मधुर कोमल बचन कहि-कहि प्रान प्यारी साथ ॥१॥ कनक कटोरा भरयो अमृत दियो ललिता हाथ। लाडिली अचवाय पहिलें पाछें आप अघात ॥२॥ चिंतामनि चित बस्यो सजनी नाहिन और सुहात। स्यामा स्याम की नवल छबि पर 'रसिक' बलि बलि जात ॥३॥ ❀८९०❀ शयन दर्शन ❀राग कान्हरो❀ मेरे घर आओ नंदनंदन चंदन कर राखों अति सीतल। अपने ही कर लगाऊं सब अंग झीनो बसन कर दीपत झांई कल॥१॥मेवा मिठाई बहोत सामग्री कपूर सुवास मिश्री सों भल। करहु ब्यार मैं तोय बिंजना लै गले

पहिराऊं माल तुलसीदल ॥२॥ कमल दलन की सेज बिछाऊं बाँह धरों श्री राधा की गल। गिरिधर लाल लाडिलीछबि देखत 'श्रीवल्लभ' सिर पर ॥ ३ ॥ ❀ ८९१ ❀ वैसाख सुदी ४ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग बिलावल ❀ घूमत रतनारे नैन सकल निसि जागे। लटपटी सुदेस पाग अलकनि की झलक बीच पीक छाप जुग कपोल अधरन मसि लागे॥ बिन गुन माल बनी बिच नख रेख ठनी पलटि परे बसन पीठ कंकन के दागे। चक बन्यो चंदन बनमाल लग्यो चंदन सु डगमगात चरन धरत पिया प्रेम पागे ॥२॥ बचन रचन कियो साँझ बेग आये भोर मांझ बलि-बलि या बदन कमल सोभित अनुरागे। जाय बसो वाहि धाम बिलसे जहाँ सकल जाम 'गोविंद प्रभु' बलिहारी कर जोर मांगे ॥३॥ ❀ ८९२ ❀ राग बिलावल ❀ क्यों Sब दुरत हो प्रगट भये। काहू के नयन उनींदे निकसे मानों सर सजे अरुन नये ॥ १ ॥ जावक भाल राग रस लोचन मसि रेखा जिहिं अधर दये। वलय पीठ नितंब चरन मनि बिनु गुन हार जु कंठ चये॥ २ ॥ भुज ताटंक ग्रीव बदन चिह्न कपोल दसन घसये। आलिंगन चुंबन कुच चरचत मानों दोऊ ससी उर उदये ॥३॥चरन सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल से समर जये। सोभित है सब अंग अरुन अति स्यामा नख सायुज्य दये ॥ ४ ॥ राजत बसन नील अरु राते आतुर मानों पलट लये। 'सूरदास' प्रभु को मन मान्यो सुंदरस्याम जू कुटिल भये ॥ ५ ॥ ❀ ८९३ ❀ ❀ शृंङ्गार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ हों वारि डारों री व्रजईस सीस पर अधटेडी पगिया पर। तृन तोरत बलि जात जुवति जन जहाँ-तहाँ देखियत चटक मटक कर ॥ १ ॥ तन चंदन और स्वेत पिछोरा अरगजा भींजि रह्यो सुंदर वर। 'कल्यान' के प्रभु गिरधारी जू की माधुरी निरखि मदन मन मद हर ॥ २ ॥ ❀ ८९४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सावंत सारंग ❀ सखि सुगंध जल घोरि कें चंदन हरि अंग लगावत। बदन कमल अलकें मधुपनि

सी डेढी पाग मन भावत ॥ १ ॥ कोऊ विंजना कुसुमनि के ढोरत कुसुम भूखन लै उर पहिरावत । तरु बेली सी सीयरी सी क्रीडत 'ब्रजाधीस' मन भावत ॥ २ ॥ ८९५ ❀ पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ पोढिये लाल निवास अटारी । ललितादिक सहचरी जुरि आई फूलि रही फुलवारी ॥ १ ॥ रत्न जटित हीरा के कटोरा धरे अरगजा सँवारी । अति अनुराग परस्पर दोऊ करत लेपन पिय प्यारी ॥ २॥ वृंदावन की सघन कुंज में कुसुम रावटी सँवारी । 'सूरदास' बलि-बलि जोरी पर तन मन धन सब वारी ॥३॥ ❀८९६❀

नृसिंह जयन्ती (वैशाख सुदी १४)

❀ पंचामृत समय ❀ राग कान्हरो ❀ यह ब्रत माधौ प्रथम लियो । जो मेरे भक्तन कों दुखवे ताको फारूं नखन हियो ॥ १ ॥ जो भक्तन सों बैर करत है परमेश्वर सों वैर करे । रखवारी कों चक्र सुदर्सन माथे ऊपर सदा फिरें ॥ २ ॥ पराधीन हों अपने भक्त कों जा कारन अवतार धरयो । यह जु कही हरि मुनिजन आगै अभिमानी कौ गर्व हरयो ॥ ३ ॥ भज तें भजों त्यजों नहि कबहुं पारथ प्रति श्रीपति यों भाखी । 'परमानंददास' को ठाकुर अखिल भुवन सब साखी ॥४॥ ❀ ८९७ ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग कान्हरो ❀ तोलों हों बैकुंठ न जैं हों । सुन प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जोलों तौ सिर छत्र न दै हों ॥ १ ॥ मन क्रम वचन मान जिय अपने जहँ-जहँ जाने तहिँ तहिँ लै हों ॥ २ ॥ निरगुन सगुन हेरि सब देखे तोसों भक्त मैं कबहुं न पै हों । मो देखत मेरो दास दुखित भयो यह कलंक अब ही जु चुकै हों ॥३॥ हृदय कठिन पाषान है मेरो अब ही दीनदयाल कहै हो । गहि तन हिरन्यकसिपु को चीरौं उदर फारि नख रुधिर बहै हों । यह सुनि बात तात अब 'सूरज' यह कृत को फल तुरत चखै हों ॥४॥ ❀८९८❀ राग कान्हरो ❀ कहा पढयो प्रहलाद दुलारे । पूछत वचन तात यों भाषत तुम सों बहोत सकल पचिहारे ॥ १ ॥ जो कछु मोहि पढावै पांडे मोपै पढ्यो न जाय

पिता रे। मेरे तो हृदैं नाम नरहरि को कोटि करो तोहु टरत न टारे ॥ २ ॥ सुनतहि कोप भयो हिरनाकुस पायक सकल दिये हँकारे। बाँधो पाय याहि त्रास दिखावो कहाँ राम तेरे रखवारे ॥ ३ ॥ बालक दुखी भयो तिहिं औसर श्रीपति श्री रघुनाथ संभारे। 'सूरदास' प्रभु निकस खंभ ते हिरनाकुस नख उदर विदारे ॥ ४ ॥ ❀ ८९९ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ अपनो जन प्रहलाद उबार्‌यो। खंभ बीच तें प्रगटे नरहरि हिरन्यकसिपु उर नखन बिदार्‌यो ॥ १ ॥ बरखत कुसुम सब्द ध्वनि जै-जै सुर देखत सदा कौतुक हार्‌यो। कमला हरिजू के निकट न आवत ऐसो रूप हरि कबहुँ न धार्‌यो ॥२॥ प्रहलादै चूंबत अरु चाटत भक्त जानि कै क्रोध निवार्‌यो। 'सूरदास' बलि जाय दरस की भक्त-विरोधी दैत्य निस्तार्‌यो ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ९०० ❀ राग कान्हरा ❀ हरि राखै ताहि डर काको। महापुरुस समरथ कमलापति नरहरि सो ईस है जाको ॥१॥ अनेक सासना करि-करि देखी निष्फल भई खिस्याय रह्यो। ता बालक को बाल न बाँको हरि की सरन प्रहलाद गयो ॥ २ ॥ हिरन्यकसिपु को उदर विदार्‌यो अभय राज प्रहलादै दीनो। 'परमानंद' दयाल दयानिधि अपने भक्त को नीको कीनो ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ९०१ ❀ राग कान्हरा ❀ जाकौं तुम अंगीकार कियो। तिनके कोटि विघ्न हरि टारे अभय दान भक्तन कौं दियो ॥१॥ बहु सन्मान दियो प्रहलादै सब ही निसंक जियो। निकसे खंभ फारि कैं नरहरि आपुन राख लियो ॥ २ ॥ दुर्वासा अंबरीष सतायो सो पुनि सरन गयो। प्रतिज्ञा राखी मनमोहन पिय उनहीं पै पठयो ॥ ३ ॥ मृतक भये हरि सबनि जिवाये दृष्टि हू अमृत पियो। 'परमानंद' भक्त बस केसव उपमा कौन बियो ॥ ४ ॥ ❀९०२❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ श्रीनरसिंह भक्त-भय-भंजन जनरंजन मन सुखकारी। भूत प्रेत पिसाच डाकिनी जंत्र मंत्र भव-भय हारी ॥ १ ॥ सबै मंत्र तें अधिक नाम जन रहत निरंतर उर धारी। निजजन सब्द सुनत

आनंदित गिरि गये गर्भ दनुज-नारी ॥ २ ॥ कोटिक काल दुरासद विघ्ने महाकाल को काल संघारी। श्री नरसिंह चरन पंकज रज 'जन परमानंद' बलि बलिहारी ॥ ३ ॥ ❀६०३❀

गंगा-दशमी (ज्येष्ठ सुदी १०)

❀ मंगला दर्शन ❀ आगें-आगें भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछें-पाछें आवत रंग भरी गंग। झलमलात अति उज्ज्वल जल ज्योति अब निरखत मानों सीस भरी मोतिन मंग ॥ १ ॥ जहाँ परे हैं भूप कबकें भस्म रूप ठौर-ठौर जागि उठे होत सलिल संग। 'नंददास' मानों अग्नि के जंत्र छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥ २ ॥ ❀ ६०४ ❀ शृंगार ओसरा ❀ ❀ अष्टपदी ❀ नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम्। निजनाथ-मार्ग दायिनी कुमारीकाम पूरिके कुरु भक्तिरायम् ॥ ध्रुव० ॥ मधुपकुलकलित कमलावली व्यपदेशधारित श्रीकृष्णयुत भक्त हृदये। सतत मतिशयित हरिभावना जात तत्सारूप्यगदित निजहृदये ॥ निजकुलभव विविधतरुकुसुमयुतनीरशोभयाविलसदलिवृंदे। स्मारयसि गोपीवृंद पूजितसरसमीशवपुरानंदकंदे ॥ २ ॥ उपरिचलदमलकमलारूणद्युतिरेणु-परिमिलितजलभरेणामुना। व्रजयुवतिकुचकुंमकुमारुण मुरः स्मारयसिमार पितुरधुना ॥ ३ ॥ अधिरजनि हरिविहतिमीक्षितुं कुवलयाभिधसुभगनयना-न्युशतितनुषे। नयनयुगमल्पमिती बहुतराणि च तानिरसिकतानिधितया कुरुषे ॥ ४ ॥ रजनिजागरजनितरागरंजित नयन पंकजैरहनिहरिमीक्षसे। मकरंदभरमिषेणानंद पूरिता सततमिह हर्षाश्रुमुंचसे ॥ ५ ॥ तटगतानेकशुक-सारिका मुनिगण स्तुतविविध गुणसिंधु सागरे। संगता सततमिहभक्तजनता-पहृतिराजसे रासरससागरे ॥ ६ ॥ रतिभर श्रमजलोदित कमल परिमल व्रजयुवतिजन विहरति मोदे। ताटंकचलन सुनिरस्त संगीतयुत मदमुदित मधुपकृतविनोदे ॥ ७ ॥ निज व्रजजनावनायात्र गोवर्द्धने राधिका हृद्य कर

कमले । रतिमतिशयित रस 'विट्ठल'स्याशुकुरुवेणुनिनादाव्हान सरले ॥ ८ ॥ श्लोक—व्रजपरिवृढवल्लभे कदात्वच्चरण सरोरुहमीक्षणास्पदं मे । तव तटगत वालुकाः कदाहं सकल निजांगतामुदा करिष्ये ॥ १ ॥ वृंदावने चारु वृहद्धने मन्मनोरथं पूरय सूरसूते । दृग्गोचरः कृष्णविहार एवं स्थिति स्वदीये तट एव भूयात् ॥ २ ॥ ❀६०५❀ राग विभास ❀ परमेस्वरी देव मुनि वंदित देवी गंगे । पावन चरन कमल नख रंजित सीतल बाहु तरंगे ॥१॥ मज्जन पान करत जे प्रानी त्रिविध ताप दुख भंगे । तीरथराज प्रयाग प्रगट भयो जब यमुना बेनी संगे ॥ २ ॥ भगीरथ कुल सगरो तारन बालमीक जस गायो । तुव प्रताप हरि-भक्ति प्रेमरस जन 'परमानंद' पायो ॥३॥ ❀९०६❀ ❀ राग बिलावल ❀ गंगा तैं त्रिभुवन जस छायो । सकल बंस उद्धार करन कों लै भगीरथ आयो ॥१॥ जटा संकरी मात जान्हवी परसत पाप नसायो । महा मलीन पापी अपराधी सो वैकुंठ पठायो ॥ २ ॥ ऋषि प्रबेस भई ब्रह्म कमंडलु वामन चरन छुवायो । तातें तोहि सुर नर मुनि वंदित नाम महातम पायो ॥ ३ ॥ जै-जैकार भयो त्रिभुवन में इन्द्र निजान बजायो । 'सूर-दास' सुरसरी महिमा निगमहि परत न गायो ॥ ४ ॥ ❀ ९०७ ❀ शृङ्गार दर्शन❀राग आसावरी❀ ग्वालिनि कृष्ण दरस सों अटकी । बार-बार पनघट पर आवत सिर जमुनाजल मटकी ॥१॥ मदनमोहन को रूप सुधानिधि पीवत प्रेमरस गटकी । 'कृष्णदास' धनि-धनि राधिका लोकलाज सब पटकी ॥२॥ ❀६०८❀राजभोग आये❀राग सारंग❀ हरिजूकों ग्वालिनि भोजन लाई । वृंदा विपिन विसद जमुनातट सुनि ज्योंनार बनाई ॥ १॥ सानि-सानि दधि-भात लियो है सुखद सखन के हेत । मध्य गोपाल मंडली मोहन छाक विहँसि मुख देत ॥२॥ देवलोक देखत सब कौतुक बालकेलि अनुरागे । गावत सुनत सुखद अति मानों 'सूर' दुरत दुख भागे ॥ ३ ॥ ❀९०६ ❀ राग सारंग ❀ लाल गोपाल हैं आनंदकंद । बैठे हैं कालिदी के तट बांटत छाक जसोदानंद

॥ १ ॥ हँसि-हँसि भोजन करत परस्पर बाढ्यो रतिरस रंग । 'श्रीविट्ठलनाथ' गोवर्द्धनधारी बैठे जेंवत एकहि संग ॥२॥ ❀ ६१० ❀ राग सारंग ❀ बांटि बांटि सबहिनकों देत । ऐसे ग्वाल हरिहैं जो भावत सेष रहत सोई आपुन लेत ॥ १ ॥ आछो दूध सद्य धोरी को औट जमायो अपने हाथ । हँडिया मूंदि जसोदा मैया तुमकों दै पठई ब्रजनाथ ॥ २ ॥ आनंद मग्न फिरत अपने रंग वृंदावन कालिंदी तीर । 'परमानंददास' झूठो लै बांह पसारि दियो बलबीर ॥ ३ ॥ ❀ ६११ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट भोजन करत गोपाल । विविध भांति दै पठयो जसुमति ब्यंजन बहुत रसाल ॥ १ ॥ ग्वाल मंडली मध्य बिराजत हँसत हँसावत बाल । कमल नैन मुसकाय मंद हँसि करत परस्पर ख्याल ॥ २ ॥ कोऊ ब्यार दुरावत ठाडी कोऊ गावत गीत रसाल । 'नंददास' तहां यह सुख निरखत अखियाँ होत निहाल ॥ ३ ॥ ❀ ६१३ ❀ राजभोग सरे❀ राग सारंग ❀ भोजन कीनौरी गिरिवरधर । कहा बरनौं मंडल की सोभा मधुवन ताल कदंबतर ॥१॥ पहले लिये मनोरथ ब्यंजन जे पठये ब्रज घर-घर । पाछे डला दियो श्रीदामा मोहनलाल सुघरवर ॥२॥ हँसत सयानो सुबल सैन दे लाल लियो दोना कर । 'परमानंद' प्रभु मुख अवलोकत सुरभी भीर पार पर ॥३॥ ❀ ६१३ ❀राजभोग दर्शन❀ राग सारंग❀ मेरो लाल गंगा को सो पान्यो । पाँच बरस को सुद्ध सांवरो तें क्यों विषयी जान्यो ॥ १ ॥ नित उठि आवत हाथ नचावत कौन सह्यै नक बान्यो । चूरी फोरत बांह मरोरत माट दही को भान्यो ॥२॥ ठाडी हँसति नंदजू की रानी ग्वालिनि बचन न मान्यो । 'परमानंद' मुसिक्याय चली जब देख्यो नन्द घरान्यो ॥३॥ ❀६१४ ❀ राग सारंग ❀ जमुना तट नवनिकुंज द्रुम नव दल पोहोपपुंज तहां रची नागरवर रावटी उसीर की । कुंकुम घनसार घोरि पंकजदल बोरि-बोरि चरचत चहुँ ओर अवनी पंकज पाटीर की ॥१॥ सोभित तनगौर स्याम सुखद सहज कुंज धाम परसत सीतल सुगंध मंदगति समीर की । 'नंददास'

पिय प्यारी निरखि सखी ललिता ओट श्रवनन धुनि सुनि किंकिनी मंजीर की ॥२॥ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग सोरठ ❀ अंग अनंगनि रंग रस्यो । नंद गृह तें नंदसुत वृषभान-भवन वस्यो ॥ १ ॥ धेनु के संग मिस ही मिस करि विपिन पंथ धस्यो । निरखि के सब ग्वाल सैन नयन फेरि हँस्यो ॥ २ ॥ बहुरि क्यों छूटत तहाँ ते बाहुबंध कस्यो । नेक राधा वदन चितयो हुलस इत विलस्यो ॥ ३ ॥ साँझ सब एकत्र ह्वै कै घोख-पथ परस्यो । 'सूर' ऐसे दरस कारन मन रहत तरस्यो ॥ ४ ॥ ❀ ९१६ ❀ राग सारंग ❀ बैठे घनस्याम सुंदर खेवत हैं नाव । आज सखी मोहन संग खेलवे को दाव ॥१॥ जमुना गंभीर नीर अति तरंग लोलें । गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मृदु बोलें । पथिक हम खेवट तुम लीजिये उतराई । बीच धार माँझ रोकी मिस ही मिस डुलाई । डरपति हौं स्यामसुंदर राखिये पद पास । याही मिस मिल्यो चाहें 'परमानंददास' ॥ २ ॥ ❀ ९१७ ❀ संध्या समय ❀ राग सारंग ❀ जमुना जल खेवत हैं हरि नाव । बेगि चलो वृषभानु नंदिनी अब खेलन को दाव ॥ १ ॥ नीर गंभीर देखि कालिंदी पुनि-पुनि सुरत करावे । वारंवार तुव पंथ निहारत नैननि में अकुलावे ॥ २ ॥ सुनि कै बचन राधिका दौरी आय कंठ लपटानी । 'परमानंद' प्रभु छबि अवलोकत विथक्यों सरिता पानी ॥ ३ ॥ ❀ ९१८ ❀ शयन दर्शन ❀ अष्टपदी ❀ रतिसुखसारे गत-मभिसारे मदनमनोहर वेषम् । न कुरु नितंबिनि गमन विलंबनमनुसरतं हृदयेशम् ॥ १ ॥ धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली । गोपी पीन पयोधर मर्दन चलित चपल कर शाली ॥ ध्रु० ॥ नाम समेतं कृत संकेतं वादयते मृदुवेणुम् । बहुमनुते तनुते तनुसंगत पवन चलितमपि रेणुम् ॥२॥ पतति पतत्रे विचलित पत्रे शंकित भवदुपयानम् । रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तव पंथानम् ॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यज मंजीरंरिपुमिव केलि सुलोलम् । चल सखि कुंजं स तिमिर पुंजं शीलय नील निचोलम् ॥ ४ ॥

उरसि मुरारे रूपहितहारे घन इव तरलबलाके । तडिदिव पीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ॥ ५ ॥ विगलित वसनं परिहत रसनं घटय जघनमपिधानम् । किसलयशयने पंकज नयने निधिमिव हर्ष निधानम्॥६॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याती विरामम् । कुरु मम वचनं सत्वर रचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥ ७ ॥ 'श्रीजयदेवे' कृत हरि सेवे भणित परम रमणीयम् । प्रमुदित हृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृत कमनीयम्॥८॥❀६१९❀

❀ मान ❀ राग विहाग ❀ बोलत चलि ब्रजराज लाडिले बैठे पिय निकुंज सघन । रसिकराय मदनमोहनलाल पियसों तजि मान मिलि बैगि कुसुम सुकुमार तन ॥ १ ॥ जमुना जल तरंग सुनि सजनीरी सीतल सुगंध बहत पवन । विविध कुसुम मकरंद पान कर गुंजत मत्त मधुप गन ॥२॥ निबिड कोकिला कलरव तेसोई उदित उडुराजवर बरखत सुखद सुधाकन । 'गोविंद' प्रभु रीझि हृदै सों लगाय लई रसिकराय नंदनंदन ॥ ३ ॥ ❀ ६२० ❀

❀ राग विहाग ❀ नवल किसोर नवल नागरिया । अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर स्याम भुजा अपने उर धरिया ॥ १ ॥ करत विहार तरनितनया तट स्यामास्याम उमग रस भरिया । यों लपटाय रहे दोऊ जन मरकत मनि कंचन जैसे जरिया ॥ २ ॥ या उपमा कों रवि ससि नाहीं कंदर्प कोटिक वारने करिया । 'सूरदास' बलि-बलि जोरी पर नंदनंदन वृषभान दुलरिया ॥ ३ ॥ ❀ ६२१ ❀ ज्येष्ठ सुदी ११ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिभास ❀ जमुना पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल श्रीगोवर्द्धनधारी । नवल निकुंज नवल कुसुमित दल नवल-नवल वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥ नवल हास नवल छबि क्रीडत नवल विलास करत सुखकारी । नवल श्रीविट्ठलनाथ कृपाबल 'नंददास' निरखत बलिहारी ॥२॥❀६२२❀ ज्येष्ठ सुदी १४†❀ मंगला दर्शन ❀

❀ राग रामकली ❀ प्रानपति बिहरत श्रीजमुना कूले । लुब्ध मकरंद के

† आज सूं स्नान यात्रा तक सब समय पनघट के कीर्तन होय ।

भ्रमर ज्यों बस भये देखि रवि उदय मानो कमल फूले ॥ १ ॥ करत गुंजार मुरली जू लै सांवरो सुरत ब्रजबधू तन सुधि जु भूले। 'चतुर्भुजदास' जमुने प्रेम सिंधु में लाल गिरिधरन अब हरखि झूले॥२॥ ❀६२३❀शृंगार ओसरा❀ ❀राग बिलावल❀ जमुनाजल घट भरि चली चंद्रावली नारि। मारगमें खेलत मिले घनस्याम मुरारि ॥१॥ नैननि सों नैनां मिले मन रह्यो लुभाय। मोहन मूरति बसि रही पग चल्यो न जाय ॥ २ ॥ तब तें प्रीति अधिक बढी यह पहली भेंट। 'परमानंद' स्वामी मिले जैसे गुड़ चेंट ॥३॥ ❀६२४❀ राग बिलावल❀ मोहि जल भरन दै रे कन्हैया ॥ध्रु०॥ और नागरि सब गागरि ले गई मोहि रोकत घर मग जोवै मेरी मैया ॥१ ॥ मेरो कह्यो तू मानि लै हो मोहन सुनि हो कुंवर बलदाऊ जू के भैया। 'कुंवरसेन' के प्रभु आर नहिं कीजे हों तो तिहारी लैहों बलैया ॥ २ ॥ ❀ ६२५ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग आसावरी❀ आवत ही जमुना भर पानी। सांवरे बरन ढोटा कौन को री माई वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी ॥१॥ हों सकुची मेरे नैन सकुचे इन नैनन के हाथ बिकानी। 'परमानंद' प्रभु प्रेम समुद्र में ज्यों जलधर की बूंद समानी ॥२॥ ❀६२६❀ ❀राजभोग दर्शन❀ राग आसावरी❀ आवत ही जमुना भरि पानी। स्याम रूप काहू को ढोटा वाकी चितवनि मेरी गैल भुलानी ॥ १ ॥ मोहन कह्यो तुम कों या ब्रजमें हमें नाहिं पहचानी। ठगी सी रही चेटक सो लाग्यो तब व्याकुल मुख फुरत न बानी ॥२॥ जा दिन तें चितयोरी मो तन ता दिन तें हरि हाथ बिकानी। 'नंददास' प्रभु यों मन मिलियो ज्यों सागर में पानी ॥ ३ ॥ ❀ ६२७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग सोरठ ❀ भरि-भरि धरि-धरि आवत गागर तू कौन के रस भरी ! और दिनन तुम एकहि बिरियां जात ही पनियां आज केऊ बेर गई ऐसे कहा भयो बिनु देखे हरी ॥ १ ॥ जो तू सास ननद की कान करेगी तो तू अपने कुल डरेगी री। 'हरिदास' ठाकुर को प्रभु है रूप विमोहन नैन प्रान गये सब ढरेगी री ॥ २ ॥ ❀ ६२८ ❀ संध्या दर्शन ❀

❀ राग हमीर ❀ साँवरो देखत रूप लुभानी। चले री जात चितयोरी मोतन तब ते संग लगानी ॥१॥ वे वहि घाट पिवावत गैया हों इतते गई पानी। कमलनैन उपरेंना फेरयो 'परमान्द' हि जानी ॥२॥ ❀९२९❀शयन भोग आये❀ ❀राग कल्याण ❀ यह कौन टेव तिहारी कन्हैया जब तब मारग रोके। कैसे के पनियां जाय जुवतिजन आडोइ ठाडो है लकुट लिये दृग झोके ॥१॥ कबहुँक पाछे तें गागर डार देत ऐसें बजावै तारी जैसे कोई चोंके। 'रसिक' प्रीतम की अटपटी बातें सुनिरी सखी समझ न परें वाकी नोंके॥२॥❀९९०❀ ❀ राग हमीर ❀ आवत सिर गागर धरे भरे जमुना जल मारग मिले मोहि नंदजू को नंदना। सुधि न रही री ता छिन ते सुनिरी सखी देख्यो नैनन आनंद को कन्दना ॥ १ ॥ चित तें कछु न सुहाय गेह हू रह्यो न जाय मेरी दिसि चितवत डारयो मोपै फंदना। 'नन्ददास' प्रभु कों जो तू मिलावै तो हौं तोकों सरबस अरपि के पूजों तौ चंदना ॥ २ ॥ ❀९३१❀सेनभोग सरे❀ ❀राग कान्हरा❀ कबतें चली यह रीति रहत पनघट पर ठाडो। जाति पांति कुल कौन बडो है दसेक गैया बाढो ॥१॥नंदबाबा जिन ऐसे सिखये जो करि आँखि मोहुकों काढो। 'नन्ददास' प्रभु जैसे मृगी लों रूप गढो प्रेम फंदा गाढो ❀९३२❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग अडानो ❀ हौं जल कों गई री सुघट नेह भरि लाई परी हैं चटपटी दरस की। इत मोहन गाँस उत गुरुजन–त्रास चित्र लिखी ठाढी नाम धरत सखी परस की ॥ १ ॥ टूटे हार फाटे चीर नयनन बहत नीर पनघट भई भीर सुधि न कलस की। 'नंददास' प्रभु सौं ऐसी गाढी बाढी प्रीत फैल परी चायन सरस की ॥२॥ ❀९३३❀ मान ❀ राग केदारा ❀ नागरी बेगि चलो प्यारी। कालिंदी के पुलिन मनोहर ठाढे लालबिहारी ॥ ॥ १ ॥ सीत समीर अरु नीर बहत हैं कुंज कुटीर सुखकारी। जानत हूँ निसि नाहिन वेधी इन्दु पच्छिम कों धारी ॥२॥ रस बस करिलैं छैल छबीलो तोहि मनावत हारी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरनलाल ने सुखनिधि सेज सँवारी ॥ ३ ॥ ❀९३४❀

स्नान-यात्रा (ज्येष्ठ सुदी १५)

❀ मंगल भोग आये ❀ राग रामकली ❀ श्री जमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावे । श्रीगोकुल के निकट बहति हो लहरनि की छबि आवे ॥१॥ सुख देनी दुख हरनी श्रीजमुने जो जन प्रात उठि न्हावे । मदनमोहन जु की खरी ये हैं प्यारी पटरानी जू कहावे ॥ २ ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे । 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कों वेद विमल जस गावें ॥ ३ ॥ ❀ ६३५ ❀ स्नान के दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ मंगल ज्येष्ट ज्येष्ठा पून्यो करत स्नान गोवर्द्धनधारी । दधि और दूध मधु ले सखी री केसर घट जल डारत प्यारी । चोवा चंदन मृगमद सौरभ सरस सुगन्ध कपूरनि न्यारी ॥ १ ॥ अरगजा अंग-अंग प्रति लेपन कालिंदी मध्य केलि बिहारी । सखियनि जूथ-जूथ मिलि छिरकत गावत तान तरंगनि भारी ॥ २ ॥ 'केसौकिसोर' सकल सुखदाता श्री वल्लभनंदन की बलिहारी ॥ ३ ॥ ❀ ९३६ ❀ राग बिलावल ❀ज्येष्ठ मास पून्यो ज्येष्ठा को करत स्नान मुदित गोपाल । आगें द्विज मिलि करत वेद धुनि सुनि-सुनि मगन होत नंदलाल ॥१॥ सीतल जल रजनी अधिवासन बहु सुगंध चंदन छिरकाय । तुलसीदल पुहुपावलि धरकें केसर और कपूर मिलाय ॥ २ ॥ भरि-भरि संख डारत हरि के सिर श्रीविट्ठल प्रभु अपने हाथ। दरसन करत हरखि मन 'ब्रजपति' दोऊ द्रगनि भरि निरखे नाथ ॥३॥ ❀ ६३७ ❀ राग बिलावल ❀ ज्येष्ठ मास सुभ पून्यो सुभ दिन करत स्नान गोवर्द्धनधारी । सीतल जल हाटक जल भरि-भरि रजनी अधिवासन सुखकारी ॥ १ ॥ विविध सुगंध पुहुप की माला तुलसी दल दै सरस सँवारी । कर लै संख न्हवावत हरि कों श्रीविट्ठल प्रभु की बलिहारी ॥ तैसेंई निगम पढ़त द्विज आगें तैसेंई गान करत ब्रजनारी । जै-जै सब्द चारयों दिसि ह्वै रह्यो यह विधि सुख बरखत अति भारी ॥ ३ ॥ करि सिंगार परम रुचिकारी सीतल भोग धरत भरि-

थारी । दै बीरा आरती उतारति 'गोविंद' तन मन धन दै वारी ॥ ४ ॥ ❀ ६३८ ❀ राग बिलावल ❀ पूरन मास पूरन तिथि श्रीगिरिधर स्नान करत मन भायो । अति आनंद सों न्हवावत श्री बिट्ठल ज्यों विधि वेद बतायो ॥१॥ उत्तम ज्येष्ठ ज्येष्ठा नच्छत्र होत अभिषेक भक्तन मन भायो । 'परमानंद' लाल गिरिवरधर अति उदार दरसायो ॥२ ॥ ❀६३६❀ शृंगार ओसरा ❀ ❀ राग रामकली ❀ नमो तरनि-तनया परम पुनीत जग पाविनी कृष्ण मनभाविनी रुचिर नामा । अखिल सुखदायिनी सब सिद्धि हेतु श्रीराधिका रमन रतिकरन स्यामा ॥ १ ॥ विमल जल सुमन कानन मोदजुत पुलिन अतिरम्य प्रिय ब्रजकिसोरा । गोप-गोपी नवल प्रेम रति वंदिता तट मुदित रहत जैसे चकोरा ॥ २ ॥ लहरी भाव ललित बालुका सुभग ब्रजबाल व्रत पूरन रास फलदा । ललित गिरिवरधरन प्रिय कलिंदनंदिनी निकट 'कृष्ण-दास' विहरत प्रबलदा ॥ ३ ॥ ❀६४०❀ राग विभास ❀ श्री जमुनाजी दीन जानि मोहिं दीजे । नंदकुमार सदा वर मांगों गोपिन की दासी मोहि कीजे॥ ॥१॥ तुम तो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी ।तिहारे बस सदा लाडिली वर तट क्रीडत गिरिधारी ॥ २ ॥ सब ब्रजजन विहरत संग मिलि अद्भुत रास विलासी । तुम्हारे पुलिन निकट कुंजनि द्रुम कोमल ससी सुबासी ॥ ३ ॥ ज्यों मंडल में चंद बिराजत भरि-भरि छिरकति नारी । हँसत न्हात अति रस भरि क्रीडत जल क्रीडा सुखकारी ॥ ४ ॥ रानी जू के मंदिर में नित उठि पाँय लागि भवन-काज सब कीजे । 'परमानंददास' दासी ह्वै नंदनंदन सुख दीजे ॥ ५ ॥ ❀ ६४१ ❀ राग रामकली ❀ अधम उद्धारनी मैं जानी, श्री जमुनाजी । गोधन संग स्यामघन सुंदर तीर त्रिभंगी दानी ॥ १ ॥ गंगा चरन परसतें पावन हर सिर चिकुर समानी । सात समुद्र भेद जम-भगिनी हरि नखसिख लपटानी ॥ २ ॥ रास रसिकमनि नृत्य परायन प्रेम पुंज ठकुरानी । आलिंगन चुंबन रस बिलसत कृष्ण पुलिन

रजधानी ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतु सुख देति नाथ कों संग गधिका रानी। 'गोविंद' प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥ ४ ॥ ❀ ६४२ ❀ ❀ राग रामकली ❀ यह प्रसाद हौं पाऊं, श्री जमुनाजी। तिहारे निकट रहों निसिबासर राम कृष्ण गुन गाऊं ॥ १ ॥ मज्जन करों विमल जल पावन चिंता कलह बहाऊं। तिहारी कृपा तें भानु की तनया हरि पद प्रीत बढाऊं ॥२॥ बिनती करों यही वर मागों अधम संग बिसराऊं। 'परमानंद' प्रभु सब सुखदाता मदन गोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ९४३ ❀ राग बिभास ❀ सरन प्रतिपाल गोपाल-रति बर्द्धिनी। देति पति-पंथ प्रिय कंथ सन्मुख करत अतुल करुनामयी नाथ अंग अर्द्धिनी ॥१॥ दीनजन जानि रस पुंज कुंजेश्वरी रमति रस रास पिय संग निसि-सरदनी। भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिनी करत विध्वंस जन अखिल अघ-मर्दिनी ॥ २ ॥ रहत नंदसूनु तट निकट निसिदिन सदा गोप-गोपी रमत मध्य रस-कंदिनी। कृष्ण तन वरन गुन धर्म श्री कृष्ण के कृष्ण लीलामयी कृष्ण सुख-कंदिनी ॥ ३ ॥ पद्मजा पाय तुव संग ही मुररिपु सकल सामर्थ्य भई पाप की खंडिनी। कृपा रस पूर वैकुंठ पद की सीढ़ी जगत विख्यात सिव सेस सिर मंडिनी ॥४॥ परयो पद कमलतर और सब छाँडिकें देख दृग कर दया हास्य मुख मंदनी। उभय कर जोरि 'कृष्णदास' बिनती करे करौ अब कृपा कलिंदगिरि-नंदिनी ॥५॥ ❀ ९४४ ❀ राग रामकली ❀ तुमसी और न कोई, श्रीयमुनाजी। करौ कृपा मोहि दीन जानि के निज व्रज बासो होई ॥ १ ॥ राखौ चरन सरन भानु-तनया जनम आपदा खोई। यह संसार सबै बिधि स्वारथ को सुत बंधु सगो न कोई ॥२॥ प्रेम भजन में करत विघनता संत संतापै सोई। ताको संग मोहि सुपने न दीजे मांगों नैन भरि रोई। गरल पान डारत अमृतमें विषया रस सों सोई। 'रसिक' कहें हौं दीन ह्वै माँगों चरन समुद्र समोई ॥४॥ ❀ ९४५ ❀ ❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुनाजी पतित पावनकरे। प्रथम ही जब दियो दरसन सकल

पातक हरे ॥ १ ॥ जल तरंगनि परसि कर पय पान सों मुख भरे। नाम सुमिरत गई दुरमति कृष्ण जस विस्तरे ॥ २ ॥ गोप-कन्यन कियो मज्जन लाल गिरिधर वरे। 'सूर' श्रीगोपाल सुमिरत सकल कारज सरे ॥३॥ ❀९४६❀ ❀ राग रामकली ❀ नेह कारन प्रथम श्रीजमुने आई। भक्त के चित्त की वृत्ति सब जानि कें ताही तें अति ही आतुर जु धाई ॥ १ ॥ जाके मन जैसी इच्छा हती ताही की तैसी ही साधजु पुजाई ॥१॥ 'नंददास' प्रभु तापर रीझि रहे जोई श्रीजमुनाजू कौ जसजु गाई ॥ २ ॥ ❀ ९४७ ❀ राग रामकली ❀ कालिन्दी महा कलिमल हरनी। रवि-तनुजा जम-अनुजा स्यामा महासुन्दरी गोविंद-घरनी ॥ १ ॥ जै जमुना जै कृष्णवल्लभी पतितनि कों पावन भव तरनी। सरनागत कों देति अभयपद ज़ननी करति जैसे सुत की करनी ॥२॥ सीतलमंद सुगंध सुधानिधिधारा धरी वपु उर धरनी। 'परमानंद' प्रभु पतित पावनी जुग-जुग साखी निगम नित बरनी ॥ ३ ॥ ❀९४८❀राग रामकली❀ पिय संग रंग भरि करि कलोलें। सबनि कों सुख देन पिय संग करत सेन चित्त में तब परत चैन जबहि बोलें ॥ १ ॥ अति ही विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत कृपा करें अतोलें। दरस करि परस करि ध्यान हियमें धरें सदा व्रजनाथ इनि संग डोलें ॥ २ ॥ अतिहि सुख करन दुख सबन के हरन एही लीनो परन दैजु कौले। ऐसी श्रीजमुने जानि तुम करौ गुन गान 'रसिक' प्रीतम पाओ नग अमोले ॥३॥ ❀९४९❀ राग रामकली❀नैन भरि देखि अब भानु-तनया। केलि पियसों करे भ्रमर तबहि परे श्रमजल भरत आनन्दमनया ॥१॥ चलत टेढी होही लेत पियकों मोही इन बिना रहत नहीं एक छिनया। 'रसिक' प्रीतम रास करत जमुना पास मानो निर्धनन की हैजु धनया ॥ २ ॥ ❀९५० ❀ राग रामकली ❀ स्याम सुखधाम जहां नाम इनके निसिदिना प्रानपति आय हियमें बसे जोई गावे सुजस भाग्य तिनके ॥ १ ॥ येहि जग में सार कहत बारं-बार सबनि के आधार धन निर्धनन के। लेत

जमुने नाम देत अभै पद दान 'रसिक' प्रीतम पिया बसजु इनके ॥ २ ॥ ❀ ६५१ ❀ राग रामकली ❀ कहत श्रुतिसार निरधार करिके। इन बिना कौन ऐसी करै हे सखी हरत दुःख द्वंद सुखकंद बरखे ॥ १॥ ब्रह्मसंबंध जब होत या जीवकों तबहि इनकी भुजा वाम फरके। दौरि करि सोर करि जाय पियसों कहै अतिहि आनन्द मन में जु हरखे ॥ २ ॥ नाम निरमोल नग ना कोऊ ले सकै भक्त राखत हियें हार करके। 'रसिक' प्रीतमजू की होत जापर कृपा सोई श्री जमुना जी को रूप परखे ॥ ३ ॥ ❀ ६५२ ❀ ❀ राग रामकली ❀ श्रीजमुना सी नाहि कोऊ और दाता। जो इनकी सरन जात है दौरि कै ताहि कों तिहिं छिनु करि सनाथा ॥ १ ॥ ये ही गुनगान रसखान रसना एक सहस्र रसना क्यों न दई बिधाता। 'गोविंद' प्रभु तन मन धन वारनें सबहि को जीवन इनही के जु हाथा ॥ २ ॥ ❀ ६५३ ❀ ❀ राग रामकली ❀ स्याम संग स्याम व्है रही श्रीजमुने। सुरतश्रम बिन्दु तें सिंधु सी बही चली मानों आतुर अली रही न भवने ॥ १ ॥ कोटि कामहिं वारों रूप नैननि निहारों लाल गिरिधरन संग करन रमने। हरषि 'गोबिंद' प्रभु निरखि इनकी ओर मानो नव दुलहनि आई गवने ॥ २ ॥ ❀६५४❀ ❀ राग रामकली ❀ जमुना जस जगत में जोई गावे। ताके आधीन व्है रहत हैं प्रानपति नैन और बैन में रस जू छावे ॥ १ ॥ वेद पुरान की बात यह अगम है प्रेम कौ भेद कोऊ न पावे। कहत 'गोंविंद' श्रीजमुने की जा पर कृपा सोई श्री वल्लभकुल सरन आवे ॥ २ ॥ ❀ ६५५ ❀ राग रामकली ❀ चरन पंकज रेनु श्रीजमुनाजु देनी। कलिजुग जीव उद्धारन कारन काटत पाप अब धार पैंनी ॥१॥ प्रानपति प्रानसुत आये भक्तन हित सकल सुखन की तुम हो जु स्रेंनी। 'गोविंद' प्रभु बिना रहत नहीं एक छिनु अतिहि आतुर चंचल जु नैनी ॥ २॥ ❀६५६❀ राग रामकली ❀ धाय के जाय जो श्रीजमुनाजू तीरे। ताकी महिमा अब कहाँ लगि बरनिये जाय परसत अंग

प्रेम नीरे॥१॥निसदिना केलि करत मनमोहन पिया संग भक्तन की हैजु भीरे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल इन बिना नेक नहीं धरत धीरे॥२॥❀९५७❀

❀ राग रामकली ❀ जा मुख तें श्री यमुने यह नाम आवे। तापर कृपा करें श्रीवल्लभ प्रभु सोई श्रीयमुनाजी को भेद पावे ॥ १ ॥ तन मन धन सब लाल गिरिधरन कों देकें चरन जब चित्त लावे। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल नैनन प्रगट लीला दिखावें ॥ २ ॥ ❀ ९५८ ❀ राग रामकली ❀ धन्य श्री जमुने निधि देंनहारी। करत गुनगान अज्ञान अघ दूरि करि जाय मिलवत पिय-प्रानप्यारी ॥ १ ॥ जिन कोऊ संदेह करो बात चित्त में धरो पुष्टि-पथ अनुसरो सुख जु कारी। प्रेम के पुंज में रास-रस कुंज में ताही राखत रस रंग भारी ॥ २ ॥ श्रीजमुने अरु प्रानपति प्रान अरु प्रानसुत चहुँ जन जीव पर दया विचारी। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रीति के लिये अब संग धारी ॥ ३ ॥ ❀ ९५९ ❀ राग रामकली ❀ गुन अपार मुख एक कहाँ लौं कहिये। तजौ साधन भजौ नाम श्रीजमुनाजी कौ लाल गिरिधरन वर तबहि पैये ॥ १ ॥ परम पुनीत प्रीति की रीति सब जानि के दृढ करि चरन कमल जु ग्रहिये। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल ऐसी निधि छाँडि अब कहाँ जु जैये ॥ २ ॥ ❀ ९६० ❀ राग रामकली ❀ चित्त में श्री जमुना निसिदिन जो राखो। भक्त के बस कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो श्री जमुना जू को है जु साखो ॥ १ ॥ जा मुख तें श्रीयमुने यह नाम आवे संग कीजे अब जाय ताको। 'चतुर्भुजदास' अब कहत हैं सबनि सों तातें श्रीजमुने जमुने जु भाखो ॥ २ ॥ ❀ ९६१ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ ❀ राग सूहा ❀ कौन की उपरनी ओढि आये, साँची कहो पिय मोसों। । लटपटी पाग अटपटे पेचन बिनु गुनमाल हिये अधरन अंजन लाये॥१॥ जानत जो कौन के दुराये चाहत हो छिपत नाहीं छिपाये। एती चतुराई जिनि करो रे 'मोहन' मोसों कहो अब कौन तिया बिरमाये॥३॥ ❀९६२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ करत गोपाल जमुनाजल-क्रीड़ा । सुर नर असुर थकित भये देखत बिसरि गई तन जिय पीडा ॥ १ ॥ मृगमद तिलक कुंकुमा चंदन अगर कपूर बास बहु भुरकन । कुच युग मगन रसिक नंदनंदन कमल पानि परस्पर छिरकन ॥ २ ॥ निर्मल सरद कलाकृत सोभा बरखत स्वाँति बूंद जल मोती । 'परमानंद' कंचन मनि गोपी मरकत मनि गोविंद मुख जोती ॥ ३ ॥ ❀ ९६३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ जमुना जल गिरिधर करत विहार । आसपास जुवती मिलि छिरकत हँसत कमल मुख चारु ॥ १ ॥ काहू की कंचुकी बंद टूटे काहू के टूटे हार॥ काहू के बसन पलटि मनमोहन काहु अंग न सँभार ॥२॥काहू की खूभी काहू की नकबेसर काहू के विथुरे वार । 'सूरदास' प्रभु कहां लौं वरनों लीला अगम अपार ॥ ३ ॥ ❀ ९६४ ❀ संध्या समय ❀ राग हमीर ❀ जमुना तट देखे नंदनंदन । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीत बसन तन चर्चित चंदन ॥ १ ॥ लोचन तृपत भये दरसन तें उर की तपत बुझानी । प्रेम मगन तब भई ग्वालिनी तन की दसा भुलानी ॥२॥ कमल नयन रहे तट ठाडे तहाँ सकुच मिलि न.री । 'सूरदास' प्रभु अंतरजामी ब्रत-पूरन बपुधारी ॥ ३ ॥ ❀ ९६५ ❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कानरा ❀ जमुना जल विहरत हैं स्याम । राजत हैं दोऊ बाँह जोरि सखी संग स्यामास्याम ॥ २ ॥ कोऊ ठाडी जब नीर जंघ लौं कोऊ कटि हिरद नींव । यह सुख बरनि सकै ऐसो को सुन्दरता की सींव ॥ २ ॥ स्याम अंग चंदन की आभा नागर केसर अंग । मलयज पंक कुमकुमा मिलि जल जमुना एक रंग ॥ ३ ॥ निसि श्रम भीन्यो तन जल निकसे जमुना भई पावन । 'सूर' प्रभु सुख ये मधि युवतीगन-जनके मन भावन ॥ ४ ॥ ❀ ९६६ ❀

उत्सव श्रीद्वारकेशलाल जी को (आषाढ़ कृष्णा ६)

❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ प्रगट भये तैलंग-कुल दीप ।

श्रीलछमन भट अति आनंदित सुत-मुख निरखत आय समीप ॥१॥ मात इलम्मा कूख उदय भयो ज्यों उपजत मुक्ता फल सीप। 'सगुनदास' मुख कहत न आवे जस प्रसरयो नव खंड सप्तद्वीप ॥ २ ॥ ❀ ६६७ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारङ्ग❀ गाइन सों रति गोकुल सों रति गोवर्द्धन सों प्रीति निबाही। श्रीगोपाल चरन सेवा रति गोप सखा सब अमित अथाई ॥१॥ गो बानी जो वेद की कहियत श्रीभागवत भलें अवगाही। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल नंदनंदन की सब पूरछाँई ॥२॥ ❀६६८❀राजभोग दर्शन❀ ❀ राग सारंग ❀ सुंदर तिवारो खसखाने को बनायो है तामें बैठे ब्रजराज कुंवर मनकों हरत हैं। अति सुगंध जल बहुभांतिन के बेला भर लाय-लाय खसीसब छिरक्यो करत हैं ॥१॥ सीतल सुगंध त्रिविध समीर बहे कोकिला चकोर मोर डोलत फिरत हैं। 'जीवन' फुहारे छूटें मानो मनमथ लूटें झुकि झुकि-झुकि धार होदनि भरत हैं ॥ २ ॥ ❀ ६६९ ❀ राग सारंग ❀ उसीर भवन छायो सुमन तामें बैठे राधारवन एरी अंस भुज मेली। मृगमद घसि अंग लगाय कपूर जल सों चुचाय सीतल लागे दोऊरी करत सुखकेली ॥१॥ गावे सारंग राग सरस स्वर कोकिला सुरत रस चले तें न चलाय रस सों पुलकित द्रुमवेली। 'जगन्नाथ' हित विलास ग्रीष्म ऋतु सुख निवास ललिता-दिक निरखि-निरखि पावे रसझेली ॥ ३॥ ❀६७०❀ राग सारंग❀ वृन्दावन कुंजनि में मध्य खसखानो रच्यो सीतल बियार झुकि गोखन बहत है। सुगंधी गुलाब-जल नाना बहु भांतिन के लै लाय धाय सखि सब छिरकत हैं ॥१॥ धार धुरवा छूटत तहाँ नीके दादुर मोर पिक सुक जु फिरत हैं। 'कृष्णदास' फुहारें छूटे मानों मनमथ लूटे झुकि-झुकि-झुकि धारे हौदन भरत है॥२॥❀६७१❀ ❀ फूलके सिंगार के भावके ❀ भोग के दर्शन में❀ राग सारंग❀देखौरी मोहन पनघट पर ठाडो है नव निकुंज तैसीये सरद सुहाई रात। फूल कौ टिपारो बन्यो फूलन कौ मल्लकाछ फूलन के हार उर फूले-फूले करत बात ॥१ ॥ फूलन

रथयात्रा को प्रथम दिन (आषाढ सुदी १)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग भैरव की रागमाला ❀ [1]संग त्रियन बन में खेलत रविजा-तट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान । सप्त सुरन तीन ग्राम गाय बजाय लिये आरोही-अवरोही धरन सुरन सम प्रमान ॥ १ ॥ [2]प्रथम राग भैरव गाइये मन मोह लिये चलतें अचल भये अचल तें चल भये । [3]मालकोस की तान लै लै बान बेधत प्रान [4]राग हिंडोल मन कलोल मीठे बोल लेत मन मोल ॥२॥ [5]मेघ ज्यों बरखत रस बुंदनि घुमडि बिरहिनि के मन हरे उमड । [6]श्रीराग गावत नैन नचावत [7]सोरठ गाइए हो सुंदर स्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ॥ ३ ॥ नवल [8]केदारो गावत राग लेत सुलप गति सुघर सुजान । [9]'ब्रजाधीस' प्रभु सरद रेन सुख विलास मदनमोहन पर वारौं तन मन प्रान ॥४॥ ❀ ९७७ ❀ राग सूहा ❀ मेरे तनकी तपत बुझाई । बिदा भई ग्रीषम ऋतु आली अब बरखा ऋतु आई ॥ १ ॥ जब मेरे गृह आवेंगे गिरिधर तब हों नीके करूंगी बधाई । नाना विधि के साज सिंगारौं बिरहनि पीर मिटाई ॥ २ ॥ सुभ मंगल आज कुंज भवन में पोहोप सुवास सुगंध छवाई । 'चतुर्भुज' प्रभु मेरे भवन में पधारो वासों तन विसराई ॥ ३ ॥ ❀ ९७८ ❀ राग सुघराई ❀ नई रितु आई माई परम सुहाई । नव सिंगार सजि चलौरी सबै मिलि जहाँ प्रीतम सुखदाई ॥ १ ॥ तन मन भेट करन रुचि बाढ़ी बिरहिनि बिरह सताई । 'कुंभनदास' प्रभु मानगढ़ तोरत ब्रजजन सजत चढाई ॥ २ ॥ ❀ ९७९ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ ❀ राग सुघराई ❀ मुरली मन मोद बढावति । मीठे मधुरे बोल सुनावति याही तें मोहि भावति ॥ १ ॥ राग रागिनी भेद दिखावत नेह नयो उपजावति । जैसी भाँवर मो मन भावति तैसी तानि गावति ॥ २ ॥ पसु पंछी तहाँ दोरे आवत सुधि बुधि सब बिसरावति । 'सूरदास' स्वामी

---

१ राग भैरवी ताल द्रुपद । राग भैरव ताल आडा चौताला । ३. राग मालकोस ताल झूमरा । ४. राग हिंडोल ताल त्रिताल५. राग मेघ मलार ताल चर्चरी । ६. राग श्रीराग ताल सुरफाग । ७. राग सोरठ ताल सवारी । ८. राग केदारा ताल धीमो त्रिताल । ९ राग भैरवी ताल एक ताल ।

बिरमावति चढि सुरभिन टेरि सुनावति ॥३॥ ❀ ६८० ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग सारंग ❀ सारंग गावति सारंग-नैनी पिय को मनहि रिझावत। आछी नीकी तान उपजावत सुघर मधुर सुर बीन बजावत ॥ १ ॥ लेत गति में गति सरस चतुर प्रीतम-प्रानपिया के जिय अति भावत। 'नंददास' प्रभु रीझि मगन भये लै सराहत तब प्यारी सचु पावत ॥ २ ॥ ❀६८१❀ ❀ संध्या समय ❀ रागकल्याण ❀ मदनमोहन पिय गावत राग कल्यान। बाजत ताल मृदंग संख ध्वनि गावत सब्द रसाल ॥१ बीन बेनु मधुर सुर बाजत उपजत तान तरंग। 'रसिक' प्रीतम पिय प्यारे की छबि ऊपर वारों कोटि अनंग ॥ २ ॥ ❀ ६८२ ❀

रथयात्रा (आषाढ़ सुदी २)

❀ राजभोग सरे ❀ रागटोडी ❀ बैठी अटा मानो काम छटा सी सोच करति दृग वारिनि बोरे। जाय कहो कोऊ मेरे भैयासों एते भूपति तैनें काहेकों जोरे ॥ १॥ नंदनंदन ब्रजचंद बिराजे तें देखे तेते कारे अरु गोरे। 'नंददास' सब सजल कहावत हारके काम न आवत ओरे ॥ २ ॥ ❀ ६८३ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ झांझ पखावजसूं ❀ राग टोडी ❀ देवी के द्वार तें निकसी देवी दुलहिन हेरत पिया कौ मग अरबरात मन में। कहां रहे गोविंद गरुडध्वज महाभुज नैननि में प्रान-प्रान तनक न तन में ॥ १ ॥ ऐसे हरि दृष्टि परे परम करुना भरे तारन में चंद जैसे आये मानों छन मैं। 'नन्ददास' प्रभु प्यारी दौरि आय रथ बैठी बिछुरी बिजुरी मानों आय मिली घन में ॥२॥ ❀१८४❀ ❀ पहिले दर्शन में ❀ राग मलार ❀ तुम देखो माई आज नैनभर हरिजू के रथ की सोभा। प्रात समय मानों उदित भयो रवि निरखि नयन अति लोभा ॥१॥ मनिमय जटित साज सरस सब ध्वजा चमर चित चोभा। मदनमोहन पिय मध्य बिराजत मनसिज मन के छोभा ॥ २ ॥ चलत तुरंग चंचल भू

उपर कहा कहूं यह ओभा। आनन्दसिंधु मानों मकर क्रीडत मगन मुदित चित चोभा ॥३॥ यह बिध बनी बनी ब्रजबीथन महियां देत सकल आनंद। 'गोविंद' प्रभु पिय सदा बसो जिय वृंदावन के चंद ॥ ४ ॥ ❀ ६८५ ❀ ❀ भोग आये ❀ राग मलार ❀ देखो देखो नैननि कौ सुख रथ बैठे हरि आज। अग्रज अनुजा सहित स्यामघन सबै मनोरथ साज ॥ १ ॥ हाटक कलसा ध्वजा पताका छत्र चँवर सिर ताज। तुरंग चाल अति चपल चलत हैं देखि पवन मन लाज ॥ २ ॥ सुद अषाढ दोज सुभ दिन पुष्य नच्छत्र संयोग। बनमाला पीतांबर राजत धूप दीप बहु भोग ॥ ३ ॥ गारी देत सबै मन भावत कीरति अगम अपार। 'माधोदास' चरननि को सेवक जगन्नाथ श्रुतिसार ॥ ४ ॥ ❀ ६८६ ❀ राग मलार ❀ रथचढि चलत जसोदा अंगना। विविध सिंगार सकल अंग सोभित मोहत कोटि अनंगा ॥ १ ॥ बालक लीला भाव जनावत किलक हँसत नन्दनन्दन। गरें बिराजत हार कुसुमन के चर्चित चोवा चंदन ॥२॥ अपने-अपने गृह पधरावत सब मिलि ब्रजजुबतीजन। हर्षित अति अरपत सब सर्वसु वारत हैं तन मन धन ॥३॥ सब ब्रज दै सुख आवत घरकों करत आरति ततछन। 'रसिकदास' हरि की यह लीला बसौ हमारे ही मन ॥ ४ ॥ ❀ ६८७ ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज में रथ चढि चलेरी गोपाल। संग लिये गोकुल के लरिका बोलत बचन रसाल ॥१॥ स्रवन सुनत गृह-गृह तें दौरी देखन कों ब्रजबाल। लेत फेरि करि हरि की बलैयाँ वारत कंचन माल ॥ २ ॥ सामग्री लै आवत सीतल लेत हरख नन्दलाल। बांट देत और ग्वालन कों फूले गावत ग्वाल ॥ ३ ॥ जय-जय कार भयो त्रिभुवन में कुसुम बरखत तिहिं काल। देखि-देखि उमगे ब्रजवासी सबै देत करताल ॥ ४ ॥ यह बिधि बन सिंहद्वार जब आवत माय तिलक कर भाल। लै उछंग पधरावत घर में चलत मंदगति चाल ॥ ५ ॥ करि नौछावरि अपने सुत की मुक्ताफल भरि थाल। यह लीला रस 'रसिक' दिवा-

निसि सुमिरत होत निहाल ॥६॥ ❀६८८❀ राग मलार ❀ जसोदा रथ देखन कों आई। देखौरी मेरो लाल गिरेगो कहा करो मेरी माई ॥१॥ मेरो ढोटा पालने सोवे उधरक-उधरक रोवे। अघासुर बकासुर मारे नैन निरंतर जोवे ॥ २ ॥ देहरी उलंघत गिरयोरी मोहन सोई घात मैं जानी। 'परमानन्द' होत तहाँ ठाडे कहत नन्द जू की रानी ॥३॥ ❀६८६❀ दूसरे दर्शन❀ राग मलार❀ रथ बैठे गिरिधारी, तुम देखो सखी। राजत परम मनोहर सब अँग संग राधिका प्यारी ॥ १ ॥ मनिमानिक हीरा कुंदन खचि डांडी चार सँवारी। विधिकर विचित्र रच्यो जो विधाता अपने हाथ सँवारी ॥ २ ॥ गादी सुरंग ताफता की सुंदर फरेवाद छबि न्यारी। छत्र अनुपम हाटक कलसा झूमक लर मुक्तारी ॥ ३ ॥ चपल अश्व दै चलत हँसगति उपजत है छबि न्यारी। दिव्य डोर पचरंग पाट की कर गहि कुंज बिहारी ॥ ४ ॥ विहरत ब्रज-बीथिनि वृंदावन गोपीजन मन ढारी। कुसुम अंजुली बरखत सुर मुनि 'परमानन्द' बलिहारी ॥ ५ ॥ ❀ २६० ❀ भोग आये❀ राग मलार❀ तू मोहि रथ लै बैठरी मैया। इतकी ओर बैठी हैं राधा उतकी ओर बल भैया ॥ १ ॥ गोप सखा सब संग चलि हैं मेरे और गावेंगे गीत। मेरे रथ की सोभा देखत सुख पावेंगे मीत ॥२॥ ब्रजजन भवन-भवन प्रति ठाडी देखनि कों मेरी गाडी। आरती लैके उतारही मो पर ०है-०है मारग आडी ॥३॥ सुनत बचन आनन्द सिंधु हि मगन भई जसोदा माई। 'रसिक' मनोरथ पूरन गोविंद बैकुंठ तजि ब्रज आई ॥ ४ ॥ ❀ ८६१ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे मदन गोपाल अँग-अँग सोभा बरनी न जाई। मोर मुकुट बनमाल बिराजत पीतांबर और तिलक सुहाई ॥ १ ॥ गज मुक्ता की माल कंठ सो है नंदलाल मानों नीलगिरि सुरसरी धसि आई। श्रीवृंदावन भूमि चारू संग सो है राधा नारि मानों घन दामिनी की छबि छाई ॥ २ ॥ बोलें पिक मोर कीर त्रिगुन बहै समीर पुष्प बरखा करें अमरापति आई। 'कुंभनदास' प्रभु

गिरिधरलाल की बानिक पर बलि बलि-बलि जाई ॥ ३ ॥ ❀ ९९२ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ रथ चढि डोलूंगो, मैया मैं। घर-घर तें सब संग खेलनि गोप सखन कों बोलूँगो ॥ १ ॥ मोहि जड़ाय देहु अति सुँदर सगरो साज बनाय। करि सिंगार ता ऊपर मोकों राधा संग बैठाय ॥ २ ॥ घर-घर प्रति हौं जाऊँ खेलन संग लेहु ब्रजबाल। मेवा बहुत मँगाय मोहि दै फल अति बडे रसाल ॥३॥ सुत के बचन सुनत नंदरानी फूली अंग न माय। सब विधि सहित हरि रथ बैठारे देख 'रसिक' बलि जाय ॥ ४ ॥ ❀ ९९३ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ रथ बैठे गोपाल, तुम देखो माई। हीरा मोति पाँति बनी बिच-बिच राजत लाल ॥ १ ॥ बेरख फरहरात कलसान पर अरुन हरित बहुरंग। अतिहि विचित्र रच्यो विस्वकर्मा सोभित चार तुरंग ॥२॥ बालक सब संग के करत कुलाहल भारी। किलकति हँसत दोऊरी मैया मुदित होत गिरिधारी ॥ ३ ॥ खेलन चले सुभग वृंदावन सोभा बरनी न जाई। या छबि पर तन मन धन वारत 'दास' परम निधि पाई ॥४॥ ❀९९४❀ ❀ तीसरे दर्शन ❀राग बिलावल❀ प्रगट प्रेम की फांस परी हरि डौलत दौरे दौरे। सकल देव देखत हैं ठाडे हरि हांकत हैं घोरे ॥ १ ॥ जिहिं कर संख चक्र गदा सोभित और न आयुध थोरे। तिहिं कर चाम चमोठा लीने अरजुन के रथ जोरे ॥ २ ॥ जेई मुख वेद निरंतर बोलत तेई मुख बोलत होरे। यह विधि स्वारथ करत जगद्गुरु जानत नाहीं हम कोरे ॥ ३ ॥ बलि-बलि जाऊं स्यामसुंदर की भक्त वत्सलता भोरे। 'माधौदास' सबै संकट तें दास आपने छोरे ॥ ४ ॥ ❀ ९९५ ❀ भोग आये ❀ रागमलार ❀रथ बैठे गिरिधारी, आज माई। बाम भाग वृषभाननन्दिनी पहरें कसुंभी सारी ॥ १ ॥ तैसोई घन उनयो चहुं दिसि तें गरजत हैं अति भारी। तैसेई दादुर मोर करत रट तैसी भूमि हरियारी ॥ २ ॥ सीतल मंद बहत मलयानिल लागत हैं सुख कारी। नन्दनन्दन की या छबि ऊपर 'गोविंद' जन बलिहारी ॥३॥ ९९६

❀ ९९६ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे नंदलाल, तुम देखो सखी । अति विचित्र पहरें पट झीनो उर सो है बनमाल ॥ १॥ सुंदर रथ मनिजटित मनोहर सुंदर हैं सब साज । सुंदर तुरंग चलत धरनी पर रह्यो घोख सब गाज ॥ २ ॥ ताल पखावज बीन बांसुरी बाजत परम रसाल । 'गोविंद' प्रभु पिय पर बरखत हैं विविध कुसुम ब्रजबाल ॥ ३ ॥ ❀ ९९७ ❀ राग मलार ❀ रथ बैठे ब्रजनाथ, तुम देखो सखी । संकर्षन के संग बिराजत गोपसखा लै साथ ॥ १ ॥ एक ओर राधा जुवती सब छत्र चमर ललिता के हाथ । विविध भाँति श्रीगोवर्द्धनधारी 'कृष्णदास' कियो सनाथ ॥२॥ ❀९९८❀राग मलार❀ रथ चढि जादौपति आवत, देखो माई । मोर मुकुट बनमाल पीतपट नटवर भेष बनावत ॥ १ ॥ गरजत गगन दामिनी दमकत पीत ध्वजा फहरावत । संख चक्र बाजत वेद धुनि सुनि जलधर माथो नावत ॥२॥ नाचत देवमुनी सिव सनकादिक नारद तुंबरु गावत ॥ २ ॥ सकल नैन लोचन-फल दीने 'जन परमानंद' पावत ॥ ३ ॥ ❀ ९९९ ❀ चोथे दर्शन ❀ राग मलार❀ लाल माई खरेई बिराजत आज । रत्न खचित रथ ऊपर बैठे नवल-नवल सब साज ॥ १ ॥ सूथन लाल काछिनी सोभित उर बैजयंतीमाल । माथें मुकुट ओढें पीतांबर अंबुज नयन बिसाल ॥ २ ॥ स्याम अंग आभूषन पहिरें झलकत लोल कपोल । बारबार चितवत सबहि तन बोलत मीठे बोल ॥३॥ यह छबि निरखि-निरखि ब्रजसुंदरि लोचन भरि-भरि लैहो । फिरि-फिरि झांकि-झांकि मुख देखौ रोम-रोम सुख पैहो ॥ ४ ॥ उतरि लाल मंदिर में आये मुरली मधुर बजाय । निरखि निरखि फूलति नन्दरानी मुख चूमत ढिंग आय ॥ ५ ॥ अति सोभित कर लिये आरती करत सिहाय-सिहाय । 'श्रीबिट्ठल' गिरिधरनलाल पर वारत नाही अघाय ॥ ६ ॥ ❀ १००० ❀ ❀ राग मलार ❀ जय श्रीजगन्नाथ हरिदेवा । रथ बैठे प्रभु अधिक बिराजत करें जगत सब सेवा ॥ १ ॥ सनक सनन्दन और ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जुरि

आयें। अपनी-अपनी भेट सबै लै गगन विमाननि छाये ॥२॥ रत्न जटित रथ नीकौ लागत चंचल अश्व लगाये। नर नारी आनन्द भये अति प्रमुदित मंगल गाये ॥ ३ ॥ गारी देत दिवावत अपन पै यह विधि रथ हिंच लाये 'रामराय' गोवर्द्धनवासी नगर उडीसा आये ॥४॥ ❀ १००१ ❀ राग मलार ❀ वा पट पीत की फहरान। कर गहि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरत वह बान ॥ १ ॥ रथतें ऊतरि अवनि आतुर व्है कचरज की लपटान। मानों सिंह सैल तें उतरयो महामत्त गज जान ॥ २ ॥ धन्य गोपाल मेरो प्रन राख्यो मेटि वेद की कान। सोई अब 'सूर' सहाय हमारे प्रगट भये हरि आन ॥ ३ ॥ ❀ १००२ ❀ भोग के दर्शन ❀ तमूरास्वं ❀ राग मलार ❀ आयो आगम नरेस देस-देस में आनन्द भयो मनमथ अपनी सहाय कों बुलायो। मोरन की टेर सुनि कोकिला की कुलाहल तैसोई दादुर हिलमिलि स्वर गायो ॥१॥ छूट्यो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी अंकुस बंकुस दैं दै चपला चलायो। दामिनी ध्वजा पताका फरहरात सोभा भारी गरजि-गरजि धौं-धौं दमामा बजायो ॥ २ ॥ आगें-आगें धाय-धाय बादर बरखत आय ब्यारन की बहुकन ठौर-ठौर छिरकायो। हरी हरी भूमि पर बूढ़न की सोभा बाढी बरन बरन रंग बिछौना बिछायो ॥३॥ बांधे हैं बिरही चोर कीनी है जतन रोर संयोगी साधन सों मिलि अति सचुपायो। 'नन्ददास' प्रभु नंदनंदन को आज्ञाकारी अति सुखकारी ब्रजबासिन मन भायो ॥ ४ ॥ ❀ १००२ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ गाय सब गोवर्द्धनतें आईं। बछरा चरावत श्रीनन्दनन्दन बेनु बजाय बुलाई ॥ १ ॥ घेरी न घिरत गोप-बालकपें अति आतुर ह्वै धाई। बाढी प्रीति मदनमोहन सों दूध की नदी बहाई ॥ २ ॥ निरखि स्वरूप ब्रजराजकुंवर कौ नयनन निरखि निकाई। 'कुंभनदास' प्रभु के सन्मुख ठाडी भई मानों चित्र लिखाई ॥ ३ ॥ ❀ १००४ ❀ शयन दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ सुंदर बदन सदन-सोभा कौ निरखि नयन मन

थाक्यो । हौं ठाडी बीथिनि ह्वै निकस्यो उझकि झरोकन झांक्यो ॥ १ ॥ मोहन एक चतुराई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो। वारौंरी लाज बैरिन भई री मोकों मैं गँमार मुख ढांक्यो ॥ २ ॥ चितवन में कछु करि गयो मोतन मन न रहत क्यों राख्यो । 'सूरदास' प्रभु सर्वस्व लै गये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥३॥ ❀१००५❀ आषाढ सुदी ३ (रथयात्रा के दूसरे दिन) ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ तुम देखौ माई रथ बैठे जदुराय। प्रात समै आवत अलसाने नैननि झुकि झुकि जाँय ॥ १ संख चक्र गदा पद्म बिराजत सुंदरस्याम स्वरूप । स्वेत पिछोरा कुल्हे रही लसि मुक्तामाल अनूप ॥ २ ॥ सीसफूल भाल तिलक बिराजत रवि ससि सम कनफूल । आरति वारत प्रानप्यारे पर 'गिरिधर' जमुना-कूल ॥ ३ ॥ ❀ १००६ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ पावस ऋतु आगम जानि आये निज कुंजसदन नंदनंदन ब्रजनरेस चलत चाल गति गयंद । कटि सोहे आडबंद सीस कुल्हे पहिरें स्वेत मोरपच्छ श्रवननि कुंडल झलकत हैं अति अमंद ॥ १ ॥ द्रुम बेलि हरित भूमि सोभित हैं इन्द्रवधु घन गरजत बूँद परत बहोत पवन मंद । कोकिल पिक करत सोर नाचत मन मुदित मोर 'कृष्णदास' नीके बने राधा अरु ब्रजचंद ॥ २ ॥ ❀ १००७ ❀

कसूँभी छठ (आषाढ़ सुदी ६)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग सूहा ❀ ठाडे रहो अंगना हो पिय जौंलों देह नख-सिख लौं भींजे । न्हाय क्यों न लेहु गगन-पानी डार देहो वसन और पहरो तब गृह-देहरी पाँव दीजे ॥१॥ रैन के चिह्न पिय प्रगट देखियत. ताहि पोंछ सौंह कीजे । 'धोंधी' के प्रभु तुम बहुनायक देह सुधारि मोहि छीजै ॥ २ ॥ ❀ १००८ ❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ षष्ठि-पंडगू फल प्राप्त यज्ञपुरुष पुष्टि–प्रवाह उदय किरन लछमन भट ग्रीषम ऋतु अंत । सुद अषाढ बरखा ऋतु आगम अवनी समाज गोपीजन मंगल गायो

प्रथम समागम राधिका-कंत ॥१॥ नर-नारिन मन आनंद देस-देस में आनंद बन-बेली अति आनंद आदि जीव जंत। 'कृष्नदास' सुजस गायो आनंद ऊर उपजायो श्रुति पुरान गायो सुनत सुख पायो मुनि संत ॥२॥ ❀१००९❀ ❀ राग मल्हार ❀ सुद अषाढ़ षष्ठि-पंडगू पुष्टिपंथ धर्मवीर लछमनभट उदित अंग आनंद उपजायो। धरनीधर भूमिमंडल श्रुति पुरान सास्त्र अर्थ आगम--आचार्य जानि गोपीजन मंगल गायो ॥ १ ॥ ग्रीष्म तपत गयो बरखा ऋतु आगम भयो उबटि अंग पिय प्यारी जगत जनायो। करि सिंगार सुरँग बसन मुक्तामनि भूषन तन प्रथम समागम अबनि कुंज सों मनायो ॥२॥ कोकिल पिक बंदीजन द्विज दादुर प्रगट रूप दाता बिंब विकास रूप घन सम झर लायो। 'नंददास' पूरहिं आस बन बेली हरित भई भरि हैं सरोवर समीर नदी नीर सुहायो ॥३॥ ❀१०१०❀ राग मल्हार ❀ कारी घटा सुखकारी, उमड़ि घुमडि आई। पिय सिर पाग कसूँभी सोभित प्रिया के कसूँभी सारी ॥ १ ॥ भुज अंसनि धरि विहरत डोलत नवल भूमि हरियारी। 'श्रीविट्ठल गिरिधर' दंपति छबि इन्दु-वधू लखि हारी ॥ २ ॥ ❀१०११❀ राग मल्हार ❀ लाल माई बांधे कसूँभी पाग। कसूँभी छड़ी हाथ में लिये भीजि रहे अनुराग ॥ १ ॥ कसूँभोई कटि बन्यो है पिछोरा कसूँभल है उपरैना। कसूँभी बात कहत राधा सों कसूँभे बने दोउ नैना ॥२॥ हरित भूमि यमुना तट ठाड़े गावत राग मल्हार। 'श्री विट्ठल' गिरिधरन छबीलो स्याम घटा उनहार ॥३॥ ❀१०१२❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ नीके आज लागत लाल सुहाये। श्री वृषभाननंदिनी रचि-पचि आभूषन पहिराये ॥ १ ॥ पाग कसूंभी सीस बिराजत मधि लटकन लटकाये। हीरा लाल रतन निरमोलक रचि-पचि पेच बनाये ॥ २ ॥ अलक तिलक लखि आनन की छबि कोटि चंद लजाये। सिंघद्वार ठाड़े पिय मोहन निरखत मो मन भाये ॥ ३ ॥ बलि-बलि जाऊँ मुखारविंद की दरसन

ताप नसाये । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन छबीलो निरखि नैन सुख पाये ॥४॥ ❀१०१३❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ ब्रज पर नीकी आज घटा हो । नेंन्ही-नेंन्ही बूँद सुहावनी लागें चमकत बीजु छटा हो ॥ १ ॥ गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा हो । तैसोई सुर गावत चातकपिक प्रगट्यो है मदन भटा हो ॥ २ ॥ सब मिलि भेट देत नंदलाल हिं बैठे ऊँची अटा हो । 'कुंभनदास' गिरिधरनलाल सिर कुसूँभी पीत पटा हो ॥३॥❀१०१४❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ देखौ सखि ठाडे नंदकिसोर । गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर तैसेई नाचत मोर ॥ १ ॥ लाल पाग सिर सुभग लाल के लाल लकुटिया हाथ । लाल रतन सिरपेच बनी छबि मोतिन की लर माथ ॥२॥ लालन के आभूषन अंग-अंग पीत बसन फहरात । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन छबीले स्याम सलोने गात ॥ ३ ॥ ❀ १०१५ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग मल्हार ❀ भवन मेरो कैसो लागत नीको । जबहिं लाल आवत यह मंदिर खरौ भावतो जीको ॥ १ ॥ कसुंभी पाग खुभि रही नीकी विकसित नंदकिसोर । तैसीय स्याम घटा जुरि आई अरु बोलत बन मोर ॥ ॥ २ ॥ ता दिन विधिना भली बनाई अकेली ही घर मांझ । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलाल सौं बातन ही भई सांझ ॥३॥ ❀ १०१६ ❀ शयन दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ कुंज महल के आँगन मध्य पिय-प्यारी बाँह जोटी फिरत रंग सों रगमगे । अरुन बसन तन मोतिनि की माला गरें चिहुँटे सरीर चीर नीर सों सगवगे ॥ १ ॥ छूटे बार भींजन लागे ललित कपोलनि सों कुंडल किरन नग भूषन झगमगे । 'नागरीदास' घन बरखत पानी तामें रूप के जहाज मानों डोलत डगमगे ॥ २ ॥ ❀ १०१७ ❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ रंग महल ठाढे पिय पाछें प्यारी दोऊन की छबि रही मो जिय अटकि अटकी । इन के कसूँभी सारी लहंगा री सोहे भारी उनके सिर लागि पाग रही लटकि-लटकी ॥ कोकिला करत

गान मधुर सुर लेत तान वारत व्रजबधूप्रान व्रीडा पटक-पटकी। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सरवसु लै चाख्यो गटक गटकी ॥२॥❀१०१८❀

❀ राग मल्हार ❀ पहिरें कसूंभी सारी बैठे पिय संग प्यारी भूमि हरियारी तामे इन्द्रवधू सोहै। पियके निकट ठाडी कंचुकी अंग गाढी बाल मृग लोचनी देखत मन मोहे ॥ १ ॥ तैसीय पावस ऋतु तैसेई उनए घन तैसीय बानिक बनी उपमा कों को है। 'कुंभनदास' स्वामिनी विचित्र राधे भामिनी गिरिधर पिय एकटक मुख जोहैं ॥ २ ॥ १०१९ ❀

देवशयनी (आषाढ सुदी ११)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ रूप-सरोवर साजे, देखो माई। व्रज बनिता वर बारी-वृंद में श्री व्रजराज बिराजे ॥ १ ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोले। कुच चक्रवाक विलोकि बदन विधु बिछुर रहे बिन बोले ॥ २ ॥ मुक्तामाल बगपाँति मनोहर करत कुलाहल कूल। सारस हंस चकोर मोर सुक वैजयंति समतूल ॥३॥ कनक कपिस निचोल विविध रंग विरह व्यथा विसरावे। 'सूरदास' आनंद-सिंधु की सोभा कहत न आवे ॥ ४ ॥ ❀ १०२० ❀ राग मल्हार ❀ प्रसन्न भये हो लाल दियो दरसन जैसी हौं तरसत तैसी सोतैं लागी तरसन। अंग लाग्यो सरसन मन लाग्यो परसन पाव लाग्यो तरसन तू घन नीको लाग्यो बरसन ॥ १ ॥ ना मैं जानों अरचन ना मैं जानों चरचन अपने प्रीतम की सेवा करी परसन। 'तानसेन' के पिय ऐसे मिल बैठे जैसे संभू कों गौरी मिलि हुलसन ॥ २ ॥ ❀१०२१❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सजल जलद बादल दल देखियत भलेई लाल आये मेरे सदन। तैसीय कोयल कारी बन घन ठौरा ठारी तैसीय दामिनी लगी गगन रमन ॥ १ ॥ भले ही पिया जु आये चारु लोचन मिले हैं सोतिन के स्तन पर लगे हैं झरावरि। 'स्यामसाहि' के प्रभु तुम बहुनायक बारि फेरि डारों पिय आज की आवनि पर ॥२॥ ❀१०२२❀

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ आई जू स्याम जलद घटा, ओल्हर चहुँ-दिसि तें घनघोर। दंपति अति रस रंग भरे बांह जोटी फिरत कुसुम बीनत कालिंदी तटा ॥ १ ॥ न्हेंनी न्हेंनी बूंदनि बरखन लाग्यो तेसीय चमकत बीजु छटा। 'गोविंद' प्रभु पिय प्यारी उठि चलि ओढें लाल पट दौरि लियो जाय बंसीबटा ॥२॥ ❀ १०२३ ❀ भोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ स्याम घटा जुरि आईं, ब्रज पर। तेसीय दामिनी चहुँदिसि कोंधत लेत तरंग सुहाई ॥ १ ॥ सघन छाँह कोकिला कूजत चलत पवन सुखदाई। गुंजत अलिगन सघन कुंज में सौरभ की अधिकाई ॥१॥ विकसित स्वेत पांति वगलनि की जलधर सीतलताई। नव नागर गिरिधरन छबीलौ'कृष्णदास' बलिजाई ॥ ३ ॥ ❀ १०२४ ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ राधे रूप की घटा पोषत चातक मदन गोपालें। दामिनी वारौं दसननि ऊपर छुटी अलकन पर धुरवा वारौं बग पंगति मुक्ता मालें ॥ १ ॥ इंद्र धनुस पचरंग सारी पर वारि डारौं और जावक पर बूढन लाल । 'जन भगवान' मदन मोहन पर तन मन पिक वारौं सुनि-सुनि बचन रसाल ॥ २ ॥ ❀१०२५❀ ❀ मान पोढवे में ❀ राग मल्हार ❀ कौन करै पटतर,तेरी गुन रूप रासि हो राधा प्यारी । श्रिया प्रभृति जेती जग जुवती वारि फेरि डारौं तेरे रूप पर ॥१॥ राग मल्हार अलापति सकल कला गुन प्रवीन हेरी तू सुघर। 'गोविंद' प्रभु कौं तू न्यायन वस करि कहत भलें जु भलें व्रजराजकुँवर ॥ २ ॥ ❀ १०२६ ❀ राम मल्हार ❀ सघन घटा घनघोर न्हेंनी-न्हेंनी बूंदनि हो पिय बरसे। चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तेसीय कनक चित्रसारी तामें पौढे पिय प्यारी तेसीय दामिनी अति हरसे ॥ १ ॥ तैसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे । 'गोबिंद' प्रभु सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अब हीं सरसे ॥ ३ ॥ ❀ १०२७ ❀

आषाढ़ी पून्यो (आषाढ़ सुदी १५)

❀मंगलादर्शन❀राग मलार❀ हों जगाई माई बोलि-बोलि इन मोरा । बरखत मेह अँधियारी चौमासे की कैसे मिलों नन्दकिसोरा ॥१॥ सेज अकेली और दामिनी कोंधति घन गरजत चहुं ओरा । 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर मोही मेरो मन नहिं मो कोरा ॥ २ ॥ ❀ १०२८ ❀ शृङ्गार ओसरा ❀ राग मलार❀ एरी माई घन मृदंग रस भेद सों बाजत नाचत, चपला चंचल गति । कोकिला अलापत पपैया उरपि लेत मोर सुघट सुर साजत ॥१॥ दादुर तार धार ध्वनि सुनियत रुनझुन रुनझुन पर बाजत । 'तानसेन' के प्रभु तुम बहुनायक कुंज महल दोऊ राजत ॥ २ ॥ ❀ १०२९ ❀ राग गौड मलार ❀ बाजत मृदंग उघटित सुधंग तक्कझं तक्कझं धुमकिटता धुमकिट धुमकिट धिलांग तक । द्रगदां-द्रगदां धिन्न दाना जगन रटत झौंत झौं झौंत ॥१॥ गत बादर गरज घन दामिनि लरज अलाप लेत खरज होत अनुपम तरज । 'कृष्णदास' प्रभु पास पूरन भई आस नृत्य करत सों विलास थोंदिग थोंदिग तक थोंदिग–थोंदिग तक थुंग तक थुंग तक ॥ २ ॥ १०३० ॥ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मलार ❀ नाचत लाल त्रिभंगी, रस भरे तैसेई नाचत मोर । जैसी जैसी धुनि मुरली बाजत तैसे तैसे घन गरजत मुरज बजावत री मानो मघवा मृदंगी ॥ १ ॥ सप्त सुरनि लै अलाप गावत तान बंधान मूर्च्छना सुर देत मधुप उमंगी । 'सूरदास' मदनमोहन जानेजु मुकुट मनी उघटत सप्त भेद तान तरंगी ॥२॥ ❀१०३१❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मलार ❀ वृंदावन भुवि कुँदादिकयुत मंदानिल रुचिरे ॥ ध्रु० ॥ पुलिनोदित नवनलिनोदर मिलदलिनोदितरसगाने । कर्णादिक पुट चरणांबुज ध्वनि चारु हरिणाक्षि वलिते ॥ १ ॥ निजरसमयताप्रकटन परितः प्रकटित रास बिहारे । गिरिधारण रतिहारण कारण मम रतिरस्तु सदारे ॥ २ ॥ ❀ १०३२ ❀ राग मलार ❀ नागर नंदलाल कुँवर मोरनि संग नाचे । कटितट पट किंकिनी कल नूपुर रुनझुन करे नृत्य करत चपल

चरन पात घात सांचे ॥ १ ॥ उदित मुदित सघन गगन घोरत घन दैं दैं भेद कोकिला कलगान करत पंचमस्वर बांचे। 'छीतस्वामी' गोवर्द्धननाथ साथ विहरत वर विलास वृंदावन प्रेमवास याचें ॥ २ ॥ ❀ १०३३ ❀ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मलार ❀ इनि मोरनि की भांति देख नाचे गोपाला। मिलवत गति भेद नीके मोहन नट-साला ॥ १ ॥ गरजत घन मंद मंद दामिनी दरसावे। रमक झमक बूंद परे राग मल्हार गावे ॥२॥ चातक पिक सघन कुंज बारबार कूजे। वृन्दावन कुसुमलता चरनकमल पूजे ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवे। वारि फेरि भक्ति उचित 'परमानंद' पावे ॥ ४ ॥ ❀ १०३४ ❀ संध्या समय ❀ राग मलार ❀ नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहि रिझावत। तैसोई कोकिला अलापत पपैया सब्द देत तैसै मेघ गरज मृदंग बजावत ॥ १ ॥ तैसोई वृंदावन तैसी है हरित भूमि तैसी ब्रजबधू हिलमिलि स्वर गावत। 'विचित्र बिहारी' जूकी या छबि ऊपर तन मन धन सब वारत ॥२॥ ❀ १०३५ ❀ शयन दर्शन ❀राग मलार ❀ माईरी स्यामघन तन दामिनी दमकत पीतांबर फरहरे। मुक्तामाल बगजाल कहि न परत छबि विसाल मानिनी की अर हरे ॥१॥ मोर मुकुट इन्द्र-धनुस सो सुभग सोहत मोहत मानिनी द्युति थरहरे। 'कृष्णजीवन' प्रभु पुरंदर की सोभानिधान मुरलिका की घोर घरहरे ॥२॥ ❀ १०३६ ❀ ❀मान ❀ ❀ राग मल्हार ❀प्यारी के गावत कोकिला मुख मूंदि रहे पिय के गावत खग नैना मूंदि रहे सब। नागरी के रस गिरिधरन रसिकवर मुरली मल्हार राग अलाप्यो मधुरे जब ॥१॥ दंपति तान सुनत ललितादिक वारति है तनमन फेरत हैं अंचल तब। 'चतुर्भुज' प्रभु को निरखि सुख दंपति कहत कहांधौं कीजे रहिरी भवन अब ॥२॥ ❀ १०३७ ❀

हिंडोरा (श्रावण वदी १)

❀ हिंडोरा बिराजे वा दिन ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग मलार ❀ जहाँ तहां बोलत

मोर सुहाये। श्रावन रमन भवन वृंदावन घोर घोर घन आये ॥१॥ नेंन्ही नेंन्ही बूंदन बरखन लाग्यौ ब्रज मंडल पे छाये। 'नंददास' प्रभु संग सखा लियें कुंजन मुरली बजाये ॥२॥ ❀ १०३८ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ गोपाल माई फेरत हैं चकडोरि। लरिका पांच-सात संग लीने निपट सांकरीखोरि ॥१॥ चढ़ि घर हौं री झरोखा चितयो सखी लियो मन चोरि। बांए हाथ बलैया लीनी अपनो अंचल छोरि ॥२॥ चारों नयन मिले जब सन्मुख रसिक हँसे मुख मोरि। 'परमानंददास' रति नागर चितै लई रति जोरि ॥३॥ ❀ १०३९ ❀ राग मलार ❀ लाल सिर फबी कसुंभी पाग। वाही रंग रगमगी सारी बनाय के अनुराग ॥१॥ अचरज एक लगत हैं प्यारी कही समुझत बैंन। तुम प्रसन्न उत मान वे ते चँवर दुरत छबि रैंन ॥२॥ कोमल यह सुभाव तियन को सोचत माँझ समात। यह सुभाव इनको सावन ये अलट-पलट को जात ॥ ३॥ सघन घटा वर बरस रही रस प्रगट्यो स्याम अमोल। 'द्वारिकेस' प्रभु कमल-रसके झूले आज हिंडोल ॥४॥ ❀१०४०❀ ❀ संध्या आरती भीतर होय तब नित्य हिंडोरा विजय तक संध्या में ❀ राग गौरी ❀ लटकत चलत जुवती-सुखदानी। संध्या समै सखा मंडल में सोभित तन गौरज लपटानी ॥१॥ मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली गुंजत मृदुबानी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधारी आये बन तैं लै आरती वारति नंदरानी ॥२॥❀१०४१❀ हिंडोरा में भोग आये पे❀ ❀ राग धनाश्री ❀ साखी—रोप्यौ हिंडोरा नंदगृह महूरत सुभ घरी देखि। विश्वकर्मा रचि पचि गढ्यो सुहाटक रत्न विसेखि ॥ १ ॥ चाल—हिंडोरना हो मनिमय भूमि सुवास। हिंडोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार। हिंडोरना हो कंचन खंभ सुढार ॥ छंद—कंचन खंभ सुढार दांडी साल भमरा फबि रहे। हीरा पिरोजा कनक मनिमय जोति अति जगमग रहे ॥ चित्र फटक प्रकास चहुँ दिसि कहा कहौं निरमोलना। कहै 'कृष्णदास' विलास

निसिदिन नंदभवन हिंडोरना ॥ १ ॥ साखी—सोलह सहस्र ब्रजसुंदरी निरखति स्याम सुभाय। अति आनंदे हुलसि के जुवजन हिलमिल गाय ॥ चाल—हिंडोरना हो जुवजन हिलमिल गाय। हिंडोरना हो आनंद उर न समाय ॥ हिंडोरना हो निरखत नयन निहार। हिंडोरना हो सोलह सहस्र ब्रजनार ॥ छंद—सोलह सहस्र सब जुरि के आईं फिरि न उलटि भवन गई। नव-नेह नयन-कुरंग राची अच्युत तनमनमय भई ॥ पीत लहँगा लाल चूनरी स्याम कंचुकी बांहि। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन जुवजन हिलमिल गाँहि॥२॥ साखी—रुनक झुनक नूपुर बजें किंकिनी कनित रसाल। परम चतुर बनवारी हैं झुलवत सुंदरि नारि ॥ चाल—हिंडोरना हो झुलवत सुंदर नारि। हिंडोरना हो परम चतुर बनवारि ॥ हिंडोरना हो रमकन झमक विसाल। हिंडोरना हो किंकिनी कनित रसाल ॥ छंद—कनित किंकिनी रुनत नूपुर जटित तरौना सोहहीं। उर उड़त अंचल मदन बेरख देखि गिरिधर मोहहीं ॥ खसित फूलजो सिथिल बेंनी गुप्त प्रगट विहार। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन झुलवत सुंदर नारि ॥३॥ साखी—गावत सुघर रस भेद सों तान-मान बंधान। रीझि देति वृषभानुजा हरिगुन सकल निधान ॥ चाल—हिंडोरना हो हरिगुन सकल निधान। हिंडोरना हो श्रीराधाजू परम सुजान॥ हिंडोरना हो गावत सुघर समाज। हिंडोरना हो मुरली मधुर धुनि बाज ॥ छंद—ताल मुरली बीन बाजे लालगिरिधर गावहीं। हरषि सुरपति कुसुम बरषे नभ-निसान बजावहीं ॥ हरषि के कर देत तारी अति प्रकासित गान। कहैं 'कृष्णदास' विलास निसिदिन हरिगुन सकल निधान ॥४॥ साखी—सहज गोपाल नट भेष ही सब ब्रज देखनि आई। जो सुख गोकुल में लहे सो सुख बकुंठ नाहीं ॥ हिंडोरना हो यह सुख गोकुल मांही। हिंडोरना हो यह सुख वैकुंठ नाहीं ॥ हिंडोरना हो सहज गोप नट भेष। हिंडोरना हो सबहि नयन भरि देख ॥ छंद—नैन निरखत बैन मीठे मैन

कोटिक वारहीं। भुज भरें सुंदरि हरें हरि मन कहत कछुअन आवहीं॥ स्यामसुंदर भक्तवत्सल लालगिरिधर जहाँ हैं। कहै 'कृष्णदास' विलास निसिदिन यह सुख गोकुल मां है॥ साखी—श्री जमुनातट संकेत वट निसि-दिन यह विलास। कुंज सदन गिरिवरधरन हृदय बसौ 'कृष्णदास'॥ ❀१०४२❀ राग जैतश्री ❀ दंपति झूलत सुरंग हिंडोरे। गौर स्याम तन अति छबि राजत जानों घनदामिनी ऊनिहोरे॥१॥ विद्रुम खंभ जटित नग पटुली कनक दांड़ी सोभा देत चहुं ओरे। 'गोविंद' प्रभु कों देखि ललितादिक हर्षि हँसति सब नवल किसोरे॥२॥ ❀१०४३❀ भोग सरे भीतर झूले तब ❀राग जैतश्री❀ माई झूले हैं कुँवरि गोपरायन की मध्य राधा सुंदर सुकुमारि॥ ध्रु०॥ प्रथम ही ऋतु पायस आरंभ। श्रीवृषभान मँगाये खंभ॥ काढि भवन तें रतन अमोल। रचि-पचि रुचिर रच्यो है हिंडोल॥ १॥ एक तें एक सरस सुकुमारि। मानों रची विधि कुंकुमगारि॥ जगमगात नव जोबन जोति। निरखि नयन चकचौंधी होति॥ २॥ बरन-बरन चूनरी सुरंग। फबी लौने सोने से अंग॥ राजत मनि आभरन रमनीय। जुही गुही कबरी कमनीय॥ ॥ ३॥ गावत सुघर सरस सुर गीत। दुलरावत मनमोहन मीत॥ प्रेम विवस भई सकत न गाय। उमग्यो है आनंद उर न समाय॥ ४॥ दुरि देखत गोकुल के राय। सोभा निरखत मन न अघाय॥ मुदित 'गदाधर' नंदकिसोर। लोचन भये भरे के चोर॥ ५॥ ❀ १०४४ ❀ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ झूलनि आईं व्रजनारि गिरिधरनलाल जू के सुरंग हिंडोरना। सुभग कंचन तन पहिरें कसूँभी सारी गावत परस्पर हँसि मृदु बोलना॥ १॥ इत नंदलाल रसिकवर सुंदर उत वृषभानु-सुता छबि सोहना। रमकत रंग रह्यो पिय प्यारी 'गोविंद' बलि बलि रतिपति जोहना॥ २॥ ❀ १०४५ ❀ राग मल्हार ❀ माई तैसोई वृंदावन तैसीये हरित भूमि तैसिये वीरवधू चलत सुहाई माई। तैसेई कोकिला कल कुहू

कुहू कूजत तैसेई नाचत मोर निरखत नयनां सुखदाई ॥ १ ॥ तैसी ही नवरंग नवरंग बनी जोरी तेसेई गावत राग मल्हार तान मन भाई। 'गोबिंद' प्रभु सुरंग हिंडोरे झूलें फूलें आछे रंग भरे चहुँदिसि तें घटा जुरि आई ॥ २ ॥ ❀ १०४६ ❀ राग मल्हार ❀ रंग मच्यो सिंघद्वार हिंडोरे ऽब झूलना। गौर स्याम तन नील पीत पट घन दामिनी हेम बिराजत निरखि निरखि ब्रजजन मन फूलना ॥ १ ॥ उर पर बनमाल सोहै इंद्र धनुष मानों उदित भयो मोतिनि हार बग पंगति समतूलना। बरखत नव रूप वारि घोख अवनि रत्न खचित 'गोविंद' प्रभु निरखि कोटि मदन भूलना ॥ २ ॥ ❀ १०४७ ❀ राग मल्हार ❀ झूलंत सुरंग हिंडोरे राधा मोहन। बरन बरन चूनरी पहिरें ब्रजबधू चहुंओरें ॥ १ ॥ राग मल्हार अलापत सप्त सुरन तीन ग्राम जोरें । मदनमोहन जू की या छबि ऊपर 'गोविंद' बलि तृन तोरें ॥ २ ॥ ❀ १०४८ ❀ शयन दर्शन ❀ तमूरासूं ❀ ❀ राग ईमन ❀ सैन काम की लायो सो सावन आयो। चलि सखी झूलिये सुरत हिंडोरे कीजै स्याम मन भायो ॥ १ ॥ हाव भाव के खंभ मनोहर कच घन गगन सुहायो । काम-नृपति वृषभानुनंदिनी रसिकराय वर पायो ॥ २ ॥ ❀ १०४९ ❀

दुहेरामंडान, उत्सव श्रीबालकृष्णलालजी को (श्रावन बदी १३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ बोले माई गोवर्द्धन पर मुरवा। तैसीये स्याम घन मुरली बजाई तैसे ही उठे झुकि धुरवा ॥ १ ॥ बडी बडी बूंदनि बरखनि लाग्यो पवन चलत अति झुरवा। 'सूरदास' प्रभु तुम्हारे मिलनि कों निसि जागत भयो भूरवा ॥ २ ॥ ❀ १०५० ❀ राजभोग सरे ❀ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री बालकृष्ण सुजान। भक्त मन आनंद भयो अति सुंदर रूप निधान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठल के महा महोत्सव बाजत भेरि निसान। बांधी वंदनबार तिहूँ मिलि करत जुवती जन गान ॥ २ ॥ श्रीविट्ठल तब

महा मुदित मन देत ही विप्रनि दान। आसीरवाद पढत द्विजवर बंदीजन करत बखान ॥ ३ ॥ बने विसाल दृग चंचल लोचन मनहु मदन के बान। मृदुल सुभाव मनोहर मूरति श्रीवल्लभकुल के भान ॥ ४ ॥ रुक्मिनी माय परम सुखदायक निजजन जीवन प्रान। 'केसौदास' प्रभुके गुन गावत गावत वेद पुरान ॥५॥ ❀ १०५१ ❀ राग मारंग ❀ भयो श्री विट्ठल के मन मोद। पूरन ब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धाय लिये जब गोद ॥ बारंबार बिधु वदन विलोकत फूले अंग न समाय। बाल दसा की सहज माधुरी अचवत दृग न अघाय ॥ २ ॥ यह सुख देखें ही बनि आवैं जानो रसिक सुजान। दोऊ ओर सत सोभा बाढी 'विष्णुदास' के प्रान ॥ ३ ॥ ❀ १०५२ ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सावन दूल्है आयो, देखो माई। सीस सेहरो सरस गज मुक्ता हीरा बहुत जरायो ॥ १ ॥ लाल पिछौरा सोहै सुंदर सोवत मदन जगायो। तैसीये वृषभाननंदनी ललिता मंगल गायो ॥२॥ दादुर मोर पपैया बोलत बदरा बराती आयो। 'सूरदास' प्रभु तिहारे दरस कों दामिनि दरस दिखायो ॥ ३ ॥ ❀ १०५३ ❀ राग मलार ❀ रंग महल रंग राग, तहाँ बैठे दुल्है लाल तू चलि चतुर रंगीली राधा। अति बिचित्र कियो साज तोसों रंग रहेगो आज तैसेई दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम बाग ॥१॥ नव सत अंग साजैं पहिरे कसूँभी सारी तापर रीझे लाल बीच बीच सोंधे दाग। दूती के बचन सुनि उठि चली पिय पें यह छबि निरखि गावे 'नंददास' बडभाग ॥ २ ॥ ❀ १०५४ ❀ संध्या समय ❀ चौंकडा ❀ हेम हिंडोरना माई ए हरि प्यारे के संग ॥ ध्रुव० ॥ कनक खंभ ये चार दांडी नग लगे हैं लाल। चुनी चित्र मयार मरुबे बन्यो है परम रसाल ॥ ॥ टेक ॥ भमरा पिरोजा पांति पटुली लगे हैं रतन विसाल। नव झूलें झूलै नागरी हो नवल श्री नंदजू कौ लाल ॥ १ ॥ सजल जलधर घूमरे धुरवा धसे हैं चहुँओर। चपला चहुँदिसि चमकहीं हो दादुरा घनघोर॥टेक॥

कोकिला अलि कूक कूजत रटत चातक मोर। पवन राग मलार रस बस कीने श्री नंदकिसोर ॥ २ ॥ हरित भूमि सुदेस बादर भरे हैं कमल सुरंग। हंस सारस बतक बगुला लीने हैं बालक संग ॥ टेक ॥ चकवा चकई कहाँ लौं तहाँ बने हैं विविध विहंग। सरस सरोवर निरखि के मानो लज्जित कोटि अनंग ॥ ३ ॥ सुभ जुवती भार जोबन चलत चाल मराल। चंद-बदनी लंक केहरि मृगनैन विसाल ॥ टेक ॥ सिंगार सोलहो साजिकें हो बनि चली ब्रजबाल। मनु हो कृष्ण-कुरंग के संग मुदित है मृगमाल ॥४॥ चहूंओर चम्पो मोगरो मरुवो चमेली जाय। बेल बकुल गुलाब को जो मालती महेकाय ॥ टेक ॥ केतकी करन कुंदी रस रहे भँवर भुलाय। श्री जगन्नाथ विलास 'माधौ' रहे हैं रुचि पाय ॥ ५ ॥ ❀१०५५❀ चौकड़ा ❀

रसिक हिंडोरना माई झूलत मदनगोपाल ॥ ध्रुव० ॥ हरि हिंडोरो ही रच्यो कुंजन जमुना कूल। तहाँ बेल चम्पो मोरियो केवरो अरु बहु फूल ॥ निरखि सोभा थकि रह्यो मिटि गयो मन को सूल। तुव लाज खुभी चित्र विचित्र नयन दिये हैं दुकूल ॥ १ ॥ रत्न जटित के खंभ दोऊ लगे प्रवाल ही लाल। कंचन को मरुवा बन्यो पटुली जु परम रसाल ॥ तन कसूंभी चीर पहिरे आईं सब ब्रजबाल। अंग-अंग सजि नवसत भामिनी दियें तिलक सुभाल ॥ २ ॥ गोपी जू हरि संग झूलहिं आनंद सुख के बोल। वक्र भ्रौंह लगायें बेसर मुखहि भरें तमोल ॥ स्यामसुंदर निकसि ठाडे अपने अपने टोल। गावत राग मल्हार दोऊ मिलि देत हिंडोल झकोल ॥३॥ धन्य–धन्य गोपी सुफल जीवन करत हरि संग केलि। कृष्ण-कृष्ण कहि-कहि नाम बोलत देत हैं रंगरेलि ॥ चिरजियो सखी मदनमोहन फले जसोदा बेलि। 'परमानंद' नंदनंदन चरन निज चित्त मेलि ॥ ४ ॥ ❀ १०५६ ❀

❀ हिंडोरा के दर्शन ❀राग मल्हार❀ हिंडोरें ऽब झूलत हैं लाल दुलहा दुलहिनि, बिहारी बर ललना। गौर स्याम तन अति द्युति भाँति भाँति, ए बिहारी

बर ललना ॥ १ नीलांबर पीतांबर की छबि चलत धुजा फहरात, बिहारी बर ललना। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ए बिहारी वर ललना॥२॥

❀ १०५७ ❀ राग मल्हार ❀ ए दोऊ रीझे भीजे झूलत रस रंग हिंडोरे ।ध्रु.।
नेह खंभ दांडी चतुरायो हाव भाव मरुवे बेलन चौंप पटली अनूप भाव कटाच्छ रमक चित्त चोरे। रस उन्नत रस बरखत मंद गरज हँसनि किलक दसनि चमक चपला हुलास पवन झकझोरें ॥१॥ क्वनित वलय नूपुर मानों बिहंग बोलें। 'जगन्नाथ' प्रभु दंपति जात काम रस भोरें ॥२॥ ❀१०५८❀
❀ राग मल्हार ❀ झूलत दुल्हे दुलहिन संग लिये झुलावत हैं रंगीली नारी। सो है सिर सेहरो नवल नयो नेहरो ठाठ जोरे बैठे दोऊ सोभा लागत भारी ॥१॥ केसरी धोवती उपरैना सो है केसर भीनी सारी। पिय 'बिहारीलाल' निरखि सुख दंपति गावत मल्हार राग रंग रह्यो भारी॥२॥

❀ १०५९ ❀ ❀ राग मल्हार ❀ स्यामा जू दुलहनि दुल है हो रसिकवर रमकि-रमकि दोऊ झूलत रस भरे। गोपीसब चहुँओर झोटा देति हँसि-हँसि सोभा देखि सुर मुनि थकित चहल परे॥ १ ॥ वृषभानुनंदिनी कों झुलवत व्याप्यो है उर तिहिं छिनु उर लाय लजाय नैना ढर। देखिकें गई मटक सेहरो गयो लटकि उरझि परे मोती छूटी कलीसी जो लर॥२॥ ललिता निरवारि वे कों गहि कर राख्यो झोटा तरल भये वार भूषन झरे। तन मन धन वारौं पल न विसारौं लाल ऐसी सोभा देखि 'सूरदास' द्रगनि अरे ॥ ३ ॥ ❀ १०६० ❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ नवल लाल कौ सेहरो, जगमग रह्यो मेरी माइ। दुलहिन नवल किसोरी, दुल है स्याम कन्हाइ॥ कुंज महल में हिंडोरना, बांध्यो परम सुहाइ। झुलवत हैं सब सहचरी झुंडनि-झुंडनि आइ॥ २ ॥ बोलत मोर पपैया दादुर सब्द सुहाइ। यह सुख सोभा निरखत 'दास रसिक' बलिजाइ॥३॥ ❀१०६१❀
❀ राग केदारो ❀ औल्हर आई हो घन घटा हिंडोरे झूलत है स्यामा स्याम।

कंचनखंभ जटित दांडी पटरी लर मरुवा री पीतबसन फरहरात भृकुटी जीते कोटि काम ॥ १ ॥ बनी है अद्भुत जोरी उपमा कों दीजे कोरी झोटा देति सब मिलि ब्रज की बाम । आनंद बाढ्यो ठौर-ठौर नाचत हैं मोरी-मोर यह सुख निरखि-निरखि 'सूर' पायो है सुखधाम ॥ २ ॥ ❀ १०६२ ❀

हरियारी अमावास्या (श्रावण वदी ३०)

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ सखीरी हरियारो सावन आयो । हरे हरे मोर फिरत मोहन संग हरे बसन मन भायो ॥ १ ॥ हरी हरी मुरली हरि सँग राधे हरी भूमि सुखदाई । हरे हरे बसन राजत द्रुम बेली हरी-हरी पाग सुहाई ॥ २ ॥ हरी-हरी सारी सखी सब पहिरें चोली हरी रंग भीनी । 'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है तन मन धन सब दीनी ॥ ३ ॥ ❀ १०६३ ❀ राग मलहार ❀ यह पावसऋतु आई न्हेंनी-न्हेंनी बूंदनि बरखत रिमझिम पवन चलत पुरवाई ॥ १ ॥ हरी भूमि पर अरुन देखियत दामिनी अति दरसाई । तैसेई चातक रटत श्रवन सुनि विकल होत अधिकाई ॥२॥ करि विचार सबैं मिलि सजनी यह निश्चय ठहराई । 'श्रीविट्ठल' गिरिधरनलाल कों मिलहिं कुंज बन जाई ॥३॥ ❀१०६४❀ ❀राग मल्हार❀ देखो माई हरियारो सावन आयो । हरयो टिपारो सीस बिराजत काछ हरी मन भायो ॥ १ ॥ हरि मुरली है हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई । हरी-हरी बन राजत द्रुम बेली नृत्यत कुंवर कन्हाई ॥ २ ॥ हरी हरी सारी सखिजन पहिरें चोली हरी रंग भीनी । 'रसिक' प्रीतम मन हरित भयो है सर्वस्व न्यौछावर कीनी ॥ ३ ॥ ❀ १०६५ ❀ राग मल्हार ❀ हरयो टिपारो सीस बिराजत हरी ही काछनी कटि हरे हरे नृत्य करें जमुना के कूलें । झलक रही चंद्रिका लहलहात हरे हरे हरो ही सिंगार राधा नाहिंन समतूले ॥ १ हरयो ही कुंज भवन हरी हरी द्रुम बेली हरे ही सुर अलापत मन फूले री । गिरिवरधर 'रसिकराय' देखत नैन अघाय इंद्रादिक ब्रह्मादिक

सिव समाधि भूले री ॥ २ ॥ ❀ १०६६ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ सीस टिपारो धरें मल्लकाछ उर गजमोतिन माल। तापर तीन चंद्रिका राजत सोभित हैं नंदलाल ॥ १ ॥ नकबेसर झलकनि कुंडल की मृगमद तिलक सुभाल। कहा कहौं अंग-अंग की माधुरी अंबुज नैन विसाल ॥२॥ भोरहि उठि जात दधि बेचन मैं देखे नंदद्वार। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर चित्त चोरयो एकटकी लागी तन रही न संभार ॥ ३ ॥ ❀ १०६७ ❀ राग महार ❀ मदनमोहन बन देखत अखारौ रंग। सुलप संचगति बरहा नृत्य करें कोकिला कुहू कुहू तान तरंग ॥ १ ॥ उघटत सब्द पपैया पीउ–पीउ करें मधु व्रत गुंज मानों सरस उपंग। 'गोविंद' प्रभु रीझे सकल सभा सहित जलधर सुघर बजावत मृदंग ॥ २ ॥ ❀ १०६८ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ पावस नट नट्यो अखारौ वृंदावन अवनी रंग। नृत्यत गुनरासि बरहा पपैया सब्द उघटत और कोकिला कल गावत तान–तरंग ॥ १ ॥ जलधर तहाँ मंद मंद सुलप संचगति भेद उरपि तिरपि मानु लेत सरस मृदंग। 'गोविंद' प्रभु गोवर्द्धन सिंहासन पर बैठे सुरभी सखा सभा मध्य रीझे वह ललित त्रिभंग ॥ २ ॥ ❀ १०६९ ❀ हिंडोरे दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ झूलै माई गोकुलचंद हिंडोरे नटवर भेष कियें। सोभित तीन चंद्रिका माथे मुरली कर जु लियें ॥ १ ॥ कसूँभी पाग सुरंग पिछोरा मुक्ता माल हियें। रमकि-रमकि झूलत राधा संग ब्रजजन सुखहि दियें ॥ १ ॥ निरखि-निरखि फूलत जुवती जन यह सुख नयन पियें। 'श्रीविट्ठल' गिरिधर सुखदायक सब छबि देख जियें ॥३॥ ❀ १०७० ❀ राग मल्हार ❀ हिंडोरे माई झूलत गिरिवरधारी। लाल टिपारो सीस बिराजत मल्लकाछ छबि न्यारी ॥ १ ॥ बाम भाग सोहत है राधा पहिरि कसूँभी सारी। झोटा देत सखी ललितादिक पवन बहत सुखकारी ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग झालरी गावत सब सुकुमारी। 'कुंभनदास' प्रभुकी छबि ऊपर सर्वसु

डरत वारी ॥ ३ ॥ ❀ १०७१ ❀ राग ईमन कल्याण ❀ हिंडोरे नीकी आज रमकी। उमड़ घुमड़ आईं घन घटा बरसि बूँद रस झमकी ॥१॥ हरियारी में हरी सी कंचुकी गोरे गात खय खमकी। सारी सुही सांझ सी फूली मुक्तामाल बग समकी ॥ २ ॥ नवललाल जलधर अंग संग मिलि दीपति दामिनी दमकी। 'रससुजान' रीझि रस बस भये पावस ऋतु अनुपम की॥ ॥ ३ ॥ ❀१०७२❀ राग ईमन ❀ सोहत बन, आयो री सावन हरियारो। हरित भूमि पर इंद्रवधू सी राधिका सब सखियनि संग लीने पहिरे कसुंभी सारी कंचन तन ॥ १ ॥ रंग भरि सुरँग हिंडोरे झूलत नवनागरी–नागर मानों रंग च्वै चल्यो है एड़ी अँगुरिन। 'सूरदास' मदनमोहन पिय के गुन गावत ये सुख अति आनंद मगन मन ॥ २ ॥ ❀१०७३❀

ठकुरानी तीज (श्रावण सुदी ३)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ कहौ तुम कौन हो कहाँ ते आये अब कित जाओगे सवेरे। जानत हौं पहचानत नहीं आवत हो जु डरे रे ॥१॥ लाल पाग अध भाल लटक रही मोतिनि माल याही तें कहावत तुम चतुर रीझे रे। 'तानसेन' के प्रभु ठाड़े रहो जु स्याम सब सखियनि मिलि घेरे॥ ॥२॥ ❀१०७४❀ शृंगार ओसरा ❀ राग मल्हार ❀ चलि वर कुंजन बरसत मेह। पहरि चूनरी सज आभूषन नयननि अंजन देह ॥ १ ॥ नेंन्हीं-नेंन्ही बूँदनि बरस्यो ही चाहत तैसोही बढ्यो सनेह। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन पिया कौं दोऊ भुजा भरि लेह ॥ २ ॥ ❀१०७५❀ राग मल्हार ❀ सुरँग चूनरी प्यारी पचरंग पहिरें पिया को चोर चित्त डगरी। स्याम कंचुकी पर अँचरा उलटि दियो खमकि धरी सिर गगरी ॥ १ ॥ लहँगा हरयो छपाऊ कटि घूमत नखसिख रूप अगरी। 'श्रीविट्ठल' गिरिधर तोहि सों रति लाइ लई उर सगरी ॥ २ ॥ ❀१०७६❀ राग मल्हार ❀ गायो है मलार धुनि सुनि आई व्रजनारि करि के सिंगार चली ठाडी कहा अरसे। चूनरी की सारी

सोहै कंचन किनारी तामें बाल सुकुमारी तिय हांस हिये हरसे ॥१॥ सुनि मान छांडि दियो जल भरनि को मिस कियो इंडुरी जराय लियें कंचन के कलसे। मानिये त्यौहार भटु ठकुरानी तीज आज चमकत बीज सोभा देत देखो मेह बरसे ॥ २ ॥ ❀१०७७❀ राग मल्हार ❀ लाल मेरी सुरँग चूनरी देहु। मदनमोहन पिय झगरो कौन बद्यो सो अपनो पीत पट लेहु ॥१॥ तुम ब्रजराजकुमार कौन को डर हौं अब कहा कहूंगी गेह। 'गोविद' प्रभु पिय देहु बेगि आवत चहुंदिसि तें मेह ॥ २ ॥ ❀१०७८❀ शृंगार दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ सावन तीज हरियारी सुहाई माई रिमझिम-रिमझिम बरसत भारी। चूनरी की पाग बनी चूनरी पिछोरा कटि चूनरी की चोली बनी चूनरी की सारी ॥ १ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल सब्द करत किलकारी। गरजत गगन दामिनी दमकति गावत मलार राग तान लेत न्यारी ॥ २ ॥ कुंज महल में बैठे दोऊ करत विलास भरत अंकवारी। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर छबि निरखत तन-मन नौछावरि वारी ॥ ३ ॥ ❀१०७९❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ स्याम सुनि नियरे आयो मेहु। भींजेगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतांबर देहु ॥ १ ॥ दामिनी देखि डरपति हौं मोहन निकट आपुने लेहु। 'चतुर्भुजदास' लाल गिरिधर सों बाढ्यो अधिक सनेहु ॥ २ ॥ ❀१०८०❀ चूनरी पाग और चूनरी पिछोरा मुक्ता-माल हिये। उमगी घटा सावन भादौं की पंछी सब्द किये ॥ १ ॥ दादुर मोर पपैया बोलत कोयल टेर दिये। 'ब्रजजीवन' प्रभु गोवर्द्धनधर यह सुख नैन पिये ॥ २ ॥ ❀१०८१❀ हिंडोरा में उत्सव भोग आये ❀ राग मारू ❀ निज सुख पुंज वितान, कुंज हिंडोरना। झूलत स्याम सुजान, कुंज हिंडोरना ॥ संग स्यामाजू परम प्रवीन। जाके सदा रसिक आधीन ॥ ध्रुव० ॥ कंचन खंभ पेचवा बलेंडी जटित जराऊ सगरी। पन्ना खचित पिरोजा बीच-बीच कनक कलस जगमग री ॥ १ ॥ गजमोतिन सों डाँडी गूँथी चौकी चमक

सुरंगी । रमकत झमकत गहि-गहि लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥ २ ॥ मरुवे बेलन ध्वजा झालरी द्युति गहवर विस्तरनी । चौंकारत झोटन में मानों कोकिल सब्द उचरनी ॥ ३ ॥ चहूं ओर द्रुम बेली फूली लता सघन गंभीर । जब रमकत दमकत दामिनि सी झलमल जमुना नीर ॥ ४ ॥ सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सब पैठे । गुल्म लता द्रुम तनक न दीसत ऐसें जुरि जुरि बैठे ॥ ५ ॥ विजय सुभाव कियें घन संपति उल्हर विपिन पर आए । गरजत तरजत मधुर राग लियें केकी सब्द सुहाये ॥ ॥६॥ सहचरी गान करत ऊँचे स्वर श्रीवृन्दाबन गाजें । मधुर मंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजें ॥ ७ ॥ नीलांबर पहिरें नव नागरीलाल कंचुकी सोहें । भींजि गई श्रमजल सों उरजन प्रीतम को मन मोहें ॥८॥ लट सगमगी सलोल बदन पर सीसफूल उलटानो । प्रिया की चौकी सों गिरिधर को चंद्रहार अरुझानो ॥ ९ ॥ दृग रसाल रस भरी भौंह सों हँसि-हँसि अर्थ जनावे । दुरनि मुरनि में चित करषत हैं लालची मन ललचावे ॥ फैलि रह्यो सौरभ सिगरे सखी कुमकुम कृष्नागर को । कहाँ लौं कहौं मत्त भयो बरनौं भाव 'गदाधर' उर को ॥ ११ ॥ ❀ १०८२ ❀

❀ राग मलार ❀ सावन की तीज हिंडोरे झूलै राधा प्यारी सुनिकै मनमोहन आये हैं झूलनि । सखी भेष किये स्याम आये प्रान प्यारी पास अंग-अंग भूषन बैनी भरी फूलनि ॥ १ ॥ नैननि काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहे तापर बेसर के मुक्ता की झूलनि । 'सूरदास' प्रभु नारी रूप किये प्यारी संग झूलत जमुना के कूलनि ॥ २ ॥ ❀ १०८३ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग मलार ❀ तीज महातम आयो, देख सखी । स्यामास्याम परस्पर झूलत निरखि परम सुख पायो ॥ १ ॥ दिसि–दिसि घोर–घोर घन गरजत मंद-मंद बरखायो । दादुर मोर पपैया बोलत कोयल सब्द सुहाय ॥ २ ॥ ताल मृदंग किन्नरी दुंदुभि प्रेम निसान बजायो । 'सूरदास' प्रभु जुगल बिराजत अखिल भुवन

जस गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८४ ❀ राग अडानो ❀ रंग हिंडोरना प्यारी जू झूलनि आई तैसीय पावस ऋतु परम सुहाई। घटा चहुं ओर छाई कोकिला सब्द सुहाई तेसीय अधर धरें मुरली बजाई ॥ १ ॥ बने दोऊ एकदांई तान लेत मन भाई रीझि-रीझि प्यारी उर कंठ लगाई। देववधू उठि धाई पहोप वृष्टि कराई 'रसिक' प्रीतम तहां बलि-बलि जाई ॥ १०८५ ❀राग अडानो ❀ रंग हिंडोरना झूलत राधा सब सखिनि संग बनि-ठनि प्रानप्यारी देखिवे कों आयो। जाके अंग संग कोटि-कोटि सचु पाइयत ललिता अपनी प्यारी के संग झुलायो ॥ १ ॥ सावन तीज सुहाई दुहुँनि के मन भाई प्रथम समागम आनंद घुमडायो। घन दामिनी देह बरसन लाग्यो मेह दोऊ रूपरासि सबहि कों जिय भायो ॥ २ ॥ वे हरखि-हरखि कें झुलाये जब नंदलाल डरपनि लागे और अति सचुपायौ। कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु प्यारी झूलि रति मानी सुख-सिंधु बढायो ॥ ३ ॥ ❀ १०८६ ❀ राग अडानो ❀ राधेजू झूलति रमक-रमक। मनि कंचन को सुरंग हिंडोरा तामधि दामिनि चमक चमक॥१॥गावत गुन गिरिधरलाल के उठत दसन धुति दमक-दमक। बाढ्यो रंग 'गदाधर' प्रभु जहाँ गयो है दमन सब तमक तमक ॥२॥ ❀१०८७❀ ❀ शयन भोग आये ❀ राग इमन ❀ तीज सुनि आये हैं हरि मेरे। आनंद भयो विरह दुख भूल्यो श्रीहरि कमल नयन मुख हेरे ॥ १ ॥ भरि अंकवार झूलि पिय के संग सब सखियनि कों कह्यो सिधारो। कृष्णनाम लै हँसि-हँसि मुरि मुसकाई प्रीतम के बदन निहारो ॥ २ ॥ जब नंदलाल तरल झोटा करि डरपावन मिस रमक बढाई। स्यामा लपटी स्याम गरे में झूमि-झूमि हरि गरे लपटाई ॥ ३ ॥ सो सुख देखि हरखि हिय की रति फूलि-फूलि अंग न माई। वारि फेरि करि-करि न्यौछावर 'नन्ददास' कों बोलि गहाई ॥ ४॥ ❀ १०८८ ❀ राग ईमन ❀बाल आलिनि की मंडली फूली अति अंग न माई। गोपीजन मिलि तीज महातम अप-अपनो करि-करि सरसाई ॥ १ ॥ राधाजू

पै नाम लिवावत हँसि हँसि मोहन संग झुलवत । राधाजू कह्यो कृष्ण श्री वल्लभ कृष्ण कह्यो राधा प्रान ही भावत ॥ २ ॥ रह्यो रंग संग खेलत खात सब सावन मास रतिरस बितयो। 'कृष्णदास' गिरिधर संग मिलि काम नृपति मिस हि मिस जितयो ॥ ३॥ ❀ १०८९ ❀ राग ईमन ❀ सुदी सावन हरियारी तीज आज सुभ दिन परम सुहायो । पुन्य-पुंज गहवर हरि राधा-वर पायो ॥ १ ॥ घर वन बसि कुंजनि सुख बिलसत करत आप मन भायो। गोपीजन के जूथ मिले सुख सखियनि मंगल गायो ॥ २ ॥ भयो मनोरथ गोपीजन को हाव-भाव फल पायो । यह सुख बसो सदा जिय मांही 'नन्ददास' जस गायो ॥ ३ ॥ ❀ १०९० ❀ राग ईमन ❀ झूलत रसिक लाडिली सघनबन छायो । लता कुसुम अलि गान मोरपिक त्रिविध समीर बहायो ॥ १ ॥ घन बूंदें सुर कुसुमनि बरषत दामिनि-दीप बनायो । ब्रजनारी दृग मीन लखे प्रभु 'ब्रजाधीस' मन भायो ॥ २ ॥ ❀ १०९१ ❀ राग ईमन ❀ रमकि झमकि झूलनि में झमकि मेह आयो नहि सुरझत बातन तें । नव पल्लव संकुलित फूल-फल वरन-वरन द्रुमलतान तर ठाडे भयो है बचाव पातनतें ॥ १ ॥ मंद-मंद झुलवत खंभन लगि ओढें अंबर निज गातन तें । 'कृष्णदास गिरिधारी दोऊ भीज्यो बागो सारी भमरन की भीर भारी टारी न टरत क्योंहू प्रगटी छबीली छटा निज गातन तें ॥ २ ॥ ❀ १०९२ ❀ राग ईमन ❀ सघनकुंज परछाँही प्रीतम दोऊ झूलत रंग हिंडोरे । दादुर मोर पपैया बोलत सीतल पवन झकोरे ॥ १ ॥ तैसेई बरन-बरन आये बादर मंद मंद घन-घोरे । 'रसिक' प्रीतम झूलें सुरंग हिंडोरे निरखि ब्रजबधू तृन तोरे ॥ २ ॥ ❀ १०९३ ❀ राग केदारो ❀ झूलत दोऊ कुंज कुटीरे । कंचन खंभ हिंडोरे बिराजत तरनि-तनया तीरे ॥ १॥ मुकुलित कुसुम मल्लिका प्रफुल्लित रुचिकर बहत समीर । सारस हँस चकोर मोर खग बोलत कोकिला कीर ॥ २ ॥ मधुरे सुर गावत केदारो वृषभानु-सुता बलवीर । 'गोविंद' प्रभु गिरिराज

धरन पिय सुरस सुभग रनधीर ॥ ३ ॥ ❀ १०९४ ❀ राग बिहाग ❀ नवल-लाल पियके सँग झूलनि आई एहो हिंडोरें। लटपटात पाट की चूनरी बदल परी कछु भोरें ॥ १ ॥ सगबगात गिरिधर पिय के संग बतियाँ कहत थोरैं थोरें। 'दासन' के प्रभु रमकि झमकि झूलें कछुक हँसत मुख मोरें ॥२॥ ❀ १०९६ ❀ राग बिहाग ❀ ये दोऊ झूलत हैं बांह जोरें। नवल कुंज के द्वारें देखो रमकत हैं चहुं ओरें ॥ १ ॥ सप्त सुरनि मिलि मुरली बजावत बिच-बिच तान लेत रस थोरें। 'हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी' छबि निरखत तृन–तोरें ॥ २ ॥ ❀ १०९७ ❀ राग अडानो ❀ ब्रज के आंगन माँच्यो, हिंडोरो। वृंदावन की सघन कुंज में जहाँ रंग राच्यो ॥ १ ॥ ब्रज की नारी सबै जुरि आईं गावति हैं सुर सांचो। 'रसिक' प्रीतम की बानिक निरखत संकर तांडव नाच्यो ॥ २ ॥ ❀ १०९६ ❀ राग रायसो ❀ झूलत मोहन रंग भरे गोप बधु चहुँओर। श्रीजमुना पुलिन सुहावनो वृंदावन सुभ ठोर ॥ १ ॥ राधाजू करैं किलकारी ज्यों गरजत घन घोर। तापाछें सब सखियनि मिलिजु करत हैं सोर ॥२॥ तैसेई रटत पपैया बोलत दादुर मोर। 'नंददास' आनंद भरे निरखत जुगल किसोर ॥ ३ ॥ ❀ १०९८ ❀ ❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ यमुना तट नव सघन कुंज में हिंडोरना झूलनि आई। मध्य राधा माधौ बैठे आसपास युवती मन भाई ॥ १ ॥ सावन मास हरित घन वन में रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई। कछु भींजे पट अंग झलमले नव-नव छबि बरनी नहि जाई ॥ २ ॥ विविध भांति झूलत मिलि फूलत रस–प्रवाह उमग्यो न समाई। गावत सावन-गीत मुदित मन संक न मानत निडर सुहाई ॥ ३ ॥ अति रस भरी युवती सब देखीं स्यामसुंदर तब ले उर लाई। चिर संचित अभिलास भयो तब अधरसुधा पीवत न अघाई ॥ ४ ॥ बिच-बिच मुरली धुनि सुनि कूकत केकी पिक चातक तिहिं ठांई। 'चत्रभुजदास' वारने लै लै गिरिधर पिय रति कीरत

गाई ॥ ५ ॥ ❀ राग केदारो ❀ सो तू राखि लैरी झोटा तरल भये। इत नव कुंजद्वार कदंब परसि जात उत जमुना लौं गये ॥ १ ॥ आवत जात पट लपटात लतनि सों ता ऊपर द्रुम पात छये। 'कल्याण' के प्रभु गिरिधर रीझि बस भये झूलत नये-नये ॥ २ ॥ ❀ ११०० ❀ मान पोढवे में ❀ ❀ राग मलार ❀ घन-घटा आई घूमि-घूमि नहेंनी-नहेंनी बूँदनि हो पिय बरसे। चहुँदिसि तें गरजत मंद-मंद तैसीय कनक चित्रसारी तामें पोढे पिय प्यारी तैसीय दामिनी अति दरसे ॥ १ तैसेई बोलत मोर कोकिला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे। 'गोविंद' प्रभु सुघर दोऊ गावत केदारो राग तान अब ही सरसें ॥२॥ ❀ ११०१ ❀श्रावण सुदी ४ ❀ ❀ मंगला दर्शन ❀ राग मलार ❀ आवत लाल–लाडिली फूले। कुंज केलि नवरंग बिहारी सुरति हिंडोरे झूले ॥ १ निसि जागे अलसात रगमगे पट पलटे गत भूले। 'विट्ठल विपिन विनोद बिहारी' दुरि देखत द्रुम मूले ॥२॥ ❀ ११०२ ❀ राग मलार ❀ झूलत कुंजनि कुंज किसोर। सुरत रंग सुख सेन सूचित नैन रँगीले भोर ॥ १ ॥ सिथिल पलक मँहि बंक विलोकनि बिहँसनि चित्त के चोर। फिरि-फिरि उर लपटात स्याम-तन फूले तन कुच कोर ॥ २ ॥ अधर:मधुर मधु प्याय जिवाये विविध वर वदन-चकोर। मादक रस रसानन अघाते लहत मंडल चल छोर ॥ ३ ॥ बिच-बिच नाचत मिलि गावत सुर मंदिर कल भोर। रीझि पलक चुंबन करि पुलकित झुलावत जोबन जोर ॥४॥ हरिबंसी फूलि हरिदासी निरखत सुरत हिंडोर। 'व्यासदास' अंचल चंचल करि मोद-विनोद न थोर ॥५॥ ❀११०३❀ शृंगार दर्शन ❀ ❀ राग मल्हार ❀ उमड़ि-घुमड़ि घटा आई झूमि-झूमि लता रही भूमि हरियारी लागे सुभग सुहाई। तहाँ बैठे पिय प्यारी भूषन छबि न्यारी-न्यारी मुख की उजियारी मानों चाँदनी सी छाई ॥ १ ॥ तनन–तनन तान लेत प्यारी करताल देत गावत मल्हार राग अति मन भाई। 'श्रीविट्ठल' गिरि-

धारीलाल लखि मोही व्रजबाल रीझि-रीझि रहे दोऊ कंठ लपटाई ॥ २ ॥ ❀ ११०४ ❀ शृंगार में झूले तो ❀ राग मल्हार ❀ झूलौ तो सुरत–हिंडोरे झुलाऊँ। मरुवे मयार करौं हित–चित के तन–मन खंभ बनाऊँ॥ १ ॥ सुधि पटुली बुद्धि दांडी बेलन नेह बिछोना बिछाऊँ। अति औसेर धरों रुचि कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊँ ॥ २ ॥ गरजन कुहुक हिलग मिलिवे की प्रेम नीर बरसाऊँ। 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन झुलाऊं जो इकले करि पाऊँ ॥ ३ ॥ ❀११०५❀

पवित्रा एकादशी (श्रावण सुदी ११)

❀ शृंगार दर्शन पवित्रा धरे तब ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा परिहत गिरिधर-लाल। सुंदर स्याम छबीलो नागर सकल घोष प्रतिपाल ॥ १ ॥ हँसि मन हरत हमारो मोहन संग नागरी बाल। फूली फिरत मत्त करिनीवत् अति आनंद नंदलाल ॥२॥ देखि स्वरूप ठगी सी ठाड़ी दंपति दल के साज। 'परमानंद' प्रभु पर न्यौछावर प्रान-प्रिया के काज ॥ ३ ॥ ❀ ११०६ ❀ ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहरें श्री गिरिधरलाल। वाम भाग वृषभानुनंदिनी बोलत बचन रसाल ॥ १ ॥ आसपास सब ग्वाल मंडली मानों कमल अलिमाल। 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन नंद भवन व्रजबाल ॥ २ ॥ ❀ ११०७ ❀ राग सारंग ❀ पवित्रा पहिरत श्रीगिरिधरलाल। तीनो लोक पवित्र किये हैं श्रीविट्ठल नयन-विसाल ॥ १ ॥ कहा कहों अंग-अंग की बानिक उर राजत बनमाल। 'विष्णुदास' प्रभु गोकुल महियाँ बिहरत बाल गोपाल ॥ २ ॥ ❀११०८❀ राग सारंग ❀ पहिरत पाट पवित्रा मोहन नंदरानी पहिराबत। जंबू नद कंचन के तारे बिच बिच रतन जरावत॥१॥ पूवा सुहारी और लडुवा लै हँसि-हँसि गोद भरावत। 'कृष्णदास' गिरिधर के मंदिर प्रमुदित मंगल गावत ॥ २ ॥ ❀ ११०९ ❀ श्रावन सुदी १२ ❀ ❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग कानरो ❀ झूलत तेरे नैन-हिंडोरे। श्रवन खंभ भ्रू भई

मयार दृष्टि करन डांडी चहूँ ओरें ॥ १ ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे जुगल रूप-रति जोरे । कच घन आड दामिनी दमकति मानों इन्द्र धनुष अनुहोरे ॥२॥ दूर देखत अलकावलि अलिकुल लेत सुगंधनि पवन झकोरें । बरनी चमर दुरत चहुँ दिसितें लर लटकन फूंदना चित चोरें ॥ ३ ॥ थकित भये मंडल जुवतिन के जुग तांटक लाज मुख मोरे । 'रसिक' प्रीतम रसभाव भुलावत रीझि रीझि ताननि तृन तोरें ॥ ४ ॥ ❀ ११११० ❀राग कान्हारा❀ व्रजजुवतिन के जूथ में झूलें पिय-प्यारी हिंडोरे । तैसीय सुरंग सारी पहिरे सुभग अंग खमकि कंचुकी पिय सरसत परसत बरसत रस द्रग कोरे ॥ १ ॥ सुभग सहचरी मिलि ज्यों-ज्यों झुकि झोटा देत त्यों-त्यों तोरि मोरि तन डरी सी आँकौ भरत लेत चतुर चित्त-चोरे । 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर की बानिक देखि रीझि-भीजि सब ब्रजजन हुलसत वारत है तृन तोरे ॥२॥ ❀११११❀राग कान्हरो ❀ हिंडोरे माई, झूलत री नंदनंदन। संग वृषभानसुता अति सोहै रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई॥१॥ गावत सावन-गीत बानिक बनि व्रज-बनिता पिय जिय मन भाई। 'चतुर्भुज' प्रभु तब छबिली छबि निरखि रीझि भींजि सब उर लाई ॥२॥ ❀१११२❀शयन दर्शन❀ राग विहाग ❀ दीपत दिव्य दरबार श्रीब्रजराज को । रतन जटित को आज हिंडोरो साज को ॥ टेक ॥ छंद—सजे साज चहूँ ओर झगमगे रंगमहल झगमगि रह्यो । झगमगात हिरन के झार मानों पन्नन के जात है नहीं कह्यो ॥ १ ॥ लटकन लटकि रहे चहूँ ओर सारंग न्यारे न्यारे। राते पीरे हरे स्याम सोसनी भरे रंग भारे ॥ २ ॥ चाल—आसमान सो स्वेत सरस और कहि कहि कहा बखानिये । श्रीपति को वैभव बरननि कों पटतर कहा कहि ठानिये ॥ २ ॥ सब गिलास झगमग जहाँ अस चित्र विचित्र समारे । लटकन झगमगत लरिन के मानो गगन तारे ॥ चाल—झगमग जोति देखि भ्रम भूल्यो आई मानो दौरि दिवारी । रमा संकर सेस नारद देखि विधि नहीं जात विचारी ॥ ३॥

जहाँ झूलत पिय अरु प्यारी तहाँ मिलि गोपीजन गुनगावें। राग रागिनी सप्त सुरनि मिलि तान तरंग उपजावे ॥ चाल–झोटा देत ललितादिक फूलि अंग न माय। बढ्यो रंग तहाँ अति अद्भुत छवि मीन बिछुरे नहिं माय ॥४॥ फेंटा फब्यो स्याम के सिर पर उपरैना सुखकारी। सहज सिंगार स्यामा तन सोहे नवल केसरी सारी ॥ चाल–आलस भरे नैन ललिता लखि सैय्या सरस सँवारी। आरति वारि देत न्यौछावर राई लोन उतारी ॥ हँसि चंद्रावली करत समस्या सुरत हिंडोरे झूलिये। 'कृष्णदास' गिरिधरन को जस अब रमक बढावन हूलिये ॥ ५ ॥ ❀ १११३ ❀ राग विहाग ❀ बाल झूलावनि आई, झूले नवल बिहारी। सुरंग हिंडोरो लाल को तहाँ जुगलकिसोर सुहाई ॥ १ ॥ मनि कंचन के खंभ मनोहर विद्रुम डांडी सुहाई। पचरंग डोरी पाट की तहाँ पटुली पाँच जराई ॥ २ ॥ बरन-बरन के फौंदना तहाँ मोती झालर बनाई। मानिनी गावे मोद तहाँ बाजे बहुत बजाई ॥ ३ ॥ रीझि रीझि सुर सुंदरी तहाँ कुसुमनि वृष्टि कराई। देखत सोभा दंपति की तहाँ 'कृष्णदास' बलिजाई ॥ ४ ॥

उत्सव राखी को (श्रावण सुदी १५)

❀ शृंगार में राखी धरे तो ❀ राग सारंग ❀ मात जसोदा राखी बाँधति बल अरु श्रीगोपाल के। कंचन थार में अच्छत कुमकुम तिलक कियो नंदलाल के ॥ १ ॥ आरती करत देत न्यौछावर वारत मुक्ता माल के। 'छीतस्वामी' गिरिधर मुख निरखति बलि-बलि नैन विसाल के ॥ २ ॥ ❀ ११५ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ आज हौं नंदै जाँचन आई। बाबाजू हँसि कह्यो दसौ दिसि भीतर भवन बुलाई ॥ १ ॥ ठौर-ठौर व्रज घोषनि घर-घर बजत बधाई। जीवन–जनम सुफल करिवे कों अवलोकन सुखदाई ॥२॥ परम पुनीत तप कौ फल भामिनि जो कोऊ दैहै दिखाइ। साज बाज सब संग कर लीने हौं तहाँ दई है पठाई ॥ ३ ॥ भभक भभ-

जीजी भभक जीजी–जीजी भभ–भभ–भभभ भकाई। रुनन-झुनन और झनन-झनन और घनन-घनन अधिकाई ॥४॥ पोंहोंपंबी-पोंहोंपंबी ढाढी-ढाढिन बजाई ! बाबा जू हँसि कह्यो दसोदिसि भीतर भवन बुलाई ॥ ५ ॥ जब जसुमति धाय नंदरानी पहिचानी पाँय लगाई। बाजत हरषि मंजीरा बाजत नव-नव भांति नचाई ॥ ६ ॥ करिहौं नची सची संपति भई पाँय परी तब धाई। मनिमय आँगन में दोउ डोलति मोहन कों उर लाई ॥७॥ गोप वधू निरखत सुख पावत गावत गुन समुदाई। बरस द्योस राखी सुख साखी भाखी वेद बताई ॥ ८ ॥ मंगलमुखी सदा आवत हैं सखी सर्वदा पाई। ढाढिन कह्यो जाय किन देखौ सुख संपति अधिकाई ॥ ९ ॥ बड़े-बड़े गाडा दस दीने रुपे सों लदवाई। चंडौली-चंडौल डोल निरमोल अधिक धन लाई ॥१०॥ को कहि सकै दसौं दिसि यासों जब तें मिले कन्हाई। 'खेमदास' प्रभु गिरिधर जू की जुग-जुग होत बड़ाई ॥ ११ ॥❀ १११६❀

❀ हिंडोरा दर्शन ❀ राग अडानो ❀ सावन की पून्यो मन भावन हरि आये घर झूलूँगी पचरँग डोरी बांधि हिंडोरे। पहिरोंगी सुरंग सारी कंचुकी कसि बाँधौं कारी हीरा के आभूषन सो है तन गोरे ॥ १ ॥ धरि हौं उर कुसुम हार निरखोंगी बारंबार नयन निहारि नंदलाल कछुक वेष थोरे। 'रसिक' प्रीतम संग सुखद पावस ऋतु बिलसौंगो भेटौंगी आनंद भरि कंठ भुजा जोरे ॥ २ ॥ ❀१११७❀ राग अडाना ❀ भली करी आये प्रीतम प्यारे परव मनावन सलोनौ। झूमि-झूमि झूलवत रंग रंगन रस बरखत ब्रज दूनौ ॥१॥ एक वेष एक रूप एक गुन पूरन नाहिन ऊनौ। 'द्वारकेस' स्वामिनी हँसि यों कह्यो झूलिये आज है पूनौ ॥२॥ ❀१११८❀ राग अडाना ❀ सुघर रावरे की गोपकुमारि गोकुल की राखी बाँधे हरि राधा हिंडोरे झूलनि नंदसदन आई। प्रफुल्लित मुख सोभित अलक चपल नैना पट भूषन झगमग तन चटक मटक जसुमति मन भाई ॥ १ ॥ कोऊ मृदंग बजावे गावे बीन

सरस सुर मिलावे पिक रिझावे लजावे मोरनि कूक मचाई। 'ब्रजाधीस' केलि करत फूले बन हरित भूमि बडभागिनि पून्यो यह सावन सुखदाई॥२॥ ❀११९❀ राग अडाना ❀ गोपीजन गावे गीत राखी को है दिन पुनीत स्यामास्याम झूले दोऊ रंग हिंडोरे। रमकि-झमकि झोटा देत नैननि कों सुख देत निरखि-निरखि छबि पर तृन तोरे॥ १॥ सावन की पून्यो मन भावन संग राखी बांधि जमायो है राग-रंग बैठी बाँह जोरे। काछनी काछे लाल मोर मुकुट मुक्तामाल स्यामा को सुहाग-भाग सुजस चहुँओरे। श्रीविट्ठल सुख-साज सज्यो जसुमति ब्रजराज भजो हरि अविचल राधा को चूरो। 'नंददास' बलिहारी भक्तनि कों सुखकारी प्रीतम चकोर प्यारी सरद-ससि पूरो॥३॥ ❀११२०❀ शयन दर्शन ❀ राग मल्हार ❀ यह सुख सावन में बनि आवे दुल है दुलहनि संग झुलावे। नंदभवन रोप्यो सुरंग हिंडोरो गोपवधू मिलि मंगल गावे॥१॥ नंदलाल कों राधा जू पै हरिजू पै राधाजी को नाम लिवावे। जसुमति सों 'परमानंद' तिहिं छिन वारि फेरि न्यौछावर पावे॥२॥❀११२१❀ ❀ जन्माष्टमी की बधाई में सेहरा धरें तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ रानी जू जीओं दुल हैं तेरो ब्रजजीबन जायो। गोकुल को कुल मंडन पूत यह पायो॥ १॥ देखि द्रग कमल जब स्याम गात सुहायो। लै करि निज गोद मोद सों हुलरायो॥ २॥ पूरव कृत पुन्य पुंज भाग बडे तें पायो। कूखि की बलिहारी जाऊं जस 'कल्यान' गायो॥ ३॥ ❀ ११२२ ❀ ❀ जन्माष्टमी की बधाई में किरीट धरे तब ❀ मंगला दर्शन ❀ राग रामकली ❀ हरि मुख देखिये बसुदेव। कोटि काम स्वरूप सुंदर कोऊ न जाने भेव॥१॥ चारि भुजा जाकें चारि आयुध देखि हो नर ताहि। अजहुँ मन परतीति नाँही कहे नंद-गृह लै जाहि॥ २॥ झरे तारे परे पहरुवा नींद ब्यापी गेह। निसि अंधियारी बीजु चमके सघन बरसे मेह॥ ३॥ कंस सोयो स्वान सोये मुक्त भये द्वार। बंधी बेडी छूटि गई यह कहो कौन विचार॥ ४॥

सिंह आगें सेस पाछे बहै जमुना पूर। नासिका लौं नीर आयो पार पहिलो दूर ॥ ५ ॥ श्रीमुख तें हुंकार कियो दियो जमना पार। वसुदेव मन परतीति आई बालक गृह-अवतार ॥ ६ ॥ नंद सौं मनुहार कीनो कहत हैं वसुदेव। कहें 'सूर' सुत जानि अपनो बोहोत कीजै सेव ॥७॥ ❀११२३❀

❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ प्रगटित मथुरा माँझ हरी। मात तात हित पुत्र रूप मिस अपनी प्रतिज्ञा सत्य करी ॥ १ ॥ स्याम वरन वपु उर पर भृगु-पद जटित कंचन सिर क्रीट खरी। चारि भुजा बनमाल कोटि रवि संख चक्र गदा पद्म धरी ॥ २ ॥ द्वार कपाट भेदि चले व्रजपति तब सुर कुसुमनि वृष्टि करी। परम पुरुष भगवान जानि जिय वसुदेव मन अति भीति हरी ॥ ३ ॥ जय जय सब्द बोलि निसान ध्वनि व्योम बिमाननि भीर भरी। 'गोविंद' प्रभु गिरिधर जसुमति सुत भक्तनि हित आये नंद घरी ॥ ४ ॥ ❀ ११२४ ❀ राग बिलावल ❀ जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनंद तूर बजायो हो। कंचन कलस होम द्विज-पूजा चंदन भवन लिपायो हौ ॥ १ ॥ दिन दस ही तें बरषि कुसुम अति फूलनि गोकुल छायो। नंद कहै इच्छा मन पूजी मनबांछित फल पायौ ॥ २ ॥ आनंद भरे करे कोलाहल उदित मुदित नर नारी। निरभै भए निसान बजावत देत निसंकन गारी ॥ ३ ॥ नाचत महर मुदित मन कीने पात बजावत तारी। 'सूरदास' प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस-प्रहारी ॥ ४ ॥ ❀ ११२५ ❀

❀ राग बिलाबल ❀ आनंद ही आनंद बढ्यो अति। देबनि मिलि दुंदुभी बजाये निसि मथुरा प्रगटे जादोंपति ॥ १ ॥ गावत गुन गंधर्व पुलिक चित नाचें सुर भारी जु रसिक रति। विद्याधर किन्नर सुकंठ कल तिहिं तिहिं ताल जात उघटत गति ॥ २ ॥ सिव विरंचि सनकादि अगोचर फूले चित्त न मात अमित मति। बरखत सुर समूह सुमन गन हरखत कलोल करतजु मुदित गति ॥ ३ ॥ कमलनैंन अति वदन मनोहर

देखियत ये विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग तन पीत बसन द्युति और मानों सो हैजु सुभग अति ॥ ४ ॥ नखमनि मुकुट प्रभा अति उदित चित्त चक्रत भयें अनुमान न पावत । अति प्रकास निसि विमल तिमिर घट झलमलात रति पति हि लजावत ॥ ५ ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत खट सुत-सोक सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु भये हैं प्राकृत भुज के चिह्न सबैजु दुरावत ॥ ६ ॥ ❀ ११२६ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ कमलनयन ससि-बदन मनोहर देखियत ए विचित्र अनूप गति । स्याम सुभग तन पीत वसन द्युति उर बनमाला सोहित है अति ॥१॥ नखमनि मुकुट प्रभा अति राजत चितै चकित उपमा नहिं पावत । अति प्रकास निसि विमल तिमिर छटि कमलापति कों नाहि जगावति ॥ दरसन सुखी दुखी अति सोचत षट सुत सोच सुरति उर आवत । 'सूरदास' प्रभु होऊ प्राकृत लै लै भुज के बीच दुरावत ॥३ ॥ ❀ ११२७ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ आज बाबा नंदहि जाचन आयो । जनम सुफल करिवे कों अब मैं रहसि बधायो गायो । महरि कहति या बालक के गुन किनहु न मोहि सुनायो । भलो भलो सब लोग कहत हैं सोई गीतनि गायो ॥२॥ प्रथम ही मच्छ संखासुर मारयो कमठ पीठि ठहरायो । श्रीवाराह नरसिंह औतरे देतन नखन दुरायो ॥३॥ श्रीवामन वैराट विस्तारयो बलिही पाताल पठायो । परसराम पृथ्वी निच्छत्रि करी विप्रनि दान दिवायो ॥४॥ रघुपति रावनके सीस भुजा हनि जानकी लै घर आयो । विभिषन कों राजतिलक दै लंका में बैठायो ॥५॥ अब श्रीकृष्ण प्रगटे पुन्यनि तें तुम्हारो पुत्र कहायो । बालकेलि रसकेलि करेंगे नटवर भेष बनायो ॥६॥ श्री गोवर्द्धन सात दिवस बांये नख अग्र उठावें । रास विलास करें वृंदावन गोपिनि प्रेम बढावें ॥७॥ मारेंगे मल्ल कंस अरु कैसी मल्लन साल सलायो । जस अपार महिमा अनंत ब्रह्माहू पार न पायो ॥ ८ ॥ महरि कहति यह भलो दसोंधी सबहिन के मन भायो । बाबा बिहँसि आपुने घर तें बकुचा बेगि मंगायो

बंध तें गोपुर दिये किवार खुलाय। सेस सहस्र फन बूँद निवारत जमुना चरन परसि भई धाय ॥ ५ ॥ लै वसुदेव गये गोकुल नंद-घरनि की सेज सुवाय। निज सामर्थ्य जोगमाया लै मोहन मथुरा दई है पठाय ॥ ६ ॥ जागी महरि उठी जब जसुमति नंदमहर कों लिये बुलाय। जय-जयकार भयो गोकुल में ब्रजजन आनंद उर न समाय ॥ ७ ॥ गोपी-ग्वाल गोप सब ब्रजजन स्रवन सुनत ही रंक निधि पाय। हरद दूब अच्छत रोरी सों कर कंचन के थार भराय ॥ ८ ॥ बाजत ताल पखावज आवज मुरली दुंदुभी सब्द सुहाय। नंदमहर घर ढोटा जायो दधि लै छिरकत करत बधाय ॥ ९ ॥ ध्वजा पताका तोरन माला गृह-गृह मंगल कलस धराय। चित्र विचित्र किये प्रमुदित मन दधि माखन के माट धराय ॥ १० ॥ तब ब्रजराज गोप सौं मतौ करि अति आदर सौं विप्र बुलाय। हेम गो रत्न भूमि दच्छिना दै आसीस बचन विप्र पढ़ाय ॥ ११ ॥ यह विधि भयो महोत्सव ब्रज में सुर-समाज कुसुमनि बरषाय। सचि-पचि देव मुनि चढि विमाननि अंबर लियो है छाय ॥१२॥ 'गोविंद' प्रभु नंदनंदन देखत कोटिक मनमथ गये लजाय। श्रीविट्ठल पद रज प्रताप बल यह लीला संपत्ति पाय ॥ १३ ॥ ❀११३०❀ शयन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ देवकी मन-मन चकित भइ। देखो आय पुत्र मुख काहे न ऐसी कबहूं होय दइ ॥१॥ माथें मुकुट पीत पट कांधे भृगु रेखा भुज चारि करें। पूरब कथा सुनाइ कही हरि तुम मांग्यो यह रूप धरें ॥ २ ॥ छूटे निगड सुवाओ पलना द्वार कपाट उघारचो। अब लै जाहु मोहि तुम गोकुल यह कहिकै सिसु रूपहि धारचो ॥ ३ ॥ तबहिं रोय उठे वसुदेव सुनि नंद भवन गये। बालक धरि वसुदेव कन्या लै आप 'सूर' मधुपुरी आये ॥४॥ ❀११३१❀ ❀जन्माष्टमी की वधाई में टिपारा धरे तब ❀शयन भोग आयं❀ राग कान्हरा ❀महानिसि आठैं भादौं की मथुरा प्रगट भये हरि आय। सेवक समय करनि सेवा कों

पहिले आये धाय ॥ १ ॥ ग्रह-तारा सब उच्च परे हैं अपुने-अपुने ठाय। दसौं दिसा अतिहि प्रफुलित तन उर आनंद न समाय ॥२ ॥ निर्मल गगन भयो तिहिं औसर उडगन सहज प्रकास। खिरक गाम आँगन रतननि के अवनि भई सुभ वास ॥ ३ ॥ जल पूरन सब नदी भई हैं सर-जल कमल विकास। पंछी अलिकुल नाद करत हैं वृच्छन मन हुलास ॥ ४ ॥ त्रिविध समीर बहत अति पावन विप्र-हुतासन फूले। मन प्रसन्न सब साधुनि के भये तप समाधि अनुकूले ॥ ५ ॥ अजन सरूप भयो तिहिं औसर दुंदुभि देव बजाये। किन्नर और गंधर्व सबै मिलि मुदित परम जस गाये ॥ ६ ॥ हरख भयो सिद्धन चारन कें विद्याधर सब नाचे। बाजत ताल मृदंग झालरी देव-वधू सुर साँचे ॥ ७ ॥ सुनि देबता पुहुँप वृष्टिनि कों चढि विमान सब आये। मंद-मंद जलधर गरजत हैं जलनिधि के ढिंग आये ॥ ८ ॥ आधी रात भई जबहीं तब तम आकास गयो। श्रीवसुदेव देवकी के मन परम हुलास भयो ॥ ९ ॥ देवरूप देवकी-कूखतें प्रगटे आनँदकंद। मानो दिसा प्राचीतें उदयो उज्ज्वल पूरनचंद ॥ १० ॥ रूप चतुर्भुज दरसन दीनो हरि संख गदा दिक धारी। पीत बसन सिर बन्यो टिपारौ अंबुज नैन सुधारी ॥ ११ ॥ कौस्तुभ मनि श्रीकंठ जगमगे उर श्रीवत्स बिराजे। कुंडल स्रवन मकर जानो दिनकर कुन्तल ऊपर भ्राजे ॥१२॥ तब वसुदेव भयो मन विस्मय जब सुत दरसन पायो। जनम-जनम के भाग्य खुले अब मन वांछित फल पायो ॥१३॥ बिनती करत दुहूंकर जोरे पूरनब्रह्म स्वरूप। प्रकृित पुरुष अच्छर हूँ ते पर आनँद अनुभव रूप ॥१४॥ बहुत करत अस्तुति देव की निर्गुन जोति स्वरूप जिन अब रूप दिखायो यह तुम जो बपु धरयो अनूप ॥ १५ ॥ तब हरि बचन कहत दोउनि सों तुम बोहोत तपस्या कीनी। पुनि मैं प्रगट होय बर दीनो यही मांगि तुम लीनी ॥ १६ ॥ दोऊ बेर पहले तुमरे-गृह बालभाव लै आयो। बहोरि अबे निज रूपधारि कै तुमकों प्रगट दिखायो ॥ १७ ॥

इतनो कहि हरि चुप कर बैठे प्राकृत निज बपु धारे। देखत ही मन मात पिता को निज माया विस्तारे ॥ १८ ॥ ताही समै नन्द-गोकुल में प्रगटे गोकुलचन्द। निज भक्तनि हित सुख के कारन पूरन परमानंद ॥१९॥ नाभी कमल में नाल बिराजे घूँघरवारे केस। नैन बिसाल मृदु मुसकनि छबि अधरनि देत सुदेस ॥२०॥ यही रूप सों दरसन दीनो मथुरा में हरि आय। संख चक्र धरि दरसन दीनो सो लीनो उर माय ॥ २१ ॥ तब बसुदेव विचार कियो मन श्रीपति लिये उछंग। खुले कपाट पहरुवा सोये नृपति मनोरथ भंग ॥ २२ ॥ निज फन आत-पत्र सों बूँदनि सेस निवारत आवे। गरजत कोंध मेघ दामिनि की चमकि-चमकि उर लावे ॥२३॥ जमना महा भयानक लागत घोर वेग अति भारी। ज्यों रघुनाथ रूप जलनिधि कों त्यों उतरे गिरिधारी ॥ २४ ॥ तब वसुदेव गये श्रीगोकुल ग्वालनि सोवत पाये। बालक धरयो सेज जसुमति के माया कों लै आये ॥ २५ ॥ महामहोच्छव गोकुल बाढ्यो नन्दहि बढ्यो आनंद। सुत कौ जातकर्म सब कीनों देखि-देखि मुख चंद ॥२॥ विप्रजु तिलक करत घसि चन्दन अगनित गैया दान। बंदी सुत प्रोहित जन कों बहु कीनों सनमान ॥ २७ ॥ दूध दही छिरकत सबहिन कों नाचत गोपी ग्वाल। परम कृपाल 'दास' हित प्रगटे श्रीनवनीत प्रियलाल ॥ २८ ॥ ❀ ११३२ ❀

* जन्माष्टमी की बधाई में पगा धरे तब *

❀ शृङ्गार ओसरा❀राग आसावरी❀जनम सुत कौ होतही आनन्द भयो नन्दराय। महामहोच्छव आज कीजे बाढ्यो मन न रहाय ॥ १ ॥ विप्र वैदिक बोलिकें करि स्नान बैठे आय। भाव निर्मल पहरि भूषन स्वस्ति वाचन पढाय ॥२॥ जातकर्म कराय विधि सों पितर देव पुजाय। करि अलंकृत द्विजनि कों द्वै लच्छ दीनी गाय ॥३॥ सात पर्वत तिलनि के करि रतन ओघ मिलाय। कर कनक अंबरन आवृत दिये विप्र बुलाय ॥ ४ ॥ पढें मंगल विप्र मागध

सूत बंदी अघाय। गीत गावें हरखि गायक नाचत नट नचवाय ॥ ५ ॥ बाजनियां मन बोहोत हरखे विविध बाजे लाय। जानि मंगल भेरि दुंदुभि फेरि-फेरि बजाय ॥ ६ ॥ ध्वजा पताका ब्रज विचित्रित भवन-भवन धराय। बसन पल्लव रचे तोरन द्वार-द्वार बंधाय ॥ ७ ॥ वृषभ गाय सुबच्छ हरदी तेल तन लपटाय। बसन बर्ह सुवर्णमाला धातु चित्र बनाय ॥ ८ ॥ गोप आये भेट लै लै दूध दधि सँग लाय। पाग पटुका झगा भूषन महामोल सुहाय ॥ ७ ॥ सुनत ही भई मुदित गोपी जसोदा सुत जाय। बसन सकल सिंगार अंजन आदि तन भूषाय ॥ १० ॥ कहा मुख की कहुँ सोभा भई सो बरनि न जाँय। मानो कुम-कुम केसर मधि कमल की सोभाय ॥११ ॥ लियें बल करि अति उतावल चली तन बिसराय। स्रवन कुंडल पदिक हिरदें पहिरें अति उजराय ॥ १२ ॥ विविध बसन बनाये सिर तें खसि कुसुम बिसराय। नन्दजू के भवन पैठी वलय प्रगट लखाय ॥१३॥ अति बिराजत भये कुंडल हृदै हार कँपाय। बहोत दई असीस यों ही रहौ ब्रज सुखदाय ॥ १४ ॥ भई रस उन्मत्त नाचत लोक लाज गँमाय। अजन जन्म निसंक गावें हृदै प्रेम बढाय ॥ १५॥ बजें बाजे जनम उत्सव विविध ध्वनि उपजाय। नन्द के घर कृष्ण आये धर्म सब प्रगटाय ॥ १६ ॥ गोप नाचत दूध दधि घृत नीर सरस न्हवाय। बिबस तकि नवनीत लौंदा डारत हाथ उठाय ॥१७॥ बड़े मन ब्रजराज भूषन बसन गाय बनाय। सूत मागध विप्र बंदी किये बोल बिदाय ॥ १८ ॥ घरन पठये मनोरथ सब गुनिन के पुरवाय। हरि आराधन और सुत को उदै हृदै लाय ॥ १९ ॥ गृह पुजाये गनिक उत्तम भली भाँति बुझाय। दै असीस चले घरन प्रति परस्पर बतराय ॥ २० ॥ दै बडाइ कंठ भूषन हार बसन मँगाय। नन्द दीने पहिरि फूली फिरत रोहिनी माय ॥ २१ ॥ सकल ब्रज में भई संपति रमारूप बसाय। करन लीला 'रसिक' प्रीतम रहे ब्रज में छाय ॥२२॥ दोहा—धन्य सुक मुनि धन्य भागवत

धन्य यह अध्याय । धन्य-धन्य प्रीतम 'रसिक' गाइ सरस बनाय ॥१॥ ❀ ११३३ ❀ राजभोग आये ❀ राग मलार ❀ आँगन दधि कौ उदधि भयो । गोपी ग्वाल फिरत महराने सकल संताप गयो ॥ १ ॥ बक्सत पगा पिछोरी गुनियनि अति आनंद भयो । नंद जसोदा के मन आनँद 'धोंधी' के प्रभु जनम लयो ॥ २ ॥ ❀ ११३४ ❀ राजभोग दर्शन ❀ ढाढी ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ हौं वृषभानु को मगा,नंद उदै सुनि आयो । देवें को बडो महर देत न करत गहरु लाल की बधाई पाऊं नंद को झगा ॥ १ ॥ तौलों न बिदा ह्वै जाऊं और के कहाँ बिकाऊं जौलों न भवन आवे ऋषि गर्गा । चिरजीवो नंद को कुमार 'सूर' के प्रान आधार जसुमति सुत चले अपने पगा ॥ २ ॥ ❀ ११३५ ❀ राग धनाश्री ❀ हौं ब्रजवासिन को मगा । श्रीवल्लवराज गोपकुल मंडन ए दोऊ घर कौ जगा ॥ १ ॥ नंदराय एक दियो पिछौरा तामें कनक तगा । श्री वृषभानु दियो एक टोडर हीरा जटित नगा ॥ २ ॥ कीरति दै कुंवरि की झगुली जसुमति सुत को झगा । 'किसोरीदास' कों दियो कृपा करि नील पीत को पगा ॥३॥ ❀११३६❀

जन्माष्टमी की बधाई में फेंटा धरे तब

❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ एरी सखी प्रगटे कृष्ण मुरारि ॥ ब्रज घर-घर आनंद भयो ॥ दधिकादौं आँगन नंद के । ध्रुव । एरी सखी बाजत ताल मृदंग और बाजे सब साजिकें । भवन भीर ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज कें ॥ १ ॥ घोष-घोष तें बाम वसननि सजि-सजि कें गई । रोहिनी महा बडभागि आदर दै भीतर लई ॥ २ ॥ बिछुवनि के झनकार गलिन-गलिन प्रति ह्वै रहे । हाथनि कंचनथार उर पर श्रमकन च्वै रहे ॥ ३ ॥ ग्वाल गोपिका जात रावरो सगरो भरि रह्यो । फूले अंग न मात सबनि को भागि उघरि रह्यो ॥ ४ ॥ जहाँ ब्रजनारी आप सैन कियो ढोटा भये । तहाँ कुतूहल होत मिलि जुवती जूथनि गये ॥ ५ ॥ निरखि कमल मुख चारु आनँदमय मूरति भई । लये अंचल पट छोर मन भाई असीस दई ॥६॥

राय चौकमें घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि। पकरि पकरि कें ग्वाल बोल लेत भुज भुजन पेलि ॥७॥ काँवरि मथना माट अगनित गिने नहीं जात हैं। धरे भरे सब ठौर कहां लौं सदन समात हैं ॥ ८ ॥ होत परस्पर मार माखन के गेंदुक करे। एक-एक कौं ताकि बदन अंग लेपत खरे ॥ ९ ॥ ऊपर तें दधि दूध सीस सीसनि गागरि धरें। घौंटुन लौं भई कीच रपटि रपटि सगरें परे ॥ १० ॥ ब्रजगोपिन के चीर भीजि लगे अंग-अंग सों। गावत हैं जुरि झुंड अपने-अपने रंग सों॥११॥ हो हो बोले ग्वाल हेरी दैदै गाव हीं। जोरि-जोरि सब बाँह बाबा नंद नचाव हीं ॥१२॥ नंदराय बड-भाग नाचत में देखत बने। फिरत मंडलाकार अंग-अंग सुखमें सने ॥१३॥ चिबुक-केस सब स्वेत उर पर सगरे छै रहे। रंग कुमकुमा रंग दधि दूधन उरझे रहे ॥ १४ ॥ भाल विसाल रसाल फेंटा सीस सुहावनो। थोंदि थलक और चाल नाचे मृदंग मिलावनो ॥ १५ ॥ गहि-गहि कें भुज-मूल रहे गोप सुख मानि के। रपटि परे जनि नंद सावधान यह जानि कें ॥१६॥ आँगन उदधि आनंद पंक चढ्यो कटि लौं भयो। दई पनारी खुलाइ सरिता ज्यों वीथिनि गयो ॥ १७ ॥ भानुसुता में जाइ मिल्यो रंग आनंद में। कलिंदनंदिनी, आप सुख लूटत यह फंद में ॥ १८ ॥ यह औसर सब साधि घोष-नृपति जू न्हाइयो। जे बरसौंदी खात ते सब विप्र बुलाइयो ॥ १९ ॥ पूजा पितर कराय दान करत बहु भाय सों। घर के मागध सूत झगरत हैं ब्रजराय सों ॥ २० ॥ मेटत सगरी रारि मन धन देत अघाइ के। करत बहुत सन्मान भूषन पट पहराय के ॥ २१ ॥ विधि सों गाइ सिंगारि दई द्विजनि केइ ठाठसों। जो माँगौं सो देहु कहत नंद विप्र भाट सों ॥२२॥ अभरन अंबर छाय सहस्र पाँच दस आइयो। हँसि-हँसि रोहिनी आय ब्रज तरुनी पहिराइयो ॥ २३ ॥ घर-घर घुरत निसान कही न जात कछु ये जियकी। मंगलमय ब्रज देस फिरत दुहाई पिय की ॥ २४ ॥

ब्रज दसा कौ रूप कहा कहुँ सखी या समैं। निरखि-निरखि 'नंददास' नृत्य करत हैं ता समैं ॥ २५ ॥ ❀ ११३७ ❀

* जन्माष्टमी की बधाई में दुमाला धरे तब *

❀ शृंगार ओसरा ❀ राग आसावरी ❀ प्रथम ही भादौं मास अष्टमी रोहिनी बुधवारी। प्रगटे कूखि महिर जसोदा के लाडिले गिरिधारी ॥ १ ॥ सुनि ब्रजजुबती अपने श्रवनन जहाँ तहाँ तें धाई। मंगल थार धरे हाथनि पर गावति-गावति आई ॥ २ ॥ मंडित द्वारें धरत साथिये रोपति बंदन-माला। पाँइनि परत कहत रानी सों भले जने तुम लाला ॥३॥ करत बधाई जसुमति माई मगन भई रस भारी। तुम्हारी कूखि पर हम नंदरानी वारि-वारि सब डारी ॥ ४ ॥ बाजत थारी और मृदंगा और बाजत है ताला। हरद दही की काँवरि लै लै आये गोप गुवाला ॥ ५ ॥ बैठे फूल तबे नंद अति ही सबहिन देत बधाई। हरी हरी दुब विप्र भाटन ले रायजू के सीस धराई ॥ बिनती करत कहत रायजू सों धन्य जन्म विधि कियो। ऐसो सुत प्रगट्यो तुम्हरे गृह आज सुफल है जियो ॥७॥ नाचत गावत करत कुलाहल मगन भये रस भारी। फिरि फिरि पहरि हुलसि देवे कों भूषन बसन उतारी ॥ ८ ॥ दीने दान विप्र भाटनि कों माला मूँदरी चीरा। रतन जटित कुंडल पहराये मोती झलकत हीरा ॥ ९ ॥ आनंद रस उच्छाह भाव सों सब ब्रज उमग्यो आज। फूले डोले यह मुख बोलें पुत्र भयो ब्रजराज ॥ १० ॥ तब नंदरानी अपनी सखनि सों आनंदराय बुलाये। पूरन भाग चुंबत रस आनन विहँसत भीतर आये ॥ ११ ॥ हँसि करि बोली जच्चा सुहागिन आओ पिय मन भाये। बैठि मतौ करिये विलसनि कों हम घर लालन जाये ॥१२॥ चरुवा चढावनि कों पिय मेरी पहलें सास बुलावो। रतन जटित गादी मूढा पर आनि के बैठाबो ॥ १३ ॥ चरुवा चढावनि कों नख सिख लौं आभूषन पहिरावो। भाँति भाँति के चीर पाटंबर इतनी

बेर मंगावो ॥ १४ ॥ सथिये धरनि कों ननद हमारी तुम पिय बोलि लै आओ। इतने जटित अपने सिंघासन आनिकें बैठावो ॥१५॥ सथिये धरनि कौ नेग बहुत है सो दीजे मन भायो। तातें कहत सुनौं पिय तुम सों यह दिन क्योंहु पायो ॥ १६ ॥ हँसि ब्रजराज कहत रानी सों यातें चौगुनो दे हैं। ऐसो सुत तुम जाय दिखायो देतहु न अघे हैं ॥ १७ ॥ चंद्रावली ब्रजमंगल राधे करि करि लाड बुलावो। उनही के भाग दियो फल हमकौं उनहीं पे मंडवावो ॥१८॥ हम ही तुमही लालन लेकैं उनकी गोद बैठावो। उनको चीत्यो भयो हमारे लालें तुमहि खिलाओ ॥ १९ ॥ और पिय मेरी द्यौरानी जिठानी आदर दै बोलि लावो ॥ भाँति-भाँति सारी आभूषन सब ही कों पहिरावो ॥२०॥ थेला भरि-भरि दाम मंगावो देहु रोहिनी हाथा। हँसि हँसि खरचे रानी रोहिनी जाकी सिरानी गाथा ॥ २१ ॥ गाड़ा भरि-भरि सौंज-पंजीरी इतनी बेर मंगावो। गुड़ घी देखि खुरैरी मेलि पंजीरी बहोत सनावो ॥ २२ ॥ भरि भरि मेरी द्यौरानी जिठानी हँसि हँसि करिके ले हैं। यह दिन हमकों दियो बिधाता देखि देखि सुख पैहें ॥ २३ ॥ हँसि ब्रजराय जू बाहिर आये माय बहनि बोलि लाये। सगरी सौंज धरी लै आगें करौ आप मन भाये ॥ २४ ॥ सास नवलदै चरुवा चढावै आछे चीति बनाये। झांकि-झांकि देखति नंदरानी चरुवा बोहोत मन भाये ॥ २५ ॥ सोनो मोती हीरा के सब आभूषन पहिराये। हंसि-हंसि पहरे सास नवलदे केऊक जोरी मंगाये ॥२६॥ बेटी स्यामदे धरत साथिये आछे मोरि संभारे। मोतिन के अच्छत कुमकुम लै चीति किये उजियारे ॥ २७ ॥ गुड घी पूजि सात सौंकनि सों दुहुं ओर चिपकाये। सथियन को उद्योत देखिकें रानी जू बहोत सिहाये ॥ २८ ॥ देत भतीजे कों झगुली कुलही और हाथन को चूरा। खगवरीया कठुला लटकन और पायन कों पनसूरा ॥ २९ ॥ इतनौ दे करि मानदे स्यामदे रामदे झगरौ ठान्यो। तुमरो देन सुनों वीर मेरे एकौ नहिं मन मान्यो ॥ ३० ॥

हँसि ब्रजराज कहत बहनिनसों कहौ कहा अरु दीजे। बाँह पकरि के कहत रामदे कह्यो बीर मेरो कीजे ॥ ३१ ॥ लैहौं भाभीजू की पायल जे हैं अति बहु मोली। रानी जू को बंटा लाय आय राय जू खोली ॥ ३२ ॥ तुमारी ननद हठीली छबीली ते क्योंहू नहिं माने। बोलि लई पास भाभी जू दे करिके मुसिकाने ॥ ३३ ॥ भांति भांति सारी आभूषन तुम हम सब पहिरायो। मोंहो माँग्यो सो दियो बधाई जो हमारे मन भायो ॥ ३४ ॥ तुम्हारे घुरसार को अलल बछेरा सो छोरि हौं लेंहों। बहोत ठाठ गाय भैंसिनि के इतनो लै घर जैहों ॥ ३५ ॥ दीने ठाठ गाय भैंसिन के अरु दीने रथ जोरे। घोड़ा घोडी बछेरी बछेरा बहु दीने खोलि डोरे ॥ ३६ ॥ गाडा भरि-भरि सोनो दीनो दीने मोती हीरा। के लख गाम दिये अनगिनती ऐसे रायजु वीरा ॥ ३७ ॥ मुरि करि बोली बेटी स्यामदे एक हौंस वीर मेरे। रतन जटित सुखपाल मंगावो जेहैं आछी तेरे ॥ ३८ ॥ इतनी सुनि आनंदरायजू दियो सुखपाल मंगाई। तामें बैठी बेटी स्यामदै भतीजे को नेग चुकाई ॥ ३९॥ इतनो लै कर चली स्यामदै मुरि-मुरि देत असीसा। आनंदराय कुंवर बलि गिरिधर जीवौ कोटि बरीसा ॥ ४० ॥ वीरन मेरे जग उजियारे भाभी कुल उजियारी। चित्र विचित्र कूखि जसोदा की जिन जायो गिरिधारी ॥४१॥ सोने कूखि मढाय जसोदा प्रगट्यो जग सुखदाई ॥ 'श्रीविट्ठल' गिरिधरन लाल पर बार-बार बलिजाई ॥ ४२ ॥ ❀ ११३८ ❀

छट्ठी कौ उत्सव (भादो बदी ७)

❀मंगला दर्शन ❀ राग रामकली ❀ माई सोहिलौ आज नंदमहर-गृह बाजे बाजे मंदिलरा अनूपम गति। नर-नारी मिलि मंगल गावें ऋषि मुनि वेद पढत ब्रह्मा सिव सुर फूले सुरपति ॥ १ ॥ भयो आनंद तिहुँपुर घर-घर भक्त अभय कीने दान अति। 'जगन्नाथ' प्रभु प्रगट भए हैं कूखि सिरानी रानी जसुमति ॥२॥ ❀११३९❀ शृंगार ओसरा ❀ देवगंधार ❀ लाल कौ जन्मद्यौस दिन

आयो । गाम-गामतें जाति बुलाई मोतिनि चौक पुरायो ॥ १ ॥ दिन दस पहले बाजत बाजें पंच सब्द धुनि घोर । सब मिलि गावत गीत बधाई देख कुतूहल सोर ॥ २ ॥ प्रथम सप्तमी रात ब्यारू कौ सब अपनी मिलि जानि । पूरी बुकनी नाना बिंजन लडुवा मठरी पाति ॥ ३ ॥ इहि विधि करि सब हाथ पखारे बीरा दियो मंगाय । जनम द्यौस दिन बरजत है तातें कोऊ कछू नहिं खाय ॥ ४ ॥ घटिका चार घोखरानी हित सब उठे कृष्ण गुन गाय । लाल न्हवावत पंचामृत सौं जुवती मंगल गाय ॥ ५ ॥ पुनि फुलेल अरु अंग उबटनौ केसर चंदन गात । उष्णोदक न्हवावे लालन अंग अंगोछत मात ॥ ६ ॥ रंग केसरी बागो कुलही सूथन पटका लाल । आभूषन बहुत से पहिरे काजर नैन विसाल ॥ ७ ॥ लाल के भाल तिलक गोरोचन कमलपत्र दोऊ गाल । मोरचंद गुंजा धरि बैठे सिंघासन नँदलाल ॥ ८ ॥ सनमुख तब सिंगार लडेंती उत भूषन अनूप । स्याम कंचुकी सारी केसरी राजत जुगल स्वरूप ॥ ९ ॥ ऊपर पीतांबर लै ओढे ब्रजजन गावत गीत । कनकथार मोतिनि साथिये मुठियाँ आरती चीत ॥ १० ॥ अच्छत पीरे कुमकुम घोरिकें तिलक करत हैं मात । मुठियाँ वारि आरती वारी भेंट धरत बलि जात ॥११॥ तिल गुड मिली दूध अचयो पुनि बीरा देत विसेष । हरखित दान देत नंद बाबा 'द्वारकेस' प्रभु देख ॥ १२ ॥ ❀ ११४० ❀

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ सब मिलि ग्वालिनि देत असीस । नंदराय नंदरानी कौ ढोटा जीओ कोटि वरीस ॥१॥ धन्य ये कूख भई सुभ लच्छन जिन सगरो ब्रज छायो । ऐसो पूत जायो नंदरानी निज ब्रज अटल बसायो ॥ २ ॥ अब यह बेटा बढौ इन पाँइनि आँगन ठुम-ठुम डोले । 'श्रीविट्ठल-गिरिधर' रानी तुमसों मैया कहि-कहि बोले ॥ ३ ॥ ❀ ११४१ ❀

ग्रहण की रीति के पद

राजभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो—

❀ राजभोग आरती पाछे ❀ ❀ राग सारंग ❀ जाकों वेद रटत ब्रह्मा रटत संभु रटत सेस रटत नारद सुक व्यास रटत पावत नहीं पार री। ध्रुवजन प्रहलाद रढत कुंती के कुँवर रटत द्रुपद-सुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपाल री ॥ १ ॥ गनिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत राजन की रमनी रटत सुतन दै-दै प्यार री। 'नंददास' श्रीगोपाल गिरिवरधर रूप रसाल जसोदा कौ कुँवर लाल राधा उर हार री ॥ २ ॥ ❀११४२❀

शयन भोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन होय तो—

❀ राग मालव ❀ पद्म धरचो जन ताप निवारन। चारों भुजा चारों कर आयुध धरें नारायन भुव भार उतारन ॥१॥ चक्र-सुदर्सन धरचो कमल-कर भक्तन की रच्छा के कारन। संख धरचो रिपु उदर विदारन गदा धरी दुष्टन संहारन ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल जगतगुरु आरति हरन भक्त चिंतामनि। 'परमानंददास' कौ ठाकुर यह अवसर छाँड़ो जनि ॥ ३ ॥ ❀११४३❀ राग मालव ❀ वन्दौं धरन-गिरिवर भूप। राधिका-मुख कमल लंपट मत्त मधुप स्वरूप ॥ १ ॥ रसिकवर संगीत सुखनिधि क्वनित वेनु अनूप। 'कृष्णदास' उदार परम लौल माल अनूप ॥२॥ ❀११४४❀

दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूं—

❀ शयन दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ गाय खिलावन खिरक चले री। गिरिधरलाल ललित लरिका संग बाबा नंद बलदाऊ भले री ॥ १ ॥ श्रीदामा आदि सुबल अर्जुन सब भोज विसाल बने री। नाचत गावत करत कुलाहल करौ सिंगार आज दिवारी ॥ २ ॥ सुनि निज नाम नेंचुकी निकसी गाँग बुलाई काजर पीरी। कौन लाल कहे कुरुर-कुरुर डाढ मेलि आतुर ह्वै दौरी ॥३॥ नंदकुमार निवेरि झारि मुख बछरा छोरि दिये री।

हँसि-हँसि कहत सुनोरे भैया हौं खेलत खेल नये री ॥ ४ ॥ गोधन पूजि ग्वाल पहिराये काहू कों पगा काहू कों पिछौरी । ब्रजभामिनि मिलि मंगल गावत 'रसिक' प्रभु करौ राज जुग-जुग री ॥५॥ ❀ ११४५ ❀ राग कानरा ❀ गाइ खिलाइ आये नँदनंदन सोभित ताल मृदंग बजाये । हँसि-हँसि ग्वाल देत कर तारी आछे-आछे मंगल गाये ॥ १ ॥ अति आनंद नंद जू की रानी गजमोतिनि के चौक पुराये । बार-बार न्यौछावर वारत जबही लाल घर भीतर आये ॥ २ ॥ आछे चीर बहुत भांतिन के गोपी-ग्वाल सब पहिराये । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' लाल को मुख चूमत और लेत बलाये ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ११४६ ❀

शीतकाल संबंधी रीत के

लाल वस्त्र को टिपारा धरे तब—

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ देखो सखी सुंदरता को पुंज । अंग-अंग प्रति अमित माधुरी देखि मदन भयो लुंज ॥ १ ॥ नखसिख सुभग सिंगार बन्यो है सोभा मनिगन रुंज । 'चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल सिर लाल टिपारो गुंज ॥२॥ ❀ ११४७ ❀ भोग दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ नाचत गावत बन तें आवत लाल टिपारौ सीस रह्यो फबि । घन तन वसन दामिनी मानों कुंडल किरन निरखि मोहे रवि ॥ १ ॥ 'हित हरिवंस' और सोभानिधि गौरज मंडित अलकनि की छबि । स्याम धाम सरस्वती सकुचि रही या बानिक बरनत को कवि ॥ २ ॥ ❀ ११४८ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गौरी ❀ आज लाल टिपारे छबि अति जु बनी । बिच-बिच चारु सिखंड विच-बिच मंजरी-न्यूत बिराजनी ॥ १ ॥ धेनु-रेनु रंजित अलका-वलि सगमगात सौंधे सनी । मधुप-जूथ उडिकें बैठत सखी पारिजात अवतंस सनी ॥ २ ॥ अंगद वलय कर मुद्रा खचित नग कटितट पीत काछे काछनी । श्रीवत्स लक्ष्म उरहा विसद सखी कंठलसत कौस्तुभमनी ॥३॥

त्रिभंग भँवरी लेत सुख अग्रता निधि धिमि कटि थुंग-थुंगनि ग्वाल-ताल गत उघटनी। 'गोविंद' प्रभु त्रैलोक विमोहित नृत्यत रसिक सिरोमनी॥४॥ ❀ ११४९ ❀ शयन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ आवत मदन गोपाल त्रिभंगी। नृत्यत आवत बेनु बजावत करत कुलाहल ग्वालन संगी ॥ १ ॥ कटि पीतांबर उर बनमाला बन्यो टिपारो लाल सुरंगी। बचन रसाल सुरति यों भूली सुनि बन मुरलीनाद कुरंगी ॥ २ ॥ बरखत कुसुम देवगन हरखत बाजत ढोल दमामा जंगी। 'परमानंद' स्वामी नटनागर स्याम विनोद सुरति रस रंगी ॥ ३ ॥ ❀ ११५० ❀

पीले वस्त्र को टिपारा धरे तब

❀ संध्या में ❀ राग गौरी ❀ आवत ब्रज कों री गोधन संगे। मधुव्रत मधुमाते सुख देत मुरली बजावत तान तरंगे ॥ १ ॥ पीत टिपारौ लाल काछनी कटि बनजु धात अति विचित्र सोहत साँवल अंगे। 'गोविंद' प्रभु पिय सखा भुज अंस धरें करत कमल गान श्रुति तरंगे ॥२॥ ❀११५१❀

* माणिक और जडाऊ को टिपारा धरे तब *

❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ आज बने बन तें आवत हैं गोपाल। पाडर-सुगंध सुमन-निवारी कमल मल्लिका माल ॥ १ ॥ कटि पट पीत तिखंडी ओढें सीस जटित टिपारौ लाल। बाम दच्छिन चितवत नागर चंचल नैन विसाल ॥ २ ॥ फरकत श्रवन चारु चल कुंडल मृगमद तिलक सुभाल। संकुचित चलत अधर कर पल्लव कूजत बेंनु रसाल ॥३॥ मनिगन खचित रुनत पग नूपुर क्वनित किंकिनी जाल। 'कृष्णदास' प्रभु मनमथ नायक गोवर्धनधर लाल ॥ ४ ॥ ❀ ११५२ ❀

* और कोई जात को टिपारा धरें तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ बिमल कदंब मूल अवलंबित ठाडे हैं पिय भानु-सुता तट। सीस टिपारो कटि लाल काछिनी उपरैना फरहरत

पीत पट ॥१॥ पारिजात अवतंस रुरत सखी सीस सेहरो बनी अलक लट। विमल कपोल कुंडल की सोभा मंद हास जीते कोटि मदन भट ॥ २ ॥ बाम कपोल बाम भुज पर धरि मुरली बजावत तान बिकट छट। 'गोविंद' प्रभु के जु श्रीदामा प्रभृति सखा करत प्रसंसा जय नागर नट ॥ ३ ॥ ❀ ११५३ ❀ राग टोडी ❀ नवल निकुंज महल रसपुंज में रसिकराय टोडी स्वर गायो। मिटि गयो मान नवल नागरि को अंग ही अंग अनंग जनायो ॥ १ ॥ दौरी आइ कंठ लपटानी एही तान मेरे मन भायो। 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर नागर नट यह बिधि गाढौ मान मनायो ॥ २ ॥ ❀ ११५४ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग पूर्वी ❀ गायन सों पाछें–पाछें काछिनी सों कटि काछे बन्यो है टिपारो आछो लाल गिरिधारी के। धातु को तिलक किये बनी गुंजमाल हियें बनके सिंगार सब बिपिन बिहारी कें ॥ १ ॥ नटवर भेष किये ग्वाल मंडली संग लिये गावत बजावत देत कर तारी के। 'गोबिंद' प्रभु बन तें ब्रज आवत दौरि-दौरि ब्रजनारी झाँकत मध्य जारी के ॥ २ ॥ ❀ ११५५ ❀ राग नट ❀ राधे तेरे नैन किधौं बट-पारे। अँखियनि डोरे चटक रहे हैं घूमत ज्यों मतवारे ॥ १ ॥ अंजन दै पिय कौ मन रंजत खंजन मीन मृग हारे। 'सूरदास' प्रभु के मिलिवे कों नाचत ज्यों नटवारे ॥ २ ॥ ❀ ११५६ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ चंद्रमा नटवारी मानों साँझ समै बन तें ब्रज आवत नृत्य करन। उडुगन मानों पहोंप-अंजुली अंबर अरुन बरन ॥ १ ॥ नंदमुख सन्मुख ह्वै बामदेव मनावन विघ्नहरन। 'नंददास' प्रभु गोपिनि के हित बंसी धरी गिरिधरन ॥ २ ॥ ❀११५७❀

* किरीट धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग धनाश्री ❀ आज अति सोभित हैं नंदलाल। क्रीट मुकुट सिर सुभग बिराजत गलें फूलन की माल ॥ १ ॥ ठाडे कुंज-द्वार राधा सँग बेनु बजायो रसाल। 'परमानंददास' कौ ठाकुर बलि बलि

गईं ब्रजबाल ॥ २ ॥ ❀ ११५८ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग पूर्वी ❀ सोहत गिरिधर मुख मृदुहास । कोटि मदन कर जोरि उपासित विगलित भ्रू विलास ॥ १ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि नासा मुक्ता प्रकास । सोभा सिंधु कहाँ लौं बरनौं बारनें 'गोविंददास' ॥ २ ॥ ❀ ११५९ ❀

— पीलो दुमालौ धरें तब

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग टोडी ❀ अधिक रजनी मानी हो नंदलाल । दुलहिन संग बिराजत चित्रसारी सुंदर नैन विसाल ॥१॥ पीत दुमालो सुखद सुख सुंदर गुनमै दर्सित सोभा भारी करत अधरामृत पान रसाल । रंग महल बैठे 'नंददास' प्रभु सीत-बस होत मनहूँ अधिक गोपाल ॥२॥ ❀११६०❀

❀राग आसावरी❀ ए, दोऊ एकरंग रंगे गहरे रंग मजीठ । हौं वाके मन वे मेरे मन बसि रहे आली री कहा करेगौ बसीठ ॥ १ ॥ पीत दुमालो लाल सिर सोहै तासों मेरो मन मोह्यौ अद्भुत छबि देखि मानो सिला भई लीठ । 'ब्रजाधीस' प्रभु संग लाज गई मेरी मुसकि ठगौरी लागी तातैं बावरी सी डोलौं वे तो लंगर ढीठ ॥ २ ॥ ❀११६१❀

* रंग-बिरंगी दुमाला धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग आसावरी ❀ अति छबि बन्यौ दुमालो सीम । मन्मथ मान हरन हरि चितवत आज बन्यौ गोकुल को ईस ॥ १ ॥ ठाढ़े निकसि सिंघद्वार ह्वै संग सखा लीने दस बीस । 'परमानंददास' कौ ठाकुर जीत्रौ कोटि बरीस ॥ २ ॥ ❀११६२❀

* दुपेंची खिरकीदार पाग धरे तब *

❀ राजभोग दर्शन ❀ राग मालकोस ❀ आये हो जु अलसाने जो ए हम जानि पाये अनत रंग-रंगे राग के । रीझे काहु तिय सों रीझि को सवाद जान्यौ रस के चखैया भँवर काहू बाग के ॥ १ ॥ जहीं ते जु आए लाल तहीं क्यों न जाओ जू जाके रस सों रस पागे जाग के । 'तानसेन' के प्रभु